ISSN 2349-6614

जुलाई 2024

मूल्य 50 रु

प्रत्यूष

हिन्दी मासिक पत्रिका

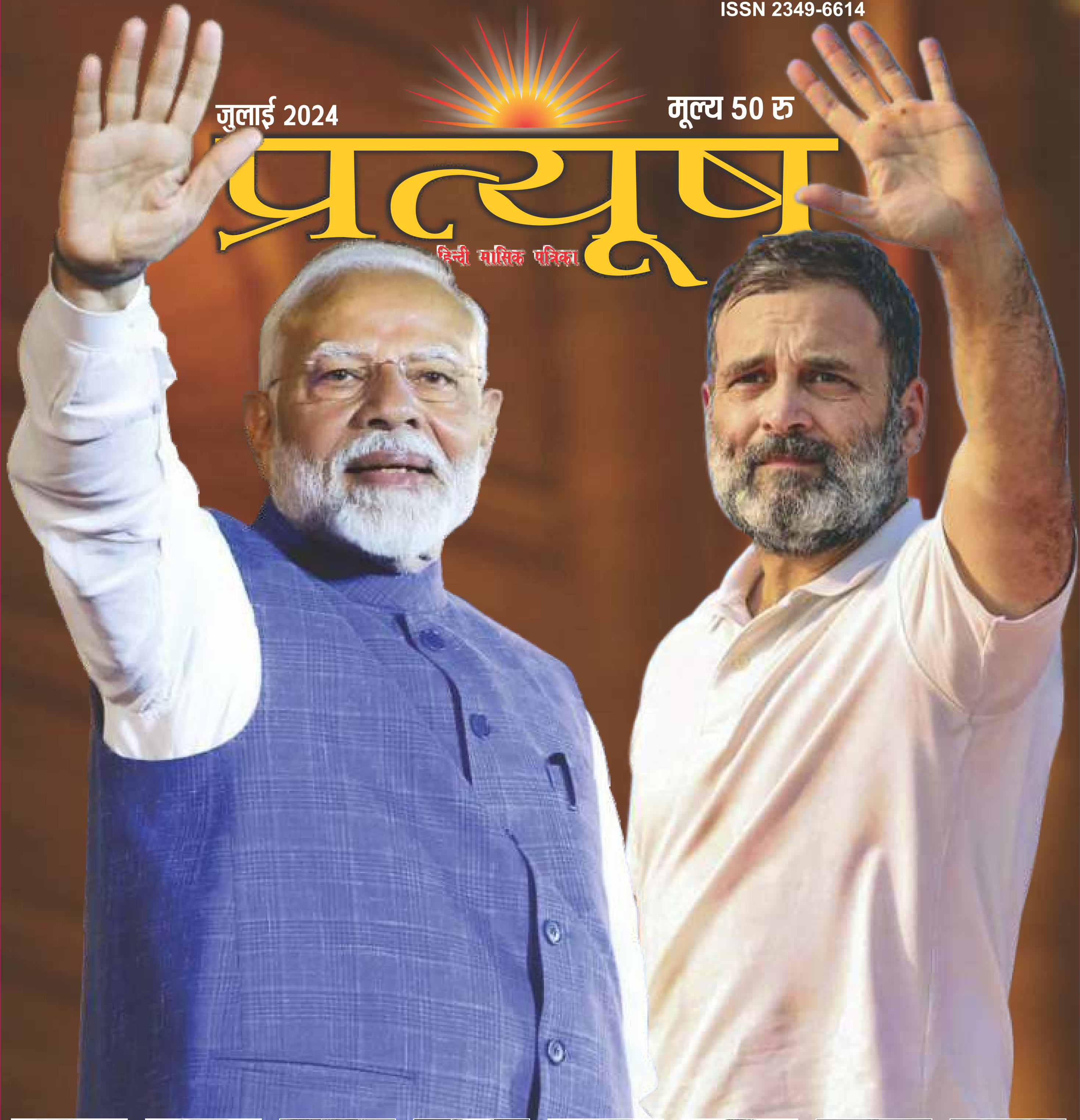

भाजपा: अटकी नैया मझधार

कांग्रेस: हाथ पड़ा दमदार

vedanta
transforming for good

HINDUSTAN ZINC
Zinc & Silver of India

विश्व की सबसे सस्टेनेबल कंपनी की ओर से आपको

विश्व पर्यावरण दिवस

की हार्दिक शुभकामनाएं

- एस एण्ड पी ग्लोबल कॉर्पोरेट सस्टेनेबिलिटी एसेसमेंट 2023* में **नंबर 1**
- **2.41 गुणा** वाटर पॉज़िटिव
- सालाना **110 हजार टन** से ज्यादा कार्बन उत्सर्जन में कमी
- 2050 तक **नेट जीरो** उत्सर्जन के लिए एसबीटीआई लक्ष्य हेतु मान्य

ज़िंक की तरह ही आप भी हरियाली बढ़ाएं

*धातु और खनन क्षेत्र में, 2023

Hindustan Zinc Limited Yashad Bhawan, Udaipur-313004 Rajasthan, India. T: +91 294 6604000-20 | www.hzlindia.com

SAFE SMART SUSTAINABLE

www.linkedin.com/company/hindustanzinc
www.instagram.com/hindustan_zinc
www.facebook.com/HindustanZinc
www.twitter.com/hindustan_Zinc

जुलाई-2024 वर्ष 22 अंक 03

प्रत्यूष

मूल्य 50 रू
वार्षिक 600 रू

'प्रत्यूष' के प्रेरणा स्रोत मात श्रीमती प्रमिला देवी शर्मा एवं तात श्री आनन्दी लाल जी शर्मा
प्रत्यूष परिवार का शत्-शत् नमन चरणों में पुष्प समर्पण

प्रधान सम्पादक विष्णु शर्मा हितैषी

सम्पादक रेणु शर्मा

विपणन प्रबंधक नितेश कुमार, नंदकिशोर मदन, भूमिका, उषा चन्द्रप्रभा, संगीता

टाइप सेटिंग जगदीश सालवी

सलाहकार मण्डल
गोपाल शर्मा (गोपजी), वैभव गहलोत
पवन खेड़ा, नीरज डांगी
कुलदीप इंदौरा, कृष्णकुमार हरितवाल
धीरज गुर्जर, अभय जैन
लालसिंह झाला, ओम शर्मा
अजय गुर्जर, आदित्य नाग
हेमंत भागवानी, डॉ. राव कल्याणसिंह
अशोक तम्बोली, सुंदरदेवी सालवी

चीफ रिपोर्टर : उमेश शर्मा

जिला संवाददाता
बांसवाड़ा - अनुराग चेलावत
चित्तौड़गढ़ - संदीप शर्मा
नाथद्वारा - लोकेश दवे
डूंगरपुर - सारिका राज
राजसमंद - कोमल पालीवाल
जयपुर - राव संजय सिंह
मोहसिन खान

प्रत्यूष में प्रकाशित सामग्री में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं, इनसे संस्थापक-प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।

प्रत्यूष
हिन्दी मासिक पत्रिका
प्रकाशक - संस्थापक :
Pankaj Kumar Sharrma
"रक्षाबंधन", धानमण्डी, उदयपुर-313 001

अंदर के पृष्ठों पर...

दहशतगर्दी

रियासी की घटना गहरी साजिश का इशारा
पेज 08

लोकोत्सव

जगन्नाथ स्वामी की अद्भुत लोकयात्रा
पेज 10

चलते-चलते

हां! हम हैं शहजादे
पेज 10

परिवर्तन

ओडिशा में 24 साल बाद बदलाव की बयार
पेज 24

बागवानी

गुलाब से महकाएं बगिया
पेज 30

कार्यालय पता : 2, 'रक्षाबन्धन' धानमण्डी, उदयपुर (राज)
दूरभाष एवं फैक्सः 0294-2427703 वाट्सएप 9414077697
मोबाइल : 94141-57703(विज्ञापन), वाट्सएप 75979-11992(समाचार-आलेख), 98290-42499(वाट्सएप), 94141-66737
Email:pankajkumarsharma2013@gmail.com, Visit us at: www.pratyushpatrika.com

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, संस्थापक, स्वामी पंकज शर्मा की ओर से मुद्रक आशीष बापना द्वारा मैसर्स पायोराइट प्रिन्ट मीडिया प्रा. लि. एम.आई.ए., उदयपुर से मुद्रित तथा 'रक्षाबन्धन' धानमण्डी उदयपुर से प्रकाशित।

Sanjay Sirohiya
Director

RS

RAWATMAL SIROHIYA
JEWELLERS

- 92 सिल्वर ज्वैलरी
- 92 गोल्ड ज्वैलरी
- सभी प्रकार के सिल्वर गिफ्ट आईटम
- ज्वैलरी डिजाईनिंग की सुविधा उपलब्ध
- राशि रत्न (स्टोन) उपलब्ध

इंदौर नमकीन के सामने, पंचवटी
सुखाड़िया सर्कल, उदयपुर (राज.)

पुलिस चौकी के नीचे,
घंटाघर, उदयपुर (राज.)

9001344479, 9829764105, 9414161233, 9001818174

लोकसभा चुनाव: टूटे भाजपा के भ्रम

भारतीय जनता पार्टी के नेतृत्व वाले राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) ने लगातार तीसरी बार भाजपा के वरिष्ठ नेता नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में सरकार बनाली है। मोदी ने लगातार तीसरी बार प्रधानमंत्री निर्वाचित होकर प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहर लाल नेहरू की बराबरी कर ली है। भारतीय जनता पार्टी ने पिछले चुनाव के मुकाबले इस बार 92 सीटे गंवाई। उसे तगड़ा झटका लगा है। पिछले चुनाव (2019) में भाजपा ने 303 सीटों पर विजयश्री का वरण किया था। इनमें से इस बार पार्टी 208 सीटें ही जीत पाई। इस बार उसने 92 सीटें खोने के साथ तीन सीटें अपने साथी दलों जद(यू), जेडीएस और रालोद को दे दी। इन दलों ने ये तीनों सीटें जीत ली। हालांकि पार्टी ने 32 नई सीटों पर कब्जा जमाते हुए अपनी जीत की संख्या को 240 तक पहुंचाया जो बहुमत के आंकड़े 272 से काफी कम है।

कांग्रेस को सफलता मिली है, लेकिन उस जमीन की उसे अब भी तलाश जारी रखनी होगी, जहां वह मज़बूती से खड़ी रह सके। उसे जनाधार बढ़ाना होगा। पिछली संसद में उसके 52 सदस्य थे, अब यह संख्या 100 के आसपास है, लेकिन उससे सत्ता की दावेदारी नहीं बनती। राजस्थान व हरियाणा में भाजपा से उसने कई सीटें छीन कर चौंका दिया है। कांग्रेस के सधे हुए प्रचार और राहुल गांधी की यात्राओं का भी असर साफ दिखाई दिया है। राहुल पिछला चुनाव अमेठी से हार गए थे। इस बार उन्होंने मां सोनिया गांधी की रायबरेली सीट से जीत दर्ज कर पिछले चुनाव में इस परम्परागत सीट से हारने के जख्म पर मरहम लगा दिया है। साथ ही उनकी पार्टी ने अमेठी में इस बार स्मृति ईरानी को पटखनी देकर इस पर भी जीत का परचम फहराया। राहुल गांधी पिछली बार यहां हार गए थे। वायनाड (केरल) से चुनाव जीत कर लोकसभा में पहुंचे थे। इस बार भी वे वायनाड से जीते हैं। स्वाभाविक था कि वे वायनाड सीट को छोड़ें। उनकी छोड़ी गई इस सीट पर बहिन प्रियंका को उतारने का निर्णय हुआ है। वे पहली बार चुनावी राजनीति में कदम रखेगी। कांग्रेस नेतृत्व ने सरकार बनाने के समीकरणों में न उलझकर उचित ही किया। इस पार्टी का 150 साल का इतिहास और देशव्यापी जनाधार रहा है। करीब 6 दशक तक उसने सत्ता की बागडोर संभाली, उससे इसी संजीदगी की उम्मीद थी। जबकि उसके सहयोगी अथवा समर्थक दल अपने क्षेत्रीय हितों पर नजर गड़ाए हुए थे। यही वजह है कि महाराष्ट्र की शिव सेना और पं. बंगाल की टीएमसी ने सत्ता पाने के लिए इंडी गठबंधन का संख्या बल बढ़ाने के विकल्प तलाशने पर काफी जोर दिया किन्तु कांग्रेस ने उनकी इस सलाह को सिरे से खारिज करते हुए कहा कि इस संबंध में समय की प्रतीक्षा करना उचित होगा। कांग्रेस के इस नज़रिये को सहयोगी समाजवादी पार्टी और वामदलों ने भी सही बताया।

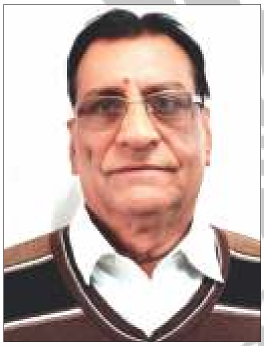

अठाहरवीं लोकसभा चुनाव की तस्वीर ने कई भ्रम तोड़ दिए हैं। एक तरफ भाजपा की प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के सहारे 370 सीट और राजग के 400 पार जाने की जो उम्मीद थी, वह दिवास्वप्न साबित हुई। वहीं, कांग्रेस नीत इंडी गठबंधन को कमतर आंकने की कोशिश भी गलत साबित हुई। उत्तर प्रदेश में समाजवादी पार्टी, प. बंगाल में तृणमूल कांग्रेस, महाराष्ट्र में शिवसेना (उद्धव), एनसीपी, आंध्र में तेदपा, तमिलनाडु में द्रमुक और केरल में यूडीएफ की असरदार मौजूदगी का संदेश एक ही है कि गरीबी, महंगाई, और बेरोजगारी मुद्दे के साथ क्षेत्रवाद मतदाताओं की प्राथमिकता रहा। भाजपा को भी स्पष्ट संदेश दिया गया है कि अहंकार का आसमान छूने की कोशिश में वह धरातल को न छोड़े। गरीब और मध्यम वर्ग की मुश्किलों को हल करना अब उसके एजेंडे की प्राथमिकता बननी चाहिए। पूर्वोत्तर में इस बार भी भाजपा की स्थिति पिछले चुनाव की तरह ही है। कोई नुकसान नहीं हुआ। पूर्वोत्तर की 25 सीटों में से 2019 में भाजपा ने 14 सीटें जीती थीं। इस बार एक सीट खोकर 13 सीटें जीती। अरूणाचल विधानसभा में दोबारा बहुमत हासिल करने के साथ ही राज्य की दोनों लोकसभा सीटों पर कब्जा कायम रखा है। दक्षिणी राज्यों की बात करें तो भाजपा तमिलनाडु में पिछले चुनाव की तरह इस बार भी हाथ मलती रह गई। वहां उसे कोई सीट नहीं मिली। सभी 39 सीटें सत्तारूढ़ द्रमुक के खाते में गई। हालांकि उसके वोट प्र.श में वृद्धि हुई है। कर्नाटक में भाजपा ने 17 तो सत्तारूढ़ कांग्रेस ने 9 सीटें जीती। आंध्र प्रदेश विधान सभा चुनाव में राजग के सहयोगी एन. चन्द्रबाबू नायडू की तेदपा ने वाईएसआर कांग्रेस के जगन मोहन रेड्डी को सत्ता से बदखल कर दिया। लोकसभा की 14 सीटें भी उन्होंने जीतीं। तेलंगाना में भाजपा ने आठ सीटें जीत कर पिछले चुनाव के मुकाबले पांच सीटें ज्यादा जीती। हालांकि भाजपा इन सूबों में उत्तर भारतीय पार्टी का तमगा तोड़ पाने में अब तक समर्थ नहीं हो पाई है।

भाजपा को जिस पं.बगाल से सबसे अधिक उम्मीदें थीं, वहीं उसे सबसे बड़ा झटका लगा। मणिपुर में बीते साल से जारी जातीय हिंसा और केन्द्र के ढुलमुल रवैये का खामियाजा भुगतना पड़ा है। हालांकि इन दोनों राज्यों में मिले जख्मों पर वह ओडिशा विधान सभा चुनाव में पहली बार मिली जीत का मरहम लगाकर पीड़ा को कम महसूस कर सकती है। पं. बंगाल में तृणमूल कांग्रेस का यह अब तक का दूसरा सबसे बढ़िया प्रदर्शन था। पार्टी ने 2014 में 42 में से 34 सीटें जीती थीं। जबकि 2019 में वह 22 सीटों पर सिमट गई और 18 सीटें भाजपा ने जीती। इस बार उसने 42 में से 30 सीटें जीतकर भाजपा को 12 सीटों पर धकेल दिया। राज्य में एक बार फिर कांग्रेस के साथ तालमेल कर मैदान में उतरने वाली सीपीएम का खाता भी नहीं खुला और न ही कांग्रेस कोई सीट जीत पाई। बहरहाल मोदी सरकार को अब फूंक-फूंक कर कदम उठाने होंगे। महंगाई और बेरोजगारी दूर करने पर संजीदगी से ध्यान देना होगा।

नए कंधों से फिसली 'हैट्रिक'

राजस्थान में अपनों से ही हारी भाजपा

पंकज कुमार शर्मा

राजस्थान में लगातार दो बार क्लीन स्वीप करने वाली भाजपा इस बार अपनों से हार गई। लोकसभा चुनाव में जीत के प्रति अति आत्मविश्वास भाजपा के लिए नुकसानदायक रहा। केन्द्रीय नेतृत्व यह मान बैठा कि तीसरी बार राज्य में एकतरफा जीत होगी। यही आत्मविश्वास राज्य के बड़े नेताओं की नाराजगी का कारण बन गया। पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे सहित बड़े नेताओं ने चुनाव से कन्नी कांट ली। पूरा चुनाव मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नए कंधों पर आकर टिक गया। अब भाजपा के कुछ दिग्गज विधायकों का खेल शुरू हुआ। बस एक ही मकसद अपने लोग जीतें, बाकी प्रत्याशियों के साथ भितरघात। धौलपुर-करौली, भतरपुर, सीकर, झुंझुनूं, चूरू, नागौर, टोंक-सवाई माधोपुर, दौसा, बाड़मेर, बांसवाड़ा सीट पर अपने तमाम वजीरों को भाजपा प्रत्याशियों के खिलाफ ही सक्रिय कर दिया। यह भितरघात भाजपा के लिए पुराना प्रदर्शन दोहराने में बाधा बन गया।

कांग्रेस इस मामले में कुछ हद तक भाजपा से बेहतर रही। हालांकि व्यक्तिगत नाराज़गी के चलते कांग्रेस के कुछ नेताओं ने गुटबाजी और भितरघात की कोशिश की लेकिन चुनाव में उसका ज्यादा असर नहीं पड़ा। पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने राज्य में कुल 53 चुनावी सभाए की। पूर्व उपमुख्यमंत्री सचिन पायलट और गोविंद सिंह डोटासरा प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष ने भी चुनाव प्रचार में रात-दिन एक कर दिया। दोनों की जोड़ी ने पूरे चुनाव में कांग्रेस का माहौल बनाए रखा। कांग्रेस का अन्य दलों से गठबंधन के साथ एकजुटता से लड़ने का फार्मूला भी सफल रहा।

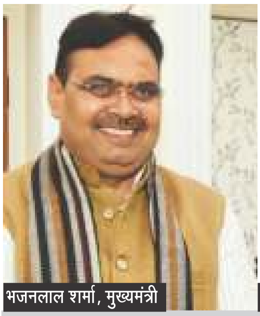
भजनलाल शर्मा, मुख्यमंत्री

अशोक गहलोत, पूर्व मुख्यमंत्री

गोविंद सिंह डोटासरा, प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष

कौन जीता, कौन हारा

निर्वाचन क्षेत्र	जीत	हार
1.अजमेर	भागीरथ चौधरी (भाजपा)	रामचन्द्र चौधरी (कांग्रेस)
2.अलवर	भूपेंद्र यादव (भाजपा)	ललित यादव (कांग्रेस)
3.बांसवाड़ा	राजकुमार रोत (बीएपी)	महेंद्रजित मालवीय (भाजपा)
4.बाडमेर	उम्मेदाराम बेनीवाल (कांग्रेस)	रविंद्र भाटी (निर्दलीय)
5.भरतपुर	संजना जाटव (कांग्रेस)	रामस्वरूप कोली (भाजपा)
6.भीलवाड़ा	दामोदर अग्रवाल (भाजपा)	डॉ. सी.पी जोशी (कांग्रेस)
7.बीकानेर	अर्जुनराम मेघवाल (भाजपा)	गोविंदराम मेघवाल (कांग्रेस)
8.चित्तौड़गढ़	सी.पी जोशी (भाजपा)	उदयलाल आंजना (कांग्रेस)
9.चुरू	राहुल कस्वां (कांग्रेस)	देवेन्द्र झाझड़िया (भाजपा)
10.दौसा	मुरारीलाल मीणा (कांग्रेस)	कन्हैयालाल मीणा (भाजपा)
11.गंगानगर	कुलदीप इंदोरा (कांग्रेस)	प्रियंका बैलान (भाजपा)
12.जयपुर	मंजू शर्मा (भाजपा)	प्रतापसिंह खाचरियावास (कांग्रेस)
13.जयपुर ग्रामीण	राव राजेंद्र सिंह (भाजपा)	अनिल चौपड़ा (कांग्रेस)
14.जालोर	लुंबाराम (भाजपा)	वैभव गहलोत (कांग्रेस)
15.झालावाड़	दुष्यंत सिंह (भाजपा)	उर्मिला जैन भाया (कांग्रेस)
16.झुंझुनू	बृजेंद्र ओला (कांग्रेस)	शुभकरण चौधरी (भाजपा)
17.जोधपुर	गजेंद्र सिंह शेखावत (भाजपा)	करणसिंह उचियारडा (कांग्रेस)
18.करौली-धौलपुर	भजनलाल जाटव (कांग्रेस)	इंदूदेवी (भाजपा)
19.कोटा	ओम बिरला (भाजपा)	प्रहलाद गुंजल (कांग्रेस)
20.नागौर	हनुमान बेनीवाल (आरएलपी)	ज्योति मिर्धा (भाजपा)
21.पाली	पीपी चौधरी (भाजपा)	संगीता बेनीवाल (कांग्रेस)
22.राजसमंद	महिमा सिंह मेवाड (भाजपा)	दामोदर गुर्जर (कांग्रेस)
23.सीकर	अमराराम (माकपा)	सुमेधानंद (भाजपा)
24.टोंक-सवाईमाधोपुर	हरीश मीणा (कांग्रेस)	सुखबीर जौनपुरिया (भाजपा)
25.उदयपुर	मन्नालाल रावत (भाजपा)	ताराचंद मीणा (कांग्रेस)

विधानसभा में 195 विधायक ही रह गए

प्रदेश की विधानसभा में पिछले कुछ समय से 199 विधायक ही थे। लोकसभा चुनाव के साथ ही महेन्द्र जीत सिंह मालवीय के इस्तीफे से रिक्त हुई बागीदौरा विस सीट पर उपचुनाव भी हुआ था। इस सीट पर तो नया विधायक मिल गया, लेकिन लोकसभा चुनाव लड़े पांच विधायक चुनाव जीत गए। उनके इस्तीफे की वजह से प्रदेश की विधानसभा में एक बार फिर 195 विधायक रह गए। आगामी पांच माह में इन पांच विस सीटों पर फिर से उपचुनाव होंगे। लोकसभा चुनाव में कुल सात विधायक चुनाव लड़ रहे थे। ये सभी विधायक कांग्रेस और उनके साथ हुए गठबंधन से चुनाव लड़े। भाजपा ने किसी भी विधायक को लोकसभा चुनाव के मैदान में नहीं उतारा। जिन पांच विधायकों ने

कांग्रेसः किसने जीती बाजी और किसने हारी

राहुल कस्वा
चूरू

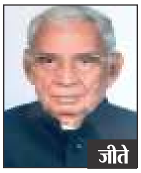

बृजेन्द्र ओला
झुंझुनू

भजनलाल
करौली–धौलपुर

वैभव गहलोत
जालोर

सीपी जोशी
भीलवाड़ा

उदयलाल
चित्तौड़गढ़

ताराचंद मीणा
उदयपुर

भाजपाः कौन दिग्गज जीता और कौन हारा

सीपी जोशी
चित्तौड़गढ़

भूपेन्द्र यादव
अलवर

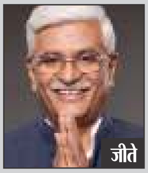

गजेन्द्रसिंह
जोधपुर

दुष्यंतसिंह
झालावाड़

महिमा सिंह
राजसमंद

महेन्द्रजीतसिंह
बांसवाड़ा

कैलाश चौधरी
बाड़मेर

जीत दर्ज की है, इनमें से तीन कांग्रेस और एक आरएलपी और एक बीएपी विधायक है। बीएपी प्रत्याशी जयकृष्ण पटेल ने बागीदौरा से जीत दर्ज की है। मालवीया कांग्रेस के सिम्बल पर विधायक बने थे और लोकसभा चुनाव से पहले कांग्रेस से इस्तीफा देकर भाजपा में शामिल हो गए थे। इस वजह से यह सीट रिक्त हुई थी।

ये पांच विस सीटें हुई रिक्त

विधायकों के सांसद बन जाने से प्रदेश की देवली–उनियारा, झुंझुनूं, दौसा, चौरासी, खींवसर विधानसभा सीटें रिक्त हो गई हैं।

प्रदेश को मिले चार मंत्री

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने राजस्थान में गहरा धक्का लगने के बावजूद अपने मंत्रिमंडल में चार मंत्रियों को शामिल किया है, जिनमें तीन पिछले मंत्रिमंडल में भी शामिल थे। अजमेर से निर्वाचित भागीरथ चौधरी पहली बार मंत्री बने हैं, उन्हें राज्य स्तर प्रदान किया गया है। पिछले मंत्रिमंडल के गजेंद्र सिंह शेखावत, भूपेंद्र यादव और अर्जुन राम मेघवाल फिर से मंत्री बने हैं। देखा जाए तो रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव भी हैं तो राजस्थान (जोधपुर) के ही किन्तु वे ओडिशा से राज्यसभा सांसद हैं।

प्रदेश से मंत्री बने

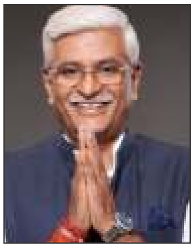
गजेन्द्रसिंह शेखावत, जोधपुर
पर्यटन एवं संस्कृति

भूपेन्द्र यादव, अलवर
पर्यावरण एवं वन

अर्जुनराम मेघवाल बीकानेर
विधि मंत्री

भागीरथ चौधरी अजमेर
कृषि एवं किसान कल्याण

पाठक पीठ

'प्रत्यूष' माह जून–24 का अंक मिला। जिसमें सनत जोशी का 'रोबोटिज्म' के शिकार हैं हमारे युवा और श्रुति शर्मा का आलेख 'आसान नहीं बच्चों को समझाना' अच्छा लगा। निश्चय ही परिवारों को इस दिशा में ध्यान देने की जरूरत है। यह दोनों ही पहलू व्यक्तित्व निर्माण को प्रभावित करने वाले हैं।

अलका भारद्वाज, सचिव,
भूमि विकास बैंक

पर्यावरण को प्रदूषण से बचाना दिनोंदिन गंभीर समस्या बन रहा है। सरकारों का जितना ध्यान विकास की ओर है, उससे अधिक ध्यान बिगड़ते पर्यावरण के सुधार पर केंद्रित करना चाहिए। 'प्रत्यूष' के जून अंक में रेणु शर्मा का 'अजन्मे बच्चे पर भी बिगड़े पर्यावरण का बुरा असर' एक चेतावनी है। जंगलों, पहाड़ियों को कटने से बचाया जाए और अधिकाधिक वृक्षारोपण की सार्थक योजना को धरातल पर उतारा जाए, फाइलों में नहीं।

डॉ. करुणेश सक्सेना, कुलपति
संगम विश्वविद्यालय

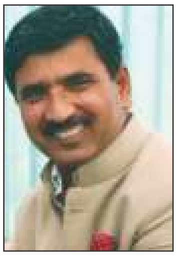
वेदव्यास का आलेख 'सच कहने का जोखिम तो उठाना होगा' मीडिया के लिए सामयिक सबक है। इसमें कोई संदेह नहीं कि सत्य की स्थापना के लिए लेखक–पत्रकार पर अधिक जिम्मेदारी है, वे अपनी सुरक्षा को खतरे में डालकर भी इसका निर्वाह कर रहे हैं, लेकिन मीडिया में अब एक ऐसा वर्ग भी पनप रहा है, जो सत्ताधारियों, धनपतियों और बाहुबलियों का यशोगान ही करता रहता है। जबकि उसे आम आदमी राजनैतिक, आर्थिक और सामाजिक अन्याय के चक्रव्यूह से निकलने की लड़ाई में शामिल होना चाहिए।

मोहब्बतसिंह राठौड़,
प्रबंध निदेशक, बीएन संस्थान

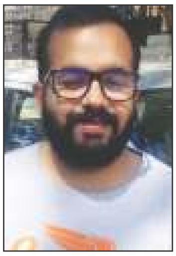
'प्रत्यूष' प्रति माह घर पहुंचती है। इसमें वो सारी पठनीय सामग्री होती है, जो परिवार के लिए उपयोगी होती है। साथ ही इससे स्वास्थ्य अध्यात्म ज्योतिष आदि जानकारी भी मिल जाती है। जून अंक में वास्तु सम्बंधी आलेख अच्छा था।

रोहन गोरवाड़ा,
उद्योगपति

रियासी की घटना गहरी साजिश का इशारा

केंद्रीय मंत्रिमंडल शपथ समारोह के दौरान आतंकी हमला सरकार को सीधी चुनौती

गौरव शर्मा

जम्मू कश्मीर में बढ़ती आतंकी घटनाओं के गहरे निहितार्थ हैं। यह स्थिति तब दिख रही है, जब हालिया आम चुनाव में यहां के लोगों ने बढ़- चढ़कर हिस्सा लिया है। जम्मू-कश्मीर के पांचों संसदीय निर्वाचन क्षेत्रों में करीब 58 फीसदी मत पड़े हैं, जो लोकतंत्र में स्थानीय लोगों के बढ़ते विश्वास का संकेत है। सवाल यह है कि ऐसे हमले करके आतंकी अपनी बौखलाहट का प्रदर्शन कर रहे हैं या फिर उनकी यह कोई नई रणनीति है ? दरअसल, ताजा हमले कश्मीर घाटी में नहीं हुए हैं, बल्कि जम्मू के उन इलाकों में हुए हैं, जहां कुछ वर्ष पहले तक माना जाता था कि आतंकवाद का करीब-करीब सफाया कर दिया गया है। यहां बीते डेढ़-दो दशकों में कोई बड़ी आतंकी वारदात नहीं हुई थी, पर पिछले तीन-चार साल में 'एरिया ऑफ ऑपरेशन' नजर आने लगा था, यानी आतंकियों की मौजूदगी दिखने लगी थी। आतंकवादी कभी सशस्त्र बलों को निशाना बनाते हैं, तो कभी बाहरियों, कश्मीरी पंडितों को लक्ष्य बनाया जाता है। अब वहां जा रहे सैलानियों पर हमले हो रहे हैं।

मई में पहलगाम में सैलानियों पर हमला किया गया था। उसके बाद जून में कटरा जा रही श्रद्धालुओं से भरी एक बस को निशाना बनाया गया, जिसके चलते बस खाई में गिर गई। इसमें नौ लोगों की मौत हो गई और इकतालीस से अधिक लोग घायल हो गए। कश्मीरी लोगों की आजीविका का पर्यटन बड़ा आधार है। इस तरह के हमलों से पर्यटन पर बुरा असर पड़ना स्वाभाविक है। ऐसे हमले नब्बे के दशक में बढ़ गए थे, मगर लंबे समय से सैलानियों को निशाना नहीं बनाया जा रहा था। अब ऐसा दिख रहा है तो इसकी वजहें भी साफ हैं। पर्यटकों पर हमले के पीछे आतंकवादी संगठनों का मकसद घाटी में बाहर के लोगों की आवाजाही रोकना है। बाहरी मजदूरों और कश्मीरी पंडितों को लक्ष्य बना कर हमले करने के पीछे भी उनका मकसद यही है। मगर अब जिस तरह बड़ी संख्या में सैलानियों और श्रद्धालुओं को निशाना बनाया जा रहा है, उससे जाहिर है कि आतंकी लोगों में भय पैदा करना चाहते हैं। जम्मू कश्मीर में तीर्थयात्रियों से भरी बस पर आतंकी हमले में मारे गए लोगों में जयपुर जिले के भी चार लोग थे। इनमें चौमूं निवासी राजेंद्र सैनी, उनकी पत्नी ममता के साथ ही उनकी भतीजी पूजा और दो वर्षीय नाती लिवांश उर्फ किट्टू। जबकि पूजा का पति चरण नदी निवासी पवन सैनी घायल हो गया। चारों वैष्णोदेवी व शिवखोड़ी के दर्शन के लिए 6 जून को जयपुर से ट्रेन से गए थे। दर्शन करने के बाद वे बस से वापस जम्मू लौट रहे थे, तभी रियासी के निकट यह आतंकी वारदात हो गई। यह बात गौर करने की है कि यह हमला उसी दिन हुआ, जिस दिन केंद्रीय मंत्रिमंडल के लिए शपथ ग्रहण था। जाहिर है, यह आतंकी हमला सरकार को सीधी चुनौती है। इसका माकूल जवाब सुरक्षा एजेंसियों को देना चाहिए। सुरक्षा बलों ने बहुत मेहनत से वैष्णों देवी मार्ग निष्कंटक बनाए रखा था, अब फिर उग आए कांटे उखाड़ने का वक्त आ गया है। पिछले दस वर्षों में जिस तरह सुरक्षाकर्मियों, सैलानियों श्रद्धालुओं और बाहर से मजदूरी वगैरह करने गए लोगों को निशाना बना कर हत्याएं की गई हैं, उससे यह सवाल निरंतर गाढ़ा होता गया है कि आखिर यह सिलसिला कब रुकेगा।

आतंकी हमले में मारे गए ममता, राजेन्द्र, पूजा और लव्यांश

राष्ट्रीय जांच एजेंसी की रपट के मुताबिक ऐसे हमलों में पाकिस्तान के प्रशिक्षित दहशतगर्दों का हाथ होता है, स्थानीय लोग उन्हें सूचनाएं उपलब्ध कराते हैं। अगर सीमा पर चौकसी सख्त की गई है, तो फिर सीमा पार से आतंकियों की घाटी में पैठ कैसे हो पा रही है। अगर खुफिया तंत्र पहले से चौकन्ना हुआ है, तो आतंकी कैसे सेना के काफिले पर हमला कर देते हैं और पहले ही उसकी भनक नहीं लग पाती। घाटी में आतंकवाद से निपटने के लिए नए सिरे से रणनीति बनाने की जरूरत है। यह इसलिए भी जरूरी है कि इस केन्द्रशासित प्रदेश में सितम्बर-अक्टूबर तक विधान सभा चुनाव की संभावनाएं हैं।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित

।। श्री कृष्णा ।। ।। श्री गणेशाय नम्ः ।। ।। ॐ हनुमन्ते नम्ः ।।

बीकानेर मावा भण्डार

BMB

घीदार मावा एवं मीठा मावा के विक्रेता

शादी पार्टी में मावा के आर्डर बुक किए जाते हैं।

4, मेहतों का पाड़ा, धानमण्डी स्कूल मार्ग, उदयपुर (राज.)

Mobile - 9468704600, 9782704600

हैड ऑफिस :- डी.एस. बीकानेर

जगन्नाथ स्वामी की अद्भुत लोकयात्रा

सनातन हिंदू धर्म के विलक्षण तत्वदर्शन का सर्वाधिक सशक्त प्रमाण है, जगत पालक की अद्भुत रथयात्रा। 'रथयात्रा' एक ऐसा अनूठा उत्सव है, जहां भक्तों से मिलने भगवान स्वयं मंदिर से बाहर निकल उनके बीच आते हैं और अपने आशीर्वाद से सबको कृतार्थ कर यह संदेश देते हैं कि ईश्वर की नजर में न छोटा है न काई बड़ा, न कोई अमीर है और न गरीब।

पूनम नेगी

पुरी के सागर तट पर निकलने वाली जगन्नाथ रथयात्रा में आस्था का जो अद्‌भुत वैभव देखने को मिलता है, उसका कोई सानी नहीं है। ऐसा विराट लोकोत्सव दुनिया में कहीं और आयोजित नहीं होता। इसीलिए यह रथयात्रा सदियों से न केवल भारत अपितु विदेशी पर्यटकों के आकर्षण का प्रमुख केंद्र बनी हुई है। श्रीमद्भागवत महापुराण में इस महायात्रा का अत्यंत सारगर्भित तत्वदर्शन वर्णित है, जिसको इस लोकोत्सव के अवसर पर हर भावनाशील श्रद्धालु को जानना और ह्रदयंगम करना ही चाहिए। इस वर्ष यह उत्सव 7 जुलाई को होगा।

इस शास्त्रीय विवेचन के मुताबिक लोकपालक का यह अनूठा रथ मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार, इन चार पायों के संतुलित समन्वय पर टिका है। ऐसे रथ रूपी शरीर में आत्मा शरीर और आत्मा के मिलन की द्योतक है। यद्यपि प्रत्येक जीवधारी के शरीर में आत्मा होती है तो भी वह स्वयं संचालित नहीं होती, बल्कि उसे माया संचालित करती है।

सनातन हिंदू धर्म के इस विलक्षण तत्वदर्शन का सर्वाधिक सशक्त प्रमाण है जगत पालक की अद्‌भुत रथयात्रा। रथयात्रा उत्सव एक ऐसा अनूठा त्योहार है, जहां भक्तों से मिलने भगवान स्वयं मंदिर से बाहर निकल उनके बीच आते हैं और अपने आशीर्वाद से सबको कृतार्थ कर यह संदेश देते हैं कि ईश्वर की नजर में न छोटा है न कोई बड़ा, न कोई अमीर है और न गरीब। पौराणिक कथानक के मुताबिक सतयुग में दक्षिण भारत की अवंती नगरी के राजा इन्द्रद्युम्न भगवान श्रीहरि के परम भक्त थे। उनकी इच्छा पर स्वयं देवशिल्पी विश्वकर्मा ने छद्मवेश में श्रीकृष्ण, उनके बड़े भाई बलभद्र और बहन सुभद्रा के अधोभागहीन जिन काष्ठ विग्रहों का निर्माण किया था, वे ही सदियों से ओडिशा के श्री जगन्नाथ मंदिर में पूजित होते आ रहे हैं।

श्रीहरि की यह दस दिवसीय लोकयात्रा यूं तो आषाढ़ शुक्ल पक्ष द्वितीया से शुरू होती है, मगर रथों के निर्माण के लिए विशेष प्रकार की दारू वृक्ष (नीम) की लकड़ियां चुनने की शुरूआत वसंत पंचमी से हो जाती है। फिर अक्षय तृतीया से विशेष धार्मिक अनुष्ठान के साथ रथों का

निर्माण शुरू होता है। खास बात है कि इन विशाल रथों के निर्माण में किसी भी धातु के कील-कांटे का प्रयोग नहीं होता। रथयात्रा के लिए श्री जगन्नाथ जी, उनके बड़े भाई बलभद्र और बहन सुभद्रा के क्रमश: 45, 44 व 43 फुट ऊचे तीन रथ तैयार किए जाते हैं। जगन्नाथ का रथ नंदीघोष 16 पहियों का, बलभद्र जी का रथ तालध्वज 14 पहियों का और सुभद्रा का रथ देवदलन 12 पहियों का बनता है। इन रथों को सजाने के लिए लगभग 1090 मीटर कपड़ा लगता है। लाल वस्त्रों के अलावा जगन्नाथ के रथ को पीले वस्त्रों, बलभद्र के रथ को नीले और सुभद्रा के रथ को काले वस्त्रों से मढ़ा जाता है। इसे खीचने वाली रस्सी को स्वर्णचूड़ा कहते हैं। आषाढ़ शुक्ल पक्ष द्वितीया के दिन पूजा-अर्चना के बाद ये तीनों भाई-बहन मंदिर से निकलकर विराट रथों पर सवार होकर भक्तों के बीच जाते हैं। जगन्नाथ मंदिर से गुंडीचा मंदिर और फिर जगन्नाथ मंदिर की यह यात्रा एकादशी तिथि को सम्पन्न होती है। रथयात्रा मूलत: एक सामुदायिक पर्व है। इस अवसर पर घरों में कोई भी पूजा नहीं होती तथा न ही कोई उपवास रखा जाता है। यहां किसी प्रकार का जातिभेद नहीं है। जगन्नाथ को चढ़ाया हुआ चावल कभी अशुद्ध नहीं होता, इसे महाप्रसाद की संज्ञा दी गई है। स्कंद पुराण में स्पष्ट कहा गया है कि जो श्रद्धालु इस रथयात्रा में शामिल होता है, वह पुनर्जन्म के चक्र से मुक्त हो मोक्ष पा जाता है।

स्कंद पुराण में जगन्नाथपुरी को धरती के बैकुंठ की संज्ञा दी गई है। जिसकी गणना भारत की प्राचीनतम सात नगरियों में होती है। इस मंदिर के विभिन्न चमत्कार आज भी लोगों को दांतों तले अंगुलियां दबाने को विवश कर देते हैं। मसलन चार लाख वर्गफुट में क्षेत्र में फैले और लगभग 214 फुट ऊंचे दुनिया के भव्यतम मंदिरों में शुमार इस मंदिर के मुख्य गुंबद की छाया कभी भी धरती पर नहीं पड़ती। श्री जगन्नाथ मंदिर के ऊपर स्थापित भव्य लाल ध्वज सदैव हवा की विपरीत दिशा में लहराता है। किसी भी स्थान से आप मंदिर के शीर्ष पर लगे सुदर्शन चक्र को देखेंगे तो वह आपको सदैव अपने सामने ही लगा दिखेगा। मंदिर के ऊपर गुंबद के आस पास अब तक कोई पक्षी उड़ता हुआ नहीं देखा गया। इसके ऊपर से विमान भी नहीं उड़ पाता। इस दिव्य तीर्थ की आकृति एक दक्षिणवर्ती शंख की तरह है जिसे सागर का पवित्र जल सतत् धोता रहता है।

आश्चर्य की बात है कि समुद्र की घोर गर्जना मंदिर के सिंहद्वार में पहला कदम रखते ही सुनाई पड़ना बिल्कुल बंद हो जाती है। यहां की रसोई दुनिया की सबसे निराली रसोई है जिसमें पूरा भोजन प्रसाद मिट्टी के पात्रों में चूल्हों पर बनाया जाता है। इस रसोई का भोजन कभी नहीं घटता तभी तो इसके स्वामी जगन्नाथ कहलाते हैं। मंदिर की रसोई में प्रसाद पकाने के लिए सात बर्तन एक-दूसरे पर रखे जाते हैं और सब कुछ लकड़ी पर ही पकाया जाता है। इस प्रक्रिया में शीर्ष बर्तन में सामग्री पहले पकती है फिर क्रमश: नीचे की तरफ एक के बाद एक पकती जाती है। अर्थात सबसे ऊपर रखे बर्तन का खाना पहले पक जाता है। है न चमत्कार!

दिनेश गुप्ता
डायरेक्टर
94142 39513

मनीष गुप्ता
डायरेक्टर
98870 08943

मोहित गुप्ता
डायरेक्टर
98871 84032

श्री जी कलेक्शन

जेन्ट्स, लेडिज एवं बच्चों के
रेडिमेड कपड़ों के विक्रेता

धानमण्डी चौक, घण्टाघर के सामने,
उदयपुर – 313 001 (राज.)

हां! हम हैं शहज़ादे

उत्तरप्रदेश में लोकसभा चुनाव में सपा प्रमुख अखिलेश प्रसाद व कांग्रेस के राहुल गांधी ने भाजपा को पटखनी देकर साबित कर दिया कि हां, शहजादे हैं हम।

उमेश शर्मा

उत्तप्रदेश की 63 सीटों पर चुनाव लड़कर सपा जहां 37 सीटें जीतने में कामयाब हुई तो 17 सीटों पर चुनाव लड़कर कांग्रेस ने छह सीटें जीत ली। वह 6 अन्य सीटों पर मामूली वोटों से हार गई, जिसमें गोरखपुर जिले की बांसगांव की सीट भी शामिल है, जहां इसके उम्मीदवार मात्र 3100 वोट से हारे। कांग्रेस के लिए सुखद यह है कि इस बार यूपी में जमानत गंवाने की परम्परा से वह बच गई। सपा भी जीती हुई सीटों के अलावा जहां हारी है वहां सम्मानजनक वोट लेकर ही हारी। उत्तरप्रदेश में भाजपा की यह हार चौंकाने वाली है क्योंकि मोदी के चार सौ पार के ऐलान में यूपी की 80 की 80 सीटें भी शामिल थीं। बुलडोजर और चर्बी ढीली करने से लेकर गर्मी उतार देने जैसे शब्द बाण योगी खेमे से खूब चले। बीच चुनाव में शरिया, मुस्लिम लीग और पाकिस्तान की भी इंट्री होती रही। चुनाव को रामभक्त और राम द्रोहियों के बीच बताने की कोशिश भी हुई, पर क्या इस पर चर्चा की गुंजाइश तनिक भी नहीं कि 80 की 80 सीटें जीत लेने का दम भरने वाले आखिर 33 पर ही क्यों सिमट गए? वाराणसी से भारी–भरकम जीत का मोदी का सपना क्यों चूर हुआ और लखनऊ की सीट से राजनाथ सिंह की जैसे–तैसे जीत का संदेश आखिर क्या है?

महाराष्ट्रः जोड़-तोड़ की राजनीति के खुले सारे जोड़

महाराष्ट्र से लोकसभा के चुनाव के नतीजे नई राजनीतिक दिशा का संकेत दे रहे हैं। पिछले पांच साल में महाराष्ट्र की राजनीति में जमकर जोड़–तोड़ हुआ। दो बड़े दल शरद पवार की राकांपा और शिवसेना दो पार्टियों में विभाजित हुई। इससे जो गठजोड़ बने उसमें एक तरफ महायुति थी, जिसमें भाजपा, शिवसेना का एकनाथ शिंदे गुट और अजीत पवार की एनसीपी शामिल थी। दूसरी ओर महाविकास अघाड़ी में कांग्रेस के साथ शरद पवार और उद्धव ठाकरे की शिवसेना थी। इस बार लोकसभा चुनाव में महाराष्ट्र की लड़ाई एनडीए और इंडिया गठबंधन के बीच न होकर महाविकास अघाड़ी और महायुति के बीच सीधी लड़ाई थी।

महायुति को करारी चोट

2019 के लोकसभा चुनाव में भाजपा और शिवसेना की महायुति ने 41 सीटें जीती थीं। मगर इस बार महायुति को सिर्फ 17 सीटें मिली हैं। उसे 24 सीटों का नुकसान हुआ है, वह भी तब जब इस बार अजित पवार भी भाजपा के साथ हैं। दूसरी ओर महाविकास अघाड़ी ने शानदार प्रदर्शन करते हुए 48 में से 30 सीटों पर जीत हासिल की।

बढ़ी कांग्रेस की ताकत

राज्य में कांग्रेस की ताकत बढ़ी है और भाजपा की कम हुई है। इस चुनाव में कांग्रेस ने अपना खोया विदर्भ का गढ़ फिर से हासिल कर लिया है। भाजपा के तीन केन्द्रीय मंत्रियों समेत कई

दिग्गजों की हार हुई है। मुख्यमंत्री अशोक चव्हाण, मिलिंद देवड़ा, संजय निरूपम जैसे कांग्रेस के कई बड़ नेताओं को भाजपा ने लपक लिया मगर इन सबका उसे कोई लाभ नहीं मिला। 2019 में ओवैसी की पार्टी एएमआईएम और वंचित बहुजन अघाड़ी द्वारा लिए गए वोटों से कांग्रेस को काफी नुकसान हुआ था। मगर इस बार मतदाताओं ने इन दोनों को ही किनारे कर दिया।

2 एम+ डी

महाविकास अघाड़ी की सफलता के पीछे मराठा-दलित-मुस्लिम का एकजुट हो जाना एक बड़ा कारण है। उद्धव ठाकरे ने महाराष्ट्र के मुस्लिम समाज के साथ सीधी बैठकें की। उन्हें साफ बताया कि पहले हमारी दुश्मनी की चर्चा होती थी, अब हमारी दोस्ती की चर्चा होगी। संविधान और आरक्षण के मुद्दे पर बहुसंख्यक दलित मतदाता महाविकास अघाड़ी के साथ आ गए।

सहानुभूति की लहर

शरद पवार और उद्धव ठाकरे की पार्टियों को जिस तरह से भाजपा ने तोड़ा, उससे इन दोनों नेताओं को मतदाताओं की पूरी सहानुभूति मिली। जनता ने तोड़-फोड़ को स्वीकार नहीं किया। मोदी ने प्रचार के दौरान शरद पवार और उद्धव ठाकरे के लिए भटकती आत्मा और नकली बच्चा जैसे शब्दों का इस्तेमाल किया। इसे महाराष्ट्र के लोगों ने अपने नेताओं का अपमान माना। नतीजा यह निकला कि उद्धव ठाकरे की पार्टी मुम्बई में सबसे अधिक सीटें जीत गई।

कांग्रेस : सिर्फ 328 उम्मीदवार

देश में आम चुनावों के इतिहास में यह पहली बार था कि कांग्रेस ने लोकसभा की 543 में से 400 से भी कम सीटों पर चुनाव लड़ा। इससे पहले 2004 के आम चुनाव में पार्टी ने 417 प्रत्याशी उतारे थे, जो तब तक का सबसे कम कांग्रेस उम्मीदवारों का आंकड़ा था। कांग्रेस ने 2009 में 440, 2014 में 464 और 2019 में 421 लोकसभा सीटों पर चुनाव लड़ा। इस बार इंडी गठबंधन के चलते देश के 12 राज्यों में पार्टी ने 2019 की तुलना में कम सीटों पर चुनाव लड़ा। कांग्रेस के उम्मीदवारों का कारवां 328 पर आकर थम गया, जो कि 2019 के आंकड़े से 93 कम है। इसके पीछे कई कारण हैं, जिनमें से एक है अलायंस। इस बार कांग्रेस ने ऐसी 101 सीटें इंडिया गठबंधन में अपने सहयोगी दलों के साथ साझा की जिन पर पार्टी ने 2019 में अपने खुद के प्रत्याशी चुनाव मैदान में उतारे थे। कर्नाटक और ओडिशा ही ऐसे दो राज्य हैं जहां कांग्रेस उम्मीदवारों का आंकड़ा बढ़ा है। यदि सूरत और इंदौर का घटनाक्रम न हुआ होता तो भी यह आंकड़ा 330 सीटों का होता।

सीटें, जिन पर चुनाव लड़ा

राज्य	कुल	2019	2024
उत्तर प्रदेश	80	67	17
प. बंगाल	42	40	14
महाराष्ट्र	48	25	17
कर्नाटक	28	21	28
ओडिशा	21	18	20

बरसते बादलों के साथ अब भी गूंजती है कजरी

कजरी में संयोग और वियोग दोनो भाव हैं। लेकिन मुख्य विषय तो वर्षा ऋतु ही है। यह अच्छी बात है कि इन दिनों संगीत सिखाने-पढ़ाने वाले कला संकायों में लोक शैली क्षेत्र में भी काम करने की कोशिश हो रही है। सुखद एवं सामाजिक परम्पराओं के संरक्षण के लिए यह जरूरी भी है।

शारदा वेलकर

हमारी परंपरा में ऋतु और काल के अनुरूप गीत-संगीत का एक समृद्ध कोश है। इसी कोश में कजरी लोकगीत शैली है, जिसे सावन के महीने या वर्षा ऋतु में गाने की परंपरा है। सदियों से इस मौसम में देहात से शहर तक लोग इस परंपरा को निभाते आ रहे हैं। इस शास्त्रीय संगीत विधा वाले लोग इस लोकगायन विधा के गीतों को शास्त्रीय या उप-शास्त्रीय तरीके से गाते हैं। यह है तो लोकशैली ही। ये गीत गौड़ मल्हार, तिलक कामोद राग के करीब होते हैं। कजरी गीत राग पीलू में भी गाते हैं।

बारिश के खुशनुमा मौसम में कजरी महोत्सव की भी परंपरा रही है। अगर इसकी लोकप्रियता की बात करें, तो लोकगीतों का रूप-स्वरूप भी काफी बदल गया है। पुराने पारंपारिक लोकगीतों को भी गाया जाता है और समसामयिक बहुत सारे नए गीतों की रचना भी होती रहती है। लोगों की भावनाओं के साथ चलते हुए ही लोकगीतों की लोकप्रियता और प्रासंगिकता बनी हुई है। इस तरह से इस लोक गायन शैली का रूप बदलता रहता है।

अक्सर यह चिंता जताई जाती है कि अब पहले की तरह कजरी नहीं गाई जा रही है, जबकि वास्तव में ऐसा नहीं है। बदलते दौर में ऐसा नहीं है कि लोगों ने कजरी गाना छोड़ दिया हो। बारिश के दिनों में कजरी आज भी गाई और सुनी जाती है। उसका मूल स्वरूप तो वही है। हो सकता है, गीतों में कुछ हेरफेर हो, लेकिन पारंपारिक शैली में ही गाई जाती है। लोग जब शास्त्रीय अंदाज में गाते हैं, तो कुछ उसमें जोड़ देते हैं, विस्तार कर देते हैं, लेकिन उसका जो मूल ढांचा है, वह तो परम्परागत ही है।

कजरी में श्रृंगार रस प्रधान होता है। वैसे इसमें संयोग भी है और वियोग भी, यानी दोनों तरह के भाव हैं। इसका मुख्य विषय तो वर्षा ऋतु ही है। आसमान में बादलों का उमड़ना, बिजली का कड़कना, पपीहे का पीहू, कोयल की कुहक, इन गीतों की मुख्य विषय-वस्तु है। कजरी के साथ ही झूला भी एक गायन शैली है, जिसके गीत भी इसी मौसम में गाए जाते हैं। कृष्ण-राधा और राम-सीता से जुड़े गीत भी होते हैं। एक बहुत प्रसिद्ध पारंपारिक झूला गीत है, झूला धीरे झूलाओ सुकुमारी सिया है। इसके अलावा, झूला धीरे से झुलाओ बनवारी रे सांवरिया भी खूब प्रचलित है। कजरी में भी ननद-भौजाई की छेड़छाड़, ठिठोली या पिया मिलन की उत्कंठा जैसे विषय खूब होते हैं। कैसे खेले जइबू सावन में कजरिया, बदरिया घेरि आइल ननदी। बनारसी बोली में सावन झड़ी लागे, हो धीरे-धीरे, चुनर मोरा भीजे धीरे-धीरे। बरसन लागी बदरिया झूम-झूम के। इसी तरह, समसामयिक विषयों पर बने कजरी गीतों में लोकप्रिय हैं, मिर्जापुर कईला गुलजार हो, कचौड़ी गली सून कइला बलमू या फिर पिया मेहंदी लिया द मोतीझील से, जाके साइकिल से ना। इस तरह से रोचक विधा में गीत बनाए जाते हैं। मिर्जापुर की कजरी है, बनारस की भी कजरी है। मूलतः पूर्वी उत्तरप्रदेश या उत्तर भारत की यह गायन शैली है। कजरी जैसी कोई शैली कर्नाटकी संगीत में नहीं है, वहां उनका अपना लोक-संगीत है। कजरी उत्तर भारत की एक खासियत है। वैसे लोक संगीत का क्षेत्र विशाल है, तमाम शैलियों को यहां गिनाना संभव नहीं है। इनमें प्रमुख रूप से कजरी तो है ही, उसके अलावा चैत महीने में चैती गाई जाती है, होरी गाई जाती है। सोहर इत्यादि तो संस्कार गीत हैं, जो हमारी लोक परंपरा में सदियों से और हरके मौसम में गाए जाते रहे हैं। उत्तर भारत के तमाम बड़े गायक-संगीतकार भी चैती, सोहर, कजरी गाते हैं। एक अच्छी बात यह है कि इन दिनों संगीत सिखाने-पढ़ाने वाले कला संकायों में लोक शैली क्षेत्र में भी काम करने की कोशिश हो रही है।

(लेखिका बीएचयू में संगीत प्रोफेसर हैं।)

सिंजारे भी जाते हैं तीज पर

श्रावण मास के शुक्ल पक्ष की तृतीया को हरियाली तीज उत्सव मनाया जाता है। उसी प्रकार भाद्रपद की कृष्ण पक्ष की तीज को कजरी तीज का त्यौहार आता है। इस दिन माहेश्वरी वैश्य जौ, गेहूं, चने और चांवल के सत्तू में घी, मेवा डालकर भिन्न-भिन्न पकवान बनाते हैं, तथा चंद्रोदय के बाद उसी का भोजन करते हैं। इस कारण इसे सातूड़ी तीज भी कहा जाता है। कहीं-कहीं पर इस दिन भी हरियाली तीज के समान सिंजारे भेजे जाते हैं। इस दिन बहुएं सास को चीनी और रूपए का बायना निकालकर देती हैं। गायों की पूजा की जाती है। आटे की सात लोइयां बनाकर उन पर घी, गुड़ रखकर गाय को खिलाने के बाद भोजन किया जाता है। यह त्योहार खासतौर से बनारस, मिर्जापुर जिले तथा पूर्वी उत्तर प्रदेश और बिहार में सामान्य रूप से कजरी तीज के रूप में मनाया जाता है। कजरी की प्रतिद्वंद्विता भी होती है। नावों में सवार लोग कजरी गीत गाते हैं। ब्रज के मल्हारों की ही तरह मिर्जापुर तथा बनारस का यह प्रमुख वर्षागीत माना जाता है। आज के दिन घरों में मिष्ठान और पकवान बनते हैं तथा झूले भी डाले जाते हैं।

किंवदंती : एक व्यक्ति के चार बेटे और चार बहुएं थीं। तीनों बहुओं के पीहर में भरापूरा परिवार था, परंतु छोटी के पीहर में कोई नहीं था। सातूड़ी तीज पर तीनों बहुओं के पीहर से सत्तू आने वाला था, लेकिन छोटी बहू का मन यह सोचकर उदास हो गया कि उसके लिए सत्तू कहां से आएगा?

उसने अपने पति से कहा -'मेरे लिए भी सत्तू लेकर आना, चाहे इसके लिए कुछ भी क्यों न करना पड़े??' पति ने सत्तू लाने का काफी प्रयास किया पर सफलता नहीं मिली। जब वह शाम को घर लौटा और पत्नी का उदास चेहरा देखा तो उसे रातभर नींद नहीं आई। दूसरे दिन तीज थी।

वह रात्रि में घर से निकला और एक वैश्य की बंद दुकान में घुस गया। वहां चने की दाल और चक्की रखी थी। उसने दाल लेकर पीसना शुरू किया। चक्की की आवाज सुनकर वैश्य के घरवाले जाग गए। उन्होंने उसे पकड़कर पूछा -'यहां क्या कर रहे हो?'

लड़के ने जवाब दिया -'कल सातूड़ी तीज है और मेरी पत्नी के पीहर में कोई नहीं है, अत: उसके लिए सत्तू चोरी करने आया हूं। आपकी दुकान में दाल, चीनी और घी सभी था, इसलिए आपके यहां से सत्तू बनाकर ले जा रहा था। यह सुनकर वैश्य बोला -'तुम अपने घर जाओ। आज से तुम्हारी पत्नी हमारी धर्म बेटी हुई।' वह घर लौटा दूसरे दिन सवेरे ही वैश्य ने नौकरों के साथ चार तरह के सत्तू के पिंडे, साड़ी और पूजा का सामान उसके घर भिजवा दिया। जेठानियां यह सब देखकर भौचक्की रह गई और बोली-'तुम्हारे पीहर में तो कोई नहीं है, फिर इतना सब कहां से आया है?' देवरानी ने सभी को घटनाक्रम बताकर कहा -'यह सब मेरे धर्म पिता ने भेजा है।'

-राजकुमारी शर्मा

गोपी बने पहले अंतरिक्ष पर्यटक

भारतीय मूल के उद्यमी और पायलट गोपी थोटाकुरा ने 19 मई को अंतरिक्ष में उड़ान भर इतिहास रच दिया। वह अंतरिक्ष में जाने वाले पहले भारतीय पर्यटक बन गए। गोपी थोटाकुरा पांच अन्य अंतरिक्ष पर्यटकों के साथ ब्लू ओरिजिन के यान के जरिये पृथ्वी से करीब 100 मिनट की उड़ान के बाद कैप्सूल के जरिये धरती पर लौट आए। ब्लू ओरिजिन के न्यू शेपर्ड रॉकेट और कैप्सूल (एनएस-25) ने छह अंतरिक्ष पर्यटकों को लेकर उड़ान भरी।

वर्ष 1984 में रूसी सोयुज टी-11 पर राकेश शर्मा की यात्रा के बाद गोपी अंतरिक्ष की यात्रा करने वाले दूसरे भारतीय बन गए, जबकि पहले भारतीय अंतरिक्ष पर्यटक भी बने। अंतरिक्ष यात्रियों में एड ड्विट के अलावा उद्यमी मेसन एंजेल, सिल्वेन चिरोंन, केनेथ एल हेस और सेवानिवृत लेखाकार कैरोल स्कॉलर शामिल थे। आंध्र

प्रदेश के विजयवाड़ा में जन्मे गोपी 30 साल के हैं। वह एक उद्यमी और पायलट हैं। गोपी ने सड़क पर गाड़ी चलाने से पहले ही हवाई उड़ान भरना शुरू कर लिया था। वह जेट उड़ाने के अलावा, बुश, एरोबेटिक और सीप्लेन के साथ-साथ ग्लाइडर भी उड़ा चुके हैं। वह अंतरराष्ट्रीय मेडिकल जेट पायलट के रूप में भी काम कर चुके हैं। गोपी एम्ब्री-रिडल एरोनॉटिकल यूनिवर्सिटी से स्नातक हैं। वह लंबे समय से अमेरिका में ही रह रहे हैं।

ड्वाइट पहले अश्वेत यात्री: अमेरिका के पहले अश्वेत अंतरिक्ष पर्यटक का आखिकार 60 साल बाद अंतरिक्ष में जाने का सपना पूरा हुआ। ड्वाइट वायु सेना के पायलट थे। उन्हें नासा के शुरुआती अंतरिक्ष यात्री कोर के रूप में चुना था। लेकिन 1963 में अंतरिक्ष में जाने के लिए उनकी बारी नहीं आई।

सबसे उम्रदराज व्यक्ति भी: 90 साल के ड्वाइट अंतरिक्ष में पहुंचने वाले सबसे उम्रदराज व्यक्ति भी बन गए हैं। इससे पहले 'स्टार ट्रेक' अभिनेता विलियम शेटनर के नाम यह रिकॉर्ड था जब वह 2021 में अंतरिक्ष में गए थे।

मूल्यों को बचाने के लिए थी इमाम हुसैन की शहादत

अल्फेज खान

'मोहर्रम' इस्लामिक कैलेंडर के पहले महीने का नाम है। इसी महीने से इस्लाम का नया साल शुरू होता है। इस महीने की 10 तारीख को रोज-ए-आशुरा कहा जाता है, इसी दिन को अंग्रेजी कैलेंडर में मोहर्रम कहा गया है। इस वर्ष 17 जुलाई इस्लाम के मूल्यों को बचाने के लिए अपनी व परिवार की जान कुर्बान करने वाले इमाम हुसैन की याद में ताजिए निकाले जाएंगे।

मोहर्रम के महीने में इस्लाम धर्म के संस्थापक हजरत मुहम्मद साहब के छोटे नवासे इमाम हुसैन और उनके 72 अनुयाइयों का कत्ल कर दिया गया था। हजरत हुसैन इराक के शहर करबला में यजीद की फौज से लड़ते हुए शहीद हुए थे।

यजीद से थी नाइतेफाकी

इस्लाम में सिर्फ एक ही खुदा की इबादत करने के लिए कहा गया है। छल-कपट, झूठ, मक्कारी, जुआ, शराब जैसी चीजें इस्लाम में हराम हैं। हजरत मोहम्मद (स.अ) ने इन्हीं निर्देशों का पालन किया। और इन्हीं इस्लामिक सिद्धांतों पर अमल करने की हिदायत सभी मुसलमानों और अपने परिवार को भी दी। दूसरी तरफ इस्लाम का जहां से उदय हुआ, मदीना से कुछ दूर 'शाम' में मुआविया नामक

ऐसे शुरू हुई जंग

इमाम जंग का इरादा नहीं रखते थे क्योंकि उनके काफिले में केवल 72 लोग शामिल थे। जिसमें छह माह का बेटा उनकी बहन-बेटियां, पत्नी और छोटे-छोटे बच्चे शामिल थे। यह तारीख एक मोहर्रम थी, और प्रचंड गर्मी का वक्त था। सात मोहर्रम तक इमाम हुसैन के पास जितना खाना और खासकर पानी था वह खत्म हो चुका था। इमाम सब्र से काम लेते हुए जंग को टालते रहे। 7 से 10 मुहर्रम तक इमाम हुसैन उनके परिवार के सदस्य और अनुयायी भूखे प्यासे रहे। 10 मुहर्रम को इमाम हुसैन के काफिले के सदस्यों ने एक-एक कर यजीद की फौज से जंग की। जब इमाम हुसैन के सारे साथी शहीद हो चुके तब असर (दोपहर) की नमाज के बाद इमाम हुसैन खुद गए और वह भी शहीद हो गए। इस जंग में इमाम हुसैन के एक पुत्र जैनुल आबेदीन ही जिंदा बच पाए क्योंकि 10 मोहर्रम को वह बीमार थे और बाद में उन्हीं से मुहम्मद साहब की पीढ़ी चली। इसी कुरबानी की याद में मोहर्रम मनाया जाता है। करबला की यह घटना इस्लाम की हिफाजत के लिए हजरत मोहम्मद के घराने की तरफ से दी गई कुर्बानी है। इमाम हुसैन और उनके पुरुष साथियों व परिजनों को कत्ल करने के बाद यजीद ने हजरत इमाम हुसैन के परिवार की औरतों को गिरफ्तार कर उन पर बेइंतहा जुल्म किए।

शासक का दौर था। मुआविया की मृत्यु के बाद शाही वारिस के रूप में यजीद जिसमें सभी अवगुण मौजूद थे, वह शाम की गद्दी पर बैठा।

यजीद चाहता था कि उसके गद्दी पर बैठने की पुष्टि इमाम हुसैन करें क्योंकि वह मोहम्मद साहब के नवासे हैं और उनकी वहां के लोगों में अच्छी प्रतिष्ठा और प्रभाव है। यजीद जैसे शख्स को इस्लामी, शासक मानने से हजरत मोहम्मद के घराने ने साफ इन्कार कर दिया था क्योंकि यजीद के लिए इस्लामी मूल्यों की कोई कीमत नहीं थी। यजीद की बात मानने से इन्कार करने के साथ ही उन्होंने यह भी फैसला लिया कि अब वह अपने नाना हजरत मोहम्मद साहब का शहर मदीना छोड़ देंगे ताकि वहां अमन कायम रहे।

इस हाल में तय हुई थी जंग

इमाम हुसैन हमेशा के लिए मदीना छोड़कर परिवार और अपने कुछ प्रियजन के साथ इराक की तरफ जा रहे थे। लेकिन करबला के पास यजीद की फौज ने उनके काफिले को घेर लिया। यजीद ने उनके सामने शर्तें रखीं जिन्हें इमाम हुसैन ने मानने से साफ इनकार कर दिया। शर्त नहीं मानने के एवज में यजीद ने जंग करने की चुनौती दी। यजीद से बात करने के दौरान इमाम हुसैन इराक के रास्ते में ही अपने काफिले के साथ फुरात नदी के किनारे तम्बू लगाकर ठहर गए। लेकिन यजीदी फौज ने इमाम हुसैन के तम्बुओं को फुरात नदी के किनारे से हटाने का आदेश दिया और उन्हें नदी से पानी लेने की इजाजत तक नहीं दी। इमाम हुसैन की मौत के बाद यजीद ने खुद को विजेता घोषित करते हुए कहा कि जो उनका व उनके शासन की खिलाफत करेगा, उसका यही हश्र होगा। सीरिया के कैदखाने में ही हुसैन की मासूम बच्ची सकीना की मौत हो गई। बहरहाल इस वाकये को 1400 से ज्यादा साल बीत चुके हैं। कत्ल-ए-हुसैन अस्ल में मर्ग-ए-यजीद हैं। इस शहादत की स्मृति में ही ताजिये निकाल कर उन्हे अदब से ठंडा किया जाता है।

कैसा लगा यह अंक

प्रत्यूष

इस अंक में कौन सा आलेख आपको ज्यादा पसंद आया। आप किन विषयों पर आलेख पढ़ना ज्यादा पसंद करेंगे? किस विषय पर आप हमें अपना मौलिक आलेख, शोध, कविता, कहानी भेजना चाहेंगे। कृपया हमें लिखें। आपके रचनात्मक सुझावों का सदैव स्वागत होगा।

UDAIPUR HOTEL

(APPROVED BY GOVT. OF RAJASTHAN)

SPECIALITY & FACILITIES

- Parking
- A/C & Cooler Rooms
- Situated in Heart of City
- T.V. With Cable Connection
- Homely Atmosphere
- Near to bus & Railway Station
- Rooms Connected with Telephone

Surajpole, Udaipur-313001 (Raj.)

Telephone Number :- 0294-2417115-116

1996 के बाद मैदान में सर्वाधिक प्रत्याशी

2019 के मुकाबले 3.99 फीसद ज्यादा उम्मीदवार, महिला प्रत्याशी कम

अमित शर्मा

हाल ही सम्पन्न लोकसभा चुनाव में कुल 8,360 उम्मीदवार मैदान में थे। वर्ष 1996 के संसदीय चुनावों के बाद सबसे अधिक उम्मीदवार इसी दफा चुनाव में आमने-सामने रहे। लोकसभा की 543 सीट के लिए वर्ष 2019 के चुनावों में 8,039 उम्मीदवार मैदान में थे। इससे पहले 1996 में रेकार्ड 13,952 उम्मीदवारों ने चुनाव लड़ा था। वर्ष 2019 के मुकाबले इस बार 3.99 फीसद ज्यादा उम्मीदवार चुनाव में थे।

2024 के लोकसभा चुनाव सात चरणों में सम्पन्न हुए। 19 अप्रेल को पहले चरण के चुनाव में 21 राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों की 102 सीट पर 1,625 उम्मीदवार थे। दूसरे चरण में 26 अप्रैल को 13 राज्यों एवं केंद्रशासित प्रदेशों की 89 सीट पर 1,198 उम्मीदवार थे, जबकि 7 मई को तीसरे चरण में 12 राज्यों एवं केंद्रशासित प्रदेशों की 94 सीट पर 1,352 उम्मीदवार मैदान में थे। चौथे चरण में 10 राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों की 96 लोकसभा सीट पर 13 मई को मतदान संपन्न हुआ था। इस चरण में सबसे अधिक 1,717 उम्मीदवार मैदान में थे। इसी तरह पांचवें चरण में 20 मई को आठ राज्यों एवं केंद्रशासित प्रदेशों की 49 सीट पर 695 उम्मीदवार थे। छठे और सातवें चरण के चुनाव में क्रमश: 25 मई व 1 जून को 869 और 904 उम्मीदवार मैदान में थे।

25 मई को 58 व अन्तिम चरण में 1 जून को आठ राज्यों की शेष 57 सीटों पर वोट डाले गए।

लोकसभा चुनाव लड़ने वाले उम्मीदवारों की संख्या वर्ष 1952 में 1,874 थी, जो 2024 में चार गुना से अधिक बढ़कर 8,360 हो गई है। 1952 में देश में पहली बार आम चुनाव हुए थे। अब प्रति निर्वाचन क्षेत्र उम्मीदवारों की औसत संख्या 4.67 से बढ़कर 15.39 हो गई है। वर्ष 1977 में छठे लोकसभा चुनावों के अंत तक औसतन प्रति लोकसभा सीट पर केवल तीन से पांच उम्मीदवार हुआ करते थे, लेकिन पिछले आम चुनावों में देशभर में प्रति निर्वाचन क्षेत्र में 14.8 उम्मीदवार चुनाव मैदान में थे। यानी पिछले कुछ वर्षों में चुनाव लड़ने वाले उम्मीदवारों की कुल संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। चुनाव आयोग द्वारा जमानत राशि 500 रूपए से बढ़ाकर 10,000 रुपए किए जाने से जाहिर तौर पर 1998 के लोकसभा चुनावों में प्रति सीट उम्मीदवारों की संख्या कम हो गई और यह प्रति सीट 8.75 फीसद रही। 2024 के लोकसभा चुनाव में महिला प्रत्याशियों की संख्या 10 फीसद से भी कम रही। 'एसोसिएशन फार डेमोक्रेटिक रिफार्म्स' (एडीआर) के अनुसार, 2024 के आम चुनाव में महिला उम्मीदवारों की संख्या केवल 797

कंगना रनौत, मण्डी | डिम्पल यादव, मैनपुरी | महुआ मोइत्रा, कृष्णानगर | बांसुरी स्वराज, नई दिल्ली | महिमा सिंह, राजसमंद

पिछले 17 चुनावों में निर्वाचित महिला सांसद

1952	22	1991	37
1957	22	1996	40
1962	31	1998	43
1967	29	1999	49
1971	21	2004	45
1977	19	2009	59
1980	28	2014	62
1984	42	2019	78
1989	29		

2024 में निर्वाचित महिला सांसद

भाजपा	31
कांग्रेस	13
टीएमसी	11
सपा	05
डीएमके	03
एलजेपी (आरवी)	02
जेडी (यू)	02
अन्य	07
कुल	74

थी, जो कि चुनाव के सात चरणों में मैदान में उतरे कुल उम्मीदवारों का मात्र 9.5 फीसद है। लोकसभा में महिलाओं के लिए एक तिहाई सीट आरक्षित करने वाला महिला आरक्षण विधेयक पारित होने के बाद यह पहला चुनाव था। हालांकि, यह विधेयक अभी लागू नहीं हुआ है। पहले चरण के चुनाव के दौरान 1,618 उम्मीदवारों में से केवल 135 महिलाएं थीं। दूसरे चरण में भाग लेने वाले 1,198 उम्मीदवारों में से 1,192 के हलफनामों का विश्लेषण किया गया, जिनमें 100 से अधिक महिलाएं थीं। तीसरे चरण में 1,352 उम्मीदवार थे, जिनमें महिलाओं की संख्या महज 123 थी। चौथे चरण में 1,717 उम्मीदवारों में से 1,710 के हलफनामों का विश्लेषण किया गया, जिनमें 170 महिलाएं थीं। पांचवे चरण में सबसे कम 695 उम्मीदवार थे, जिनमें 82 महिलाएं थीं, जबकि सातवें चरण के लिए 904 उम्मीदवार मैदान में थे जिनमें केवल 95 महिलाएं थीं।

इस बार कम मतदान

चरण	राज्य/यूटी	सीटें	वोट (2019)	वोट (2024)
पहला चरण	21	102	69.96%	66.14% (-3.82)
दूसरा चरण	13	88	70.09%	66.71% (-3.38)
तीसरा चरण	11	93	66.89%	65.68% (1.21)
चौथा चरण	10	96	69.12%	67.71% (-1.41)
पांचवा चरण	08	49	62.01%	62.20% (+0.19)
छठा चरण	08	58	64.22%	63.37% (-0.85)
सातवां चरण	08	57	65.29%	61.34% (-3.95)

13 विधानसभा सीटों पर उपचुनाव 10 को

निर्वाचन आयोग ने 7 राज्यों की 13 विधानसभा सीटों पर उपचुनाव की तारीखों की घोषणा कर दी। इन सीटों पर 10 जुलाई को मतदान होगा जबकि मतगणना 13 जुलाई को होगी। ये उपचुनाव मौजूदा सदस्यों की मृत्यु या इस्तीफे के कारण हुई रिक्तियों को भरने के लिए होंगे। जिन सीटों पर उपचुनाव होंगे, उनमें रूपौली (बिहार), रायगंज, राणाघाट दक्षिण, बागदा और मानिकतला (सभी पश्चिम बंगाल), विक्रवंडी (तमिलनाडु), अमरवाड़ा (मध्य प्रदेश), बद्रीनाथ और मंगलौर (उत्तराखंड), जालंधर पश्चिम (पंजाब), दोहरा, हमीरपुर और नालागढ़ (हिमाचल प्रदेश) शामिल हैं।

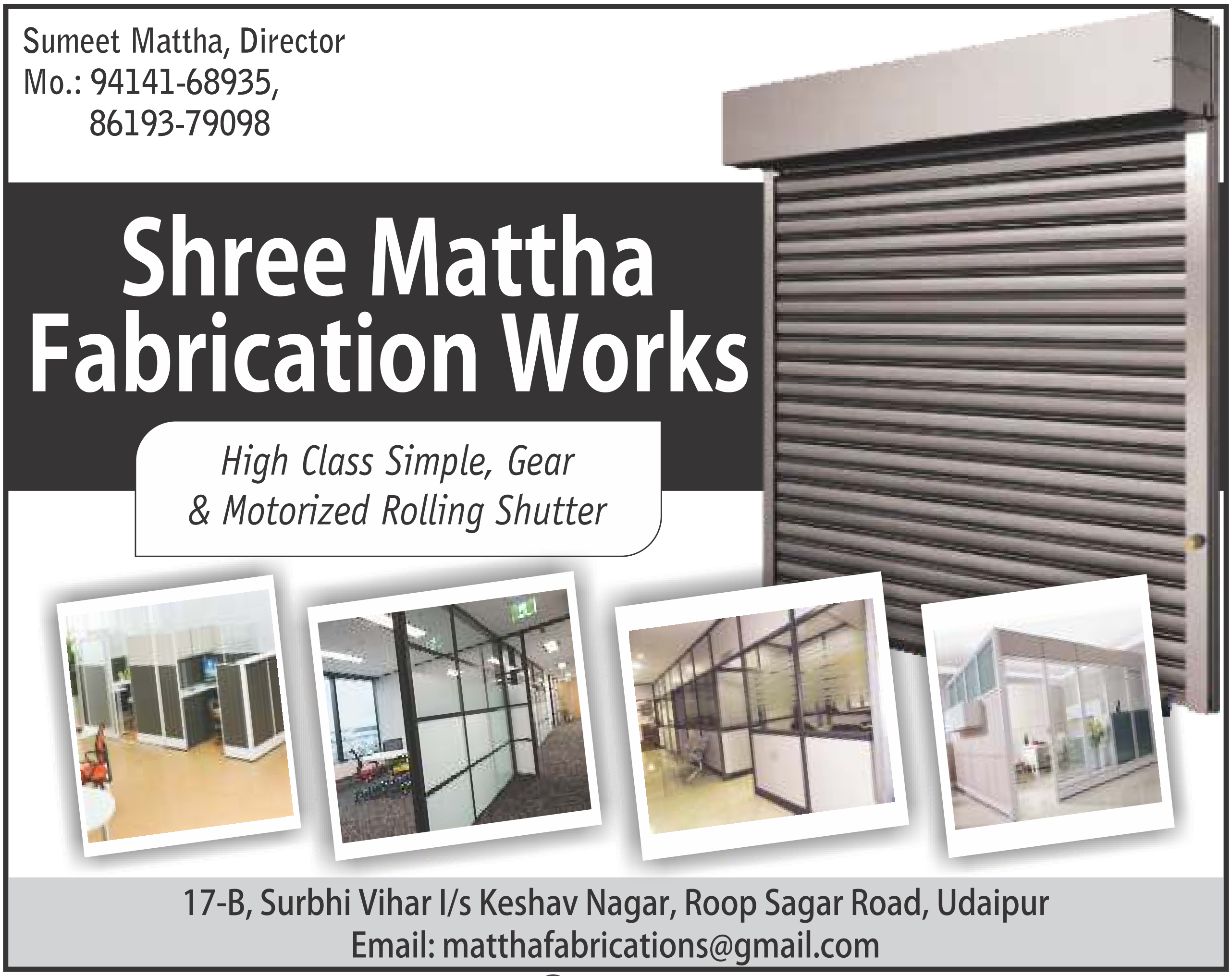

दुनिया बदल सकते हैं, कलाकार

महज़ एक दिन के अभिनय से ही रंगमंच के प्रति कलाकार का दायित्व पूरा नहीं हो जाता, अपितु बरसों–बरस इसका अभ्यास करना और अपने साथ आने वाली पीढ़ी को इस विधा से जोड़कर रंगकर्म संस्कृति को समृद्ध करना भी उनकी ही ज़िम्मेदारी है। क्योंकि ये एक सतत् प्रक्रिया है, जो निरंतर अभ्यास से दिन–प्रतिदिन और निखरती है। आइए आपको मिलवाते हैं, रंगकर्म को हृदय से समर्पित उदयपुर के कुछ ऐसे ही रंगकर्मियों से, जो विद्यार्थी जीवन के बाद गृहस्थ जीवन में भी सक्रिय रूप से नाटक की नब्ज़ थामे रंगमंच पर सक्रिय रहे हैं।

रेखा शर्मा
रंगकर्मी एवं रेडियो कलाकार

नाट्यशास्त्र की अनेक विधाओं में रंगमंच ही सबसे विश्वसनीय और जीवंत उदाहरण है। यद्यपि मेरी अभिनय यात्रा रेडियो नाटकों से शुरू हुई। जहां रंगमंच पर कलाकार समग्र रूप में अपने पात्र को अभिव्यक्त करता है, वहीं रेडियो में अभिनय के लिए केवल आवाज़ ही माध्यम थी। हर पात्र आवाज़ के ज़रिए ही श्रोताओं तक अपनी भावाभिव्यक्ति पहुंचा पाता है। कालांतर में आकाशवाणी द्वारा ऐसे कार्यक्रम आयोजित किए जाने लगे, जिनमें रेडियो नाटकों का मंचन दर्शकों के समक्ष किया जाने लगा, जिससे दर्शक ये देख सकें कि बिना किसी सेट या मूवमेंट के कलाकार सिर्फ़ संवाद पढ़कर कहानी को साकार कर देते थे। एक लंबे अरसे तक रेडियो नाटकों में सक्रिय रहने के पश्चात मैने रंगमंच पर खुद को आज़माने का जब इरादा किया, तब साथ मिला उदयपुर के जाने–मोन नाट्य निर्देशक शिवराज सोनवाल जी का, जिन्होंने मुझे पहली बार रंगमंच पर अवसर दिया जो मेरे लिए एक चुनौती भी था। क्योंकि जहां रेडियो नाटकों में स्क्रिप्ट आपके सामने होती है, जिसे पढ़ते हुए अभिनय करना शायद उतना मुश्किल नहीं होता था, जितना कि स्टेज पर स्क्रिप्ट याद करके अभिनय करना। सच कहूं तो रंगमंच अपने आप में एक पूरी दुनिया है। हां.....एक बात और...विश्वविद्यालयी शिक्षा में नाट्यशास्त्र एक विषय के रूप में पढ़ने के पश्चात् जब रंगमंच के धरातल पर कदम रखा तो ये एक अलग ही अनुभव था। लगा कि सैद्धांतिक तौर पर जो जाना और समझा, प्रायोगिक तौर पर बिल्कुल अलग है। अलग–अलग तरह की विषम परिस्थितियों का सामना करता हुआ 'रंगमंच'..... अपने अस्तित्व को बनाए रखने के लिए संघर्ष करता रंगमंच... जहां टीवी सीरियल्स, फ़िल्म, एड फिल्म और ओटीटी जैसे प्रलोभन युवा रंगकर्मियों के सामने ऐसे में अपना ध्यान रंगमंच की ओर केंद्रित कर वहां और कुछ खोजना आसान काम नहीं है।

डॉ. काजल वर्मा
रंगकर्मी एवं चिकित्सा अधिकारी,
राजस्थान होम्योपैथिक चिकित्सा विभाग

इस पितृसत्तात्मक जगत में रंगमंच ने महिलाओं को अपने आत्मसम्मान, अपनी भावनाओं और अधिकारों को व्यक्त करने का सम्पूर्ण मंच दिया है, अलग–अलग रुप में लेखन, निर्देशन, अभिनय आदि के माध्यम से महिलाओं ने हुनर का प्रदर्शन करते हुए, यौन मतभेदों को झूठा साबित किया है। अभिनय और नाटक में व्यक्ति भावनाओं को महसूस करना, व्यक्त करना, समझना और भावनात्मक समस्याओं से निपटना सीखते हैं। रंगमंच सही वातावरण में मनुष्य के अंदर की आक्रामकता और तनाव को बाहर लाने में मदद करता है। युवाओं को जीवन जीने का ढंग सिखाता है और कठिन से कठिन स्थिति में भी हार न मानने के लिए प्रोत्साहित करता है। रंगमंच भाषा के ज्ञान व सही उच्चारण में प्रवीण करते हुए आत्मविश्वास से भर देता है।

नवीन जीनगर
टेलिविजन एक्टर
एवं रंग श्रमिक

'रंगमंच' शब्द में ही एक छोटा–सा ब्रह्मांड है, अभिनय का। यह शब्द तो बचपन से कई बार सुना था, परंतु इसके अर्थ एवं प्रभाव का पता सन 2007 में चला, जब लगभग 20 दिनों की रिहर्सल के बाद पहली बार रंगों के इस मंच पर कदम रखा। लोककला मंडल, उदयपुर के मुक्ताकाशी मंच पर नाटक की प्रस्तुति के बाद उपस्थित जन समूह की करतल ध्वनि जब कानों में पड़ी तो आत्मा झंकृत हो उठी। उसके बाद न जाने कितनी देर तक अपने डायरेक्टर के गले से लिपटकर रोता रहा कि उन्होंने रंगमंच के जादू से मुझ जैसे पत्थर को भी तराश कर हीरा बना दिया। जो बालक कभी सपने में भी स्टेज पर नहीं चढ़ा था, उसमें इतना आत्मविश्वास भर दिया कि वो आज हज़ारों की भीड़ के सामने लम्बे–लम्बे संवाद बोलता है। नाटक की उस रात के बाद से रंगमंच से जो हकिकी इश्क हुआ वो आज भी मेरे लिए पूजा से कम नहीं है।

कहानी कहने का आधुनिक माध्यम 'सिनेमा' चाहे कितना भी उन्नत क्यों न हो जाए, रंगमंच का प्रभाव हमेशा उससे आगे ही रहेगा, क्योंकि कहानी कहने की यह विधा स्वयं भगवान नटराज से होते हुए भरत मुनि एवं उसके बाद आधुनिक युग में शेक्सपीरियन नाटक और पारसी थिएटर ने बरकरार रखी है। रंगमंच वह सूर्य है जो कहानी कहने के माध्यमों में सदैव देदीप्यमान रहेगा।

रंगमंच सिर्फ़ एक कला नहीं, अपितु सभी कलाओं का एक मिलाजुला रूप है। कला के कई रंग हैं – जैसे गायन, वादन, चित्रकारी, नृत्य, रूप सज्जा, मूर्तिकला आदि। कला के इन सभी रंगों को एक साथ, एक मंच पर, अभिनीत करना ही रंगमंच है....और ये रंगमंच सिर्फ़ स्टेज तक ही सीमित नहीं है, बल्कि हर पहलू में है। यदि भावी पीढ़ी को भी रंगमंच के महत्व से अवगत कराते हुए उसे हर विधा में पारंगत बना कर उसे उज्ज्वल भविष्य की ओर अग्रसर करना है तो स्कूलों में एक कालांश रंगमंच के लिए होना ही चाहिए। यह रंगमंच के अस्तित्व को बचाने के लिए भी जरूरी है।

संदीप सेन
रंगकर्मी एवं
हेयर स्टाइलिस्ट

अमित व्यास
नाट्य विधा प्रमुख, संस्कार भारती

स्कूली शिक्षा के दौरान जुड़ाव रंगमंच से हुआ। वर्ष 2006 में मैं शहर के रंगकर्मियों के संपर्क में आया और मेरी रंगयात्रा शुरू हुई जो अनवरत है। मुझे कई नाटकों में हिस्सा लेने का अवसर मिला, कभी बैक स्टेज, तो कभी अभिनेता के तौर पर, इस रंगयात्रा में गुरू शिवराज सोनवाल ने अभिनय की बारीकियां समझाईं, जिससे अभिनय, दिनोंदिन बेहतर होता गया। और कुछ अच्छे क़िरदार निभाने का भी अवसर मिला। रंगमंच से मुझे जो आत्मविश्वास मिला वह अद्‌भुत है। रंगमंच से जुड़ी प्रस्तुतियां इंसान को जीवन के ढेर सारे रंगों में भिगोकर निखार देती हैं। रंगमंच जीवन के विविध रंगों को मंच पर प्रस्तुत करने की जीवंत विधा है, रंगमंच में नृत्य, संगीत, चित्र, अभिनय सहित समस्त कलाओं और विभिन्न प्रकार के कौशलों का समावेश है। हम अपने जीवन में भी कई कौशल, रंगकर्म के माध्यम से सीखते हैं। इसलिए अगर छोटी–सी नाटिका में भी हिस्सेदारी का अवसर मिले, तो उसे ज़रूर स्वीकार करना चाहिए। रंगमंच अवसाद से कहीं दूर ले जाकर, सकारात्मक ऊर्जा, सार्थक जीवन शैली और अनुशासन के महत्व से रूबरू कराता है।

शिबली खान
रंगकर्मी एवं व्यवसायी

जब भी कोई लेखक फिल्म लिखता है तो कहानी में इमोशन, कॉमेडी, एक्शन, ट्रेजेडी सब कुछ डालता है.... असल जिंदगी में ये सारे रंगमंच से ही आए हैं... विद्यालयी शिक्षा पूरी होने के बाद थिएटर में दिलचस्पी जागी। एक नुक्कड़ नाटक से थिएटर शुरू किया, वो यात्रा आगे बढ़ती गयी और कई पात्र निभाने के बाद अब भी जारी है। थिएटर की खूबसूरती ये है कि ये एक परफार्मिंग आर्ट है। परफॉर्मिंग आर्ट्स का जुड़ाव प्रकृति से वैसे ही है जैसे हमारे तन–मन, भावनाओं और आत्मा के साथ है। परफॉर्मिंग आर्ट्स के साथ काम करके मैंने यह जाना है कि जीवन में सामंजस्य कैसे बिठाना है। परफॉर्मिंग आर्ट्स हमारे अस्तित्व के सभी पहलुओं–शरीर, मन, भावनाओं व रचनात्मकता पर काम करती है। ये सभी हमें शारीरिक रूप से चुस्त–दुरुस्त रहने, मानसिक रूप से फोकस व बैलेंस रखने और हमारी क्रिएटिविटी और इमोशन को जोड़े रखने में सहायता करते हैं।

जतिन भारवानी
रंगकर्मी एवं एडवोकेट

क्यों करना चाहते हो थिएटर? इस सवाल के साथ मुझे रंगमंच की दुनिया में दाखिला मिला। उस समय मेरे बाल मस्तिष्क ने जवाब दिया, अच्छा लगता है... इसलिए करना चाहता हूं। एक दो लोग स्टेज पर झाड़ू लगा रहे थे, जो मेरे हम उम्र थे। कुछ सीनियर्स कोने में बैठे गीत और कविताएं सुना रहे थे। मेरा उत्साहित मन घर पहुंचकर अगले दिन थिएटर क्लासेज़ जाने की तैयारी करने लगा। कुछ दिन बीते और मैं भी उन लोगों की तरह कभी स्टेज पर झाडू लगाता, कभी बाहर बैठा प्रॉम्पटिंग करता तो कभी मंडली के साथ सुर मिलाता। दरअसल रंगमंच की दुनिया को जानने का सफ़र मैंने खुद को जानने से शुरू किया। जब थियेटर गुरु हमसे हमिंग करवाते या सांस पर पकड़ बनाए रखने के लिए पेट से बोलने जैसे कई पूर्वाभ्यास करवाते, तो मैं अपने शरीर के अंगों को महसूस करता। रोज़ नए क़िरदार और क़िताबें मुझे खुद से जोड़तीं। पहले मैं खुद से जुड़ा, फिर धीरे–धीरे इन क़िताबों ने मुझे दुनिया से जोड़ा। कुछ एक से चेहरे मैं हमेशा नाटक के अंत में देखता था, जो नाटक देखने आए होते थे। देखते–देखते उनसे एक रिश्ता–सा बन गया। पहले मैं लोगों से जुड़ा, फिर लोग मुझसे जुड़े। आस–पास के अच्छे कलाकारों को रोज़ी रोटी के लिए थियेटर छोड़ते भी देखा। अंदर एक टीस उठती थी छोटे शहरों के एमेच्योर थिएटर ग्रुप्स को देखकर। दो साल खूब जमकर निंदा की, उन निर्देशकों और सत्ताधारियों की, जिन्होंने थिएटर और थिएटर में आने वाले बच्चो को बर्बाद किया। फिर जाकर कहीं खुद का काम शुरू किया। पर सवाल आज भी वही है, बस इसके मायने बदल गए हैं, कि थिएटर क्यों करना है? और जवाब आज भी वही है। क्योंकि अच्छा लगता है।

सचिन भंडारी
रंगकर्मी एवं मेडिकल प्रैक्टिशनर

अगर किसी एक नाटक में आपकी भूमिका को वाहवाही मिले तो थिएटर का नशा आपके सिर चढ़ कर बोलने लगेगा। यहां बात पैसों की नहीं, बल्कि रोमांच की है। स्टेज पर पहुंचने के बाद आपका आत्मविश्वास ही सबसे बड़ा साथी है। वहां दूसरा कोई आपकी मदद नहीं कर सकता। लेकिन अगर एक सही गुरु के आशीर्वाद और उनके बताए मार्ग पर चलेंगे, तो सारा प्रोसेस एकदम सरल और रोमांचक हो जाता है। मैं अपने आप को सौभाग्यशाली मानता हूं कि मुझे उदयपुर में रहते हुए मौलिक के माध्यम से अभिनय की जो बारीक़ियां सीखने को मिलीं, वो मुम्बई से भी नहीं मिलीं। अच्छा अभिनेता बनने के लिए, थिएटर बेहद ज़रूरी है।

रवि सेन
रंगकर्मी, बैंकर, मार्शल आर्टिस्ट

अच्छा अभिनेता होने के लिए अच्छा इंसान बनना भी उतना ही जरूरी है। जिस किसी ने भी रंगमंच से अपना नाता चाहे कुछ दिन, कुछ हफ्ते या कुछ महीनों के लिए भी जोड़ा वो अपने जीवन में कभी कोई अनुचित कार्य नहीं कर सकता, रंगमंच आपको इतना संजीदा बना देता है। रंगमंच को यदि आध्यात्मिक दृष्टि से देखें तो भौतिक देह के सात चक्रों को जागृत करने हेतु तरह–तरह के ज्ञान अभ्यास हमारे आदि गुरुओं और आदि योगियों ने बताएं हैं, रंगमंच का प्रभाव भी हमारे भौतिक देह तक सीमित न होकर हमारे सुषुप्त चक्र को उद्वेलित करता है। और जब यह घटना घटती है, तब कलाकार भौतिक शरीर से ऊपर उठकर एक चैतन्यता में प्रविष्ट कर जाता है।

– ओमपाल सीलन
(प्रस्तुतकर्ता रंगकर्मी एवं पत्रकार हैं)

प्रत्यूष

समाज में समरसता और भातृत्व भाव की पोषक पत्रिका
प्रत्यूष (बहुरंगी हिन्दी मासिक)
के आज ही सदस्य बनें। मात्र 600 रुपए वार्षिक।
पताः 2, रक्षाबंधन, मेहतों का पाड़ा, धानमण्डी, उदयपुर (राज.) 313 001

अस्तित्व को जो दे विस्तार वही सच्चा गुरू

गुरू पूर्णिमा (21 जुलाई) का भारतीय संस्कृति में विशेष महत्व है। शिष्य को योग्य गुरू व गुरू को योग्य शिष्य मिलना आसान नहीं होता। प्रस्तुत है गुरू-शिष्य सम्बंधों पर ओशो के सारगर्भित व्याख्यान के अंश-

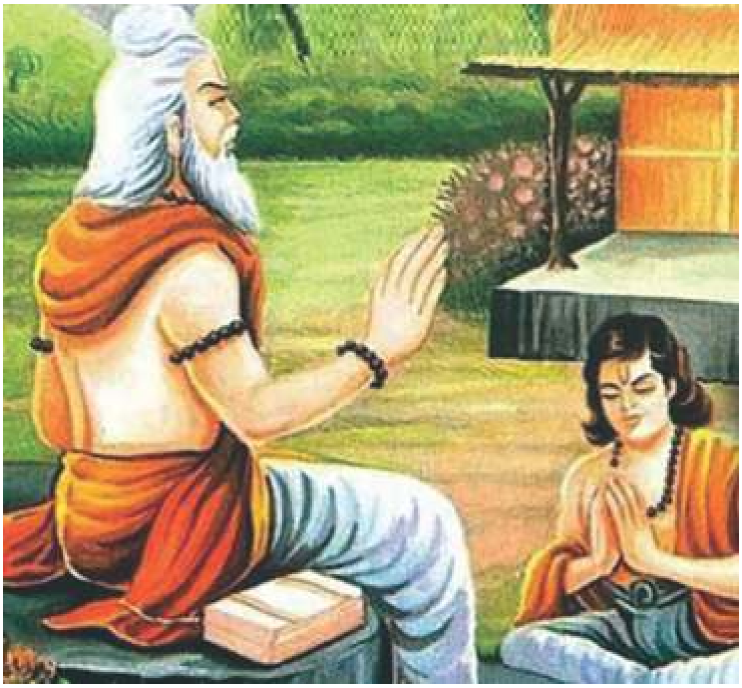

गुरू-शिष्य संबंध संयोग मात्र भी है और एक होशपूर्ण चुनाव भी। यह दोनों है। जहां तक गुरू का सवाल है, यह पूर्णतः होशपूर्ण चुनाव है। जहां तक शिष्य का प्रश्न है, यह संयोग ही हो सकता है, क्योंकि अभी होश उसके पास है ही नहीं।

मिस्त्र के रहस्यवादी कहते हैं- जब शिष्य तैयार हो जाता है तो गुरु प्रकट हो जाता है। गुरु के लिए तो यह पूरी तरह से एक होशपूर्ण बात है। एक सूफी कहानी इसे समझने में हमारी सहायता करेगी।

सत्य को जानने की गहन अभीप्सा में एक नवयुवक ने अपने समाज परिवार को त्याग दिया और गुरु की खोज में निकला। जब वह नगर के बाहर निकल रहा था, तभी उसने एक वृद्ध को देखा। उसकी आयु लगभग साठ वर्ष होगी। वह एक वृक्ष के नीचे बैठा था। वह इतना शांत, आनंदित, चुंबकीय आर्कषण वाला था कि युवक अपने आप उसकी ओर खिंचा चला गया। वह उसके समीप पहुंच कर बोला, 'मैं एक गुरु की तलाश में हूं। मैं आपके ज्ञान की सुगंध को अनुभव कर सकता हूं। शायद आप मुझे बता सकेंगे कि मुझे कहां जाना चाहिए व गुरु की कसौटी क्या है... मैं यह कैसे निश्चय करूंगा कि यही मेरा गुरु है ?'

उस वृद्ध ने कहा कि यह तो बहुत सरल है, और उसने विस्तारपूर्वक बिल्कुल ठीक-ठीक वर्णन कर दिया कि वह व्यक्ति कैसा होगा, किस तरह का वातावरण उसके आसपास होगा, वह कितनी आयु का होगा। यहां तक कि वह कौन से वृक्ष के नीचे बैठा मिलेगा, यह भी बता दिया। युवक ने उस वृद्ध को धन्यवाद दिया। वृद्ध ने कहा, 'मुझे धन्यवाद देने का समय अभी नहीं आया है। मैं धन्यवाद की प्रतीक्षा करूंगा।'

तीस साल तक रेगिस्तानों, जंगलों और पहाड़ों में गुरु की तलाश करता रहा, पर वे कसौटियां कभी भी पूरी न हो सकी। थक कर, पूरी तरह से निराश होकर वह अपने गांव वापस लौटा। अब वह जवान न था। जब वह घर छोड़ कर गया था, उसकी आयु तीस वर्ष के लगभग थी। अब वह करीब साठ वर्ष का हो गया था। पर जैसे ही वह अपने गृहनगर में प्रवेश करने को था, उसने उसी वृद्ध को वृक्ष के नीचे बैठा हुआ देखा। वह अपनी आंखों पर विश्वास ही न कर सहा। उसने कहा, 'हे भगवान, इसी आदमी का तो उसने वर्णन किया था। उसने यह तक कहा था कि वह नब्बे साल का होगा... यही तो वह वृद्ध है। मैं कितना बेहोश रहा होऊंगा कि मैंने उस वृक्ष को भी नहीं देखा, जिसके नीचे वह बैठा हुआ था। और वह सुगंध, जिसका उसने जिक्र किया था। वह दीप्ति वह उपस्थिति, वह उसके चारों ओर की जीवंतता...'

वह उसके पैरों पर गिर पड़ा और उसने कहा, 'यह कैसा मजाक है ? तीस साल तक मैं भटकता रहा और आप सब जानते थे।' उस वृद्ध पुरूष ने कहा, 'मेरे जानने से क्या अंतर पड़ता है। सवाल यह है कि क्या तुम जानते थे ? मैंने तो इसका एकदम ठीक-ठीक वर्णन कर दिया था, पर फिर भी भटकना पड़ा। केवल इस तीस साल के संघर्ष के बाद ही तुममें थोड़ा-सा होश आया है। उस दिन तुमने मुझे धन्यवाद देना चाहा था और मैंने तुमसे कहा था कि अभी समय नहीं आया है, एक दिन आएगा। तुम उसी दिन मुझे चुन सकते थे, लेकिन तुम्हारा भी दोष नहीं, तुम्हारे पास वे आंखें ही न थीं। तुमने मेरे शब्द तो सुने, पर तुम उनका अर्थ न समझ सके। मैं तुम्हारे सामने अपना ही वर्णन कर रहा था, पर तुम मेरी खोज कहीं और करने की सोच रहे थे।'

शिष्य गुरु को केवल संयोग से ही पाता है, वह चलता है, गिरता है, फिर-फिर उठकर खड़ा होता है। धीरे-धीरे थोड़ी-थोड़ी जागरुकता उसमें आती जाती है। जहां तक गुरु का संबंध है, वह कुछ विशेष लोगों की होशपूर्वक प्रतीक्षा कर रहा होता है। वह उन लोगों तक पहुंचने का हरसंभव प्रयत्न भी करता है, लेकिन कठिनाई यह है कि वे सभी बेहोश हैं। गुरु अस्तित्व को, जीवन को अधिक विस्तृत करता है, लेकिन ज्ञान को नहीं। वह तो एक बीज देता है... और हम भूमि बन कर उस बीज को अंकुरित होने, पनपने व खिलने का माध्यम बन जाते हैं।

बुद्धि विनय त्याग

MAHARISHI DADHICHI SECONDARY SCHOOL

Chitrakoot Nagar Bhuwana,

25th Year Started Established in 2000

Best Board Result

- ☑ **All Round Development of Students.**
- ☑ **Extra curricular activities like Yoga and Zumba and Dance.**
- ☑ **Extra classes for weak students.**

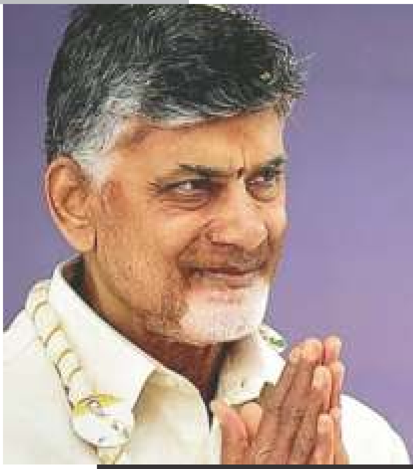

ओडिशा में 24 साल बाद बदलाव की बयार

आंध्र में भी परिवर्तन, एन. चंद्रबाबू ने चौथी बार संभाली कमान

सनत जोशी

हाल ही में सम्पन्न आम चुनावों में मतदाताओं ने जहां केन्द्र में नरेन्द्र मोदी को तीसरी बार नेतृत्व दिया है, वहीं विपक्ष को पूर्वापेक्षा अधिक मज़बूत बना दिया है। ओडिशा में 24 वर्ष बाद सत्ता को पलट नया इतिहास लिख दिया तो ओडिशा में वाईएसआर कांग्रेस के जगन मोहन रेड्डी को दूसरे कार्यकाल का अवसर नहीं देकर तीन बार मुख्यमंत्री रहे नारा चन्द्रबाबू नायडू को फिर से प्रदेश की कमान सौंप कर उन्हे प्रदेश की नई राजधानी के विकास का अपना संकल्प पूरा करने का अवसर दे दिया है।

ओडिशा में चौबीस वर्ष बाद किसी दूसरे दल की सरकार बनी है। पिछले पांच विधानसभा चुनावों में से बीजू जनता दल ही लगातार सत्ता में बनी हुई थी। इस बार भाजपा बीजद से अलग होकर स्वतंत्र चुनाव लड़ी और सत्ता में पहुंच गई। यह निस्संदेह वहां के लोगों की बदलाव की आकांक्षा का ही प्रतिफल है। इस तरह भाजपा को भी पूरब में अपनी जगह बनाने का मौका मिला है। पहली बार ओडिशा में उसकी सरकार बनी है। नए मुख्यमंत्री के रूप में आदिवासी समाज के मोहन चरण माझी को राज्य की कमान सौंपी गई है। राज्य में दो उपमुख्यमंत्री बनाए गए हैं।

माझी के साथ एक अच्छी बात यह है कि केंद्र में भी उनकी पार्टी की सरकार हे, इसलिए योजनाओं और नीतियों के क्रियान्वयन में किसी अड़चन की गुंजाइश नहीं रहेगी। हालांकि मुख्यमंत्री पद के लम्बे कार्यकाल से निवृत्त हुए नवीन पटनायक के भी केंद्र सरकार के साथ रिश्ते कभी कड़वे नहीं रहे। उन्होंने ओडिशा को बीमारू प्रदेशों की श्रेणी से बाहर निकालने, वहां के लोगों की गरीबी दूर करने, शिक्षा और चिकित्सा आदि के क्षेत्र में बेहतरी

जगन मोहन रेड्डी

नवीन पटनायक

पवन कल्याण

नारा लोकेश

कनकवर्धन सिंह देव

प्रभाती परिदा

के लिए जो विकास परिजनाएं चलाईं और प्रदेश का विकास किया, उसकी सभी सराहना करते हैं। मगर विकास परियोजनाओं के चलते नियमगिरी जैसे कुछ इलाकों के आदिवासियों की जमीन अधिग्रहण को लेकर जो नाराजगी देखी जा रही थी, उन्हें जरूर माझी सरकार से काफी उम्मीदें हैं।

एन चंद्रबाबू नायडू ने चौथी बार आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री पद की शपथ लेकर एक नए दौर की शुरुआत की। आंध्र प्रदेश में तेलुगु देशम पार्टी के नेतृत्व में भाजपा की सहयोगी भूमिका से गठबंधन सरकार बनी है। चंद्रबाबू नायडू भारत में सूचना-प्रौद्योगिकी के नाम पर पहचान रखने वाले नेता हैं। मुख्यमंत्री के रूप में जब उन्हें मौका मिला, तो उन्होंने हैदराबाद को 'आईटी हब' के रूप में बदल दिया। नई राजधानी का निमार्ण एक बड़ी योजना है, उसे ईमानदार हाथों से पूरा होना चाहिए। जनता ने उन पर भरोसा जताया है और इस भरोसे को कायम रखना उनकी जिम्मेदारी है। चंद्रबाबू अमरावती में राजधानी बनाने की योजना पर वह बेशक काम करें, पर उन्हें रोजगार और प्रदेश के बुनियादी विकास के लिए ज्यादा सोचना होगा। नए मंत्रिमंडल में तेदेपा के 21 विधायकों, जन सेना के तीन और भाजपा के एक विधायक को शपथ दिलाई गई है। पहली बार चुनाव जीते लोकप्रिय अभिनेता पवन कल्याण ने भी सहर्ष उपमुख्यमंत्री मंत्री पद स्वीकार किया है, जिससे कला क्षेत्र में भी हलचल है। उनकी पार्टी जनसेना ने 21 सीटों पर जीत दर्ज की है। वैसे चंद्रबाबू नायडू भी महान अभिनेता एनटी रामाराव की विरासत ही संभाल रहे हैं। नायडू की राजनैतिक यात्रा 1987 में एक जूनियर मंत्री के रूप में शुरू हुई। इसमें कई उतार-चढ़ाव आए पर नायडू ने हार नहीं मानी। उन्होंने चुनाव के दौर 2024 के चुनाव को अपना अन्तिम चुनाव कहा था। वे पिछले कुछ वर्षों से अपने बेटे लोकेश को अपना उत्तराधिकारी बनाने की तैयारी कर रहे थे। इस बार विधान सभा लोकेश जीते भी और मंत्री भी बनाए गए हैं।

HYUNDAI

VERNA

EXTER

Royale Hyundai

15-A, Transport Nagar, Goverdhan Vilas,
Near Bypass, Udaipur - 313001
Mob.: 8560005252, 9782985551
Email: sales@royalehyundai.com
Website: http://royale.hyundaimotor.in

मोदी सरकार तीसरी बार : विपक्ष भी तीखी धार

मनीष उपाध्याय

पूरे आत्मविश्वास के साथ नरेंद्र मोदी ने 9 जून को लगातार तीसरी बार प्रधानमंत्री पद की शपथ ली। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने उन्हें पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई। राष्ट्रपति भवन के प्रांगण में आयोजित समारोह में प्रधानमंत्री सहित कुल 72 सदस्यों ने शपथ ली। इनमें 30 कैबिनेट मंत्री, पांच राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) और 36 राज्यमंत्री शामिल हैं। पंडित जवाहर लाल नेहरू के बाद लगातार तीसरी बार प्रधानमंत्री पद की शपथ लेकर मोदी ने इतिहास तो रचा है। लेकिन उन्हें 370 पार न जाने का सदमा सालता रहेगा।

जदयू-तेद्रेपा से दो-दो मंत्री : नई मंत्रिपरिषद में घटक दल जदयू से राजीव रंजन सिंह उर्फ लल्लन सिंह को कैबिनेट मंत्री जबकि रामनाथ ठाकुर को राज्यमंत्री बनाया गया। लोकजनशक्ति पार्टी (रामविलास)से चिराग पासवान कैबिनेट मंत्री हैं। वहीं, तेदेपा से के. राममोहन नायडू कैबिनेट और चंद्रशेखर पेम्मासानी राज्य मंत्री बनाए गए हैं। जद-एस से एचडी कुमार स्वामी को मंत्री बनाया गया है।

दिल्ली से सिर्फ हर्ष मल्होत्रा : मंत्रिमंडल में दिल्ली से सिर्फ हर्ष मल्होत्रा को जगह मिल सकी। दिल्ली की सभी 7 सीटें भाजपा ने जीती हैं। उत्तर प्रदेश से दस मंत्री शामिल किए गए जिनमें तीन चेहरे नए हैं। सरकार में एलसीपी (अजीत पवार) शामिल नहीं हुई है। महाराष्ट्र में उपमुख्यमंत्री अजित पवार ने कहा, फिलहाल वह कैबिनेट में शामिल नहीं हो रहे हैं। वहीं, प्रफुल्ल पटेल ने कहा कि उन्हें राज्यमंत्री स्वतंत्र प्रभार के लिए सूचना मिली थी, लेकिन वह पहले कैबिनेट मंत्री रहे हैं। इसलिए, उन्होंने इसे अस्वीकार कर दिया। इस चुनाव में देश को मजबूत विपक्ष मिला है। नीतियों को लागू कराने के दौरान सरकार को विपक्ष को साथ लेकर चलना होगा। सत्ता और विपक्ष - दोनों के लिए आगे का रास्ता अवसरवादी जोड़-तोड़ की राजनीति नहीं, बल्कि आम लोगों की उम्मीदों और संघर्षों में निहित राजनीति होनी चाहिए। गठबंधन सहयोगियों की राज्य स्तरीय राजनीति के नजरिए से देखा जाए तो कम से कम अगले चरण के विधानसभा चुनावों तक तस्वीर मोदी के पक्ष में है। देश में बीते तीन दशकों के आर्थिक उदारीकरण के दौर में लोगों की आकांक्षाओं में वृद्धि हुई है। बीते 10 वर्षों में मोदी सरकार के कार्यक्रमों ने इस वास्तविकता को स्वीकार किया है। विकसित भारत का नारा लोगों के सामने है। लेकिन यह हकीकत भी है कि बुनियादी ढांचे के निर्माण, नए रोजगार पैदा करने, कौशल विकास और लोगों के जीवन स्तर को बेहतर करने जैसे काम अभी शुरू ही हुए हैं। कई मोर्चों पर नीतियां अभी तय हुई हैं। जाहिर है, सामाजिक और आर्थिक चुनौतियां बड़ी हैं। सरकार ने भारतीय अर्थव्यवस्था के अधिकांश बड़ी वैश्विक अर्थव्यवस्थाओं की तुलना में तेजी से बढ़ने की बात रखी है।

विदेशी मेहमान

नया खिवैया कौन?

भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जगत प्रकाश (63) नड्डा के मंत्रिमंडल में शामिल होने से अब पार्टी को नया अध्यक्ष मिलेगा और संगठन में भी व्यापक तौर पर फेरबदल होगा। नड्डा ने 2019 के लोकसभा चुनावों के बाद पार्टी प्रमुख के रूप में कार्यभार संभालने से पहले मोदी सरकार में 2014-19 तक केंद्रीय स्वास्थ्य और परिवार कल्याण के रूप में कार्य किया था। वे जनवरी 2020 से अध्यक्ष के रूप में कार्य कर रहे थे। उनका पार्टी अध्यक्ष के रूप में कार्यकाल इस साल जनवरी में ही खत्म हो चुका था लेकिन लोकसभा चुनावों के मद्देनजर उन्हें जून तक का विस्तार दिया गया था। चुनाव से पहले बतौर अध्यक्ष मध्य प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान, हरियाणा के पूर्व मुख्यमंत्री मनोहर लाल खट्टर, उड़ीसा के धर्मेंद्र प्रधान और राजस्थान के भूपेंद्र यादव का नाम लिया जा रहा था लेकिन ये सभी मोदी सरकार के मंत्रिमंडल में शामिल किए गए हैं। इसलिए अब इस तरह की अटकलों पर विराम लग गया है। अब महाराष्ट्र के विनोद तावड़े व यूपी के सुनील बंसल का नाम चर्चा में है। देखना यह है कि इनमें से किसके नाम छींका फूटता है, या फिर कोई तीसरा ही ?

राहुल ने सीट छोड़ी, वायनाड से लड़ेगी प्रियंका

लोकसभा चुनाव में 2 सीट से जीत दर्ज करने के बाद कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी ने रायबरेली सीट से सांसद रहने का फैसला किया है। केरल की वायनाड सीट से उन्होंने इस्तीफा दे दिया। वायनाड से अब उनकी बहिन और पार्टी महासचिव प्रियंका गांधी वाड्रा चुनाव लड़ेगी। राहुल गांधी ने सीट छोड़ने का फैसला कांग्रेस संसदीय दल की अध्यक्ष और उनकी माँ सोनिया गांधी तथा पार्टी अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे से मिलने के बाद किया।

'मैं इस बात से बहुत खुश हूं कि मुझे वायनाड का प्रतिनिधित्व करने का अवसर दिया जा रहा है, मैं राहुल गांधी की कमी खलने नहीं दूंगी। पूरी महनत से काम करूंगी।'

*–**प्रियंका गांधी**, कांग्रेस महासचिव*

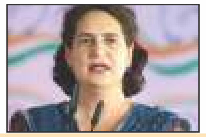

केबिनेट मंत्री

- राजनाथ सिंह – रक्षा
- अमित शाह – गृह, सहकारिता
- नितिन गडकरी – सड़क परिवहन
- जेपी नड्डा – स्वास्थ्य, केमिकल एवं फर्टिलाइजर
- शिवराज सिंह चौहान – कृषि एवं ग्रामीण विकास
- निर्मला सीतारमण – वित्त एवं कॉरपोरेट
- एस जयशंकर – विदेश
- मनोहर लाल खट्टर – ऊर्जा एवं शहरी विकास
- एचडी कुमारस्वामी – भारी उद्योग एवं इस्पात
- पीयूष गोयल – वाणिज्य
- धर्मेंद्र प्रधान – शिक्षा
- जीतन राम मांझी – लघु उद्योग
- राजीव रंजन उर्फ ललन सिंह – पंचायती राज
- सर्बानंद सोनेवाल – जहाजरानी एवं जलमार्ग
- के. राममोहन नायडू – नागरिक उड्डयन
- डॉ. वीरेंद्र कुमार – सामाजिक कल्याण एवं अधिकारिता
- जुएनल ओरांव – जनजातीय कार्य
- प्रल्हाद जोशी – उपभोक्ता मंत्रालय एवं अक्षय ऊर्जा
- अश्विनी वैष्णव – रेल, सूचना एवं प्रसारण
- गिरिराज सिंह – कपड़ा
- ज्योतिरादित्य सिंधिया – दूरसंचार
- भूपेंद्र यादव – पर्यावरण एवं वन
- गजेंद्र सिंह शेखावत – पर्यटन एवं संस्कृति
- किरेन रिजिजू – संसदीय कार्य एवं अल्पसंख्यक कल्याण
- अन्नपूर्णा देवी – महिला एवं बाल विकास
- मनसुख मांडविया – श्रम, युवा एवं खेल
- हरदीप सिंह पुरी – पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस
- जी. किशन रेड्डी – कोयला एवं खनन
- चिराग पासवान – खाद्य प्रसंस्करण
- सीआर पाटिल – जलशक्ति

राज्यमंत्री स्वतंत्र प्रभार

- राव इंद्रजीत सिंह – सांख्यिकी एवं योजना
- जितेंद्र सिंह – विज्ञान, तकनीक और भूविज्ञान
- अर्जुन राम मेघवाल – कानून,न्याय एवं संसदीय कार्य
- प्रतापराव जाधव – आयुष, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण
- जयंत चौधरी – स्किल डिवेलपमेंट, शिक्षा

राज्यमंत्री

- जितिन प्रसाद – इस्पात एवं वाणिज्य
- श्रीपद नाइक – ऊर्जा एवं अक्षय ऊर्जा
- पंकज चौधरी – वित्त
- कृष्णपाल गुर्जर – सहकारिता
- रामदास आठवले – सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता
- रामनाथ ठाकुर – कृषि एवं किसान कल्याण
- नित्यानंद राय – गृह
- अनुप्रिया पटेल – स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण
- चंद्रशेखर पेम्मासानी – ग्रामीण विकास
- एसपी सिंह बघेल – पंचायती राज, मत्स्य एवं पशुपालन
- वी. सोमन्ना – जलशक्ति एवं रेल
- शोभा करंदलाजे – लघु उद्योग एवं श्रम
- कीर्तिवर्धन सिंह – विदेश, वन एवं पर्यावरण
- बीएल वर्मा – उपभोक्ता
- शांतनु ठाकुर – जहाजरानी एवं जलमार्ग
- कमलेश पासवान – ग्रामीण विकास
- बंडी संजय कुमार – गृह
- अजय टम्टा – सड़क परिवहन
- डॉ. एल मुरूगन – सूचना प्रसारण एवं संसदीय कार्य
- सुरेश गोपी – पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस
- रवनीत सिंह बिट्टू – खाद्य प्रसंस्करण एवं रेल
- संजय सेठ – रक्षा
- रक्षा खडसे – युवा एवं खेल
- भागीरथ चौधरी – कृषि एवं किसान कल्याण
- सतीश चंद्र दुबे – कोयला और खनन
- दुर्गादास उइके – जनजातीय कार्य
- सुकांत मजूमदार – शिक्षा एवं पूर्वोत्तर विकास
- सावित्रि ठाकुर – महिला एवं बाल विकास
- तोखन साहू – शहरी विकास
- राजभूषण चौधरी – जलशक्ति
- भूपति राजू श्रीनिवास वर्मा – भारी उद्योग एवं इह्यपात
- हर्ष मल्होत्रा – सड़क परिवहन
- निमूबेन बम्भानिया – उपभोक्ता मामले
- मुरलीधर मोहोल – सहकारिता एवं नागरिक उड्डयन
- जॉर्ज कुरियन – अल्पसंख्यक कल्याण एवं पशुपालन
- पबित्र मार्गेरिटा – विदेश एवं कपड़ा

हम सभी 140 करोड़ देशवासियों का जीवन बेहतर बनाने में कोई कोर-कसर बाकी नहीं रखेंगे।
-नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री

यूसीसीआईः लुणावत अध्यक्ष निर्वाचित

गलुण्डिया वरिष्ठ उपाध्यक्ष व हिंगड़ उपाध्यक्ष बने

उदयपुर। उदयपुर चैम्बर ऑफ कॉमर्स एण्ड इंडस्ट्रीज (यूसीसीआई) की पिछले माह हुई साधारण सभा की वार्षिक बैठक में अध्यक्ष सहित निर्विरोध चुने गए पदाधिकारियों के नामों की घोषणा की गई एवं उपाध्यक्ष पद के लिए ऑनलाइन वोटिंग के परिणाम की घोषणा की गई। अरावली मिनरल्स एंड केमिकल इंडस्ट्रीज के मांगीलाल लुणावत को सत्र 2024-25 के लिए अध्यक्ष चुना गया। वरिष्ठ उपाध्यक्ष पद पर होटल गोरबंध के मनीष गलुण्डिया चुने गए। चुनाव अधिकारी बीआर भाटी ने बताया कि ये चुनाव निर्विरोध संपन्न हुए। जबकि उपाध्यक्ष पद के लिए हुई ऑनलाइन वोटिंग में मैसर्स हिंगड़ एण्ड एसोसिएट्स के प्रतीक हिंगड़ विजयी घोषित किए गए। उन्होंने उमेश मनवानी को पराजित किया। बैठक की शुरुआत में निवर्तमान अध्यक्ष संजय सिंघल ने वर्ष 2023-24 की उपलब्धियों का ब्यौरा प्रस्तुत किया। कार्यकारिणी सदस्य के रूप में बड़े एवं मध्यम उपक्रम श्रेणी में राजेन्द्र कुमार हेड़ा, लघु एवं

माइक्रो उपक्रम श्रेणी में अरविंद मेहता, हितेष पटेल, राजेश खमेसरा, शालीन हरलालका तथा ट्रेडर्स (व्यापारी) वर्ग में राकेश माहेश्वरी का निर्विरोध निर्वाचन हुआ। प्रोफेशनल्स तथा शैक्षणिक संस्थान वर्ग में डॉ. अशोक जेतावत, हेमंत मेहता, मेम्बर बॉडीज एवं एसोसिएशन वर्ग में गुडली चेम्बर ऑफ कॉमर्स एण्ड इंडस्ट्रीज के अचल अग्रवाल, उदयपुर मार्बल प्रोसेसर्स समिति के कपिल सुराणा एवं मार्बल गैंगसॉ एसोसिएशन राजसमंद के रवि शर्मा निर्विरोध निर्वाचित हुए। पूर्व अध्यक्ष श्रेणी से रमेश चौधरी, रमेश कुमार सिंघवी सदस्य बने। संजय सिंघल निवर्तमान अध्यक्ष की हैसियत से कार्यकारिणी के सदस्य रहेंगे। कार्यकारिणी समिति की पहली बैठक पायरोटेक टेम्पसन्स सभागार में हुई। जिसमें पवन तलेसरा को मानद महासचिव व अभिनंदन कारवा को मानद कोषाध्यक्ष मनोनीत किया गया। बडे एवं मध्यम उपक्रम वर्ग में किशोर चौकसी, केजी गुप्ता, बीएल डागलिया, अनिल मिश्रा का निर्वाचन किया गया। लघु एवं माइक्रो उपक्रम वर्ग में शुभम तायलिया, कमलेश जारोली, केजार अली कुराबड़वाला, अमित तलेसरा, सौरभ मोदी, उमेश नागौरी का सर्वसम्मति से निर्वाचन किया गया। सेवा उपक्रम वर्ग में डॉ. नरेन्द्र धींग, अंकित सिसोदिया, राजेश कटारिया, रूचिका गांधी का निर्वाचन किया गया। व्यापार एवं अन्य उपक्रम वर्ग में अब्बास अली बंदूक वाला, प्रकाशचंद्र बोलिया, प्रतीक नाहर और महिला सदस्य वर्ग में श्वेता दुबे, हसीना चक्कीवाला का निर्वाचन किया गया।

राजसमंद में मेधावी विद्यार्थियों का सम्मान

राजसमंद। किरण माहेश्वरी स्मृति मंच की ओर से गत दिनों भिक्षु निलयम् में मेधावी छात्र-छात्राओं को राइजिंग स्टार्स ऑफ राजसमंद समारोह में सम्मानित किया गया। मुख्य अतिथि सहकारिता राज्यमंत्री गौतम दक ने पूर्व विधायक किरण माहेश्वरी को याद करते हुए कहा कि उनके सभापति काल में उदयपुर शहर ने विकास के नए आयाम तय किए। गीतांजलि मेडिकल विश्वविद्यालय के मानव संसाधन प्रमुख डॉ. पी.के. जैन ने विद्यार्थियों से कहा कि सफलता की राह में सबसे बड़ी बाधा तनाव है। इससे दूर रहें। किरण माहेश्वरी स्मृति मंच की संयोजिका एवं क्षेत्रीय विधायक दीप्ति किरण माहेश्वरी ने कहा कि विद्यार्थियों की सफलता में माता-पिता, अभिभावकों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। उन्होंने बताया कि उन्हें इस मुकाम तक लाने में मां किरणजी एवं पिता सत्यनारायणजी का बड़ा योगदान है। समारोह में 78 विद्यालयों के 10वीं व 12वीं में 80 प्रतिशत व उससे अधिक लाने वालों को लेपटॉप व प्रमाण पत्र प्रदान किए गए।

टोयोटा किर्लोस्कर मोटर ऑल न्यू अर्बन क्रूजर टाइजर लॉन्च

उदयपुर। टोयोटा किर्लोसकर मोटर ने उदयपुर में अधिकृत डीलर राजेन्द्र टोयाटा पर एसयूवी के नए सेगमेंट अर्बन क्रूजर टाइजर का अनावरण किया। सिंधी भाषा अकादमी के पूर्व अध्यक्ष हरीश राजानी, राजेन्द्र टोयोटा के मैजेजिंग डायरेक्टर तनय गोयनका एवं निदेशक विनयदीप सिंह कुशवाह ने अनावरण किया। इस अवसर पर विनयदीप सिंह कुशवाह ने बताया कि यह गाड़ी एक पावर पैक प्रदर्शन, सर्वोत्तम श्रेणी की ईंधन दक्षता और एक एक्सटेरियर का संयोजन है। यह एक आधुनिक स्टायलिंग, अति आधुनिक सुविधाओं और उन्नत प्रौद्योगिकी का मिश्रण है। यह पेट्रोल और सीएनजी दो वेरिएंट में लॉन्च की है। इसमें 6 एयर बैग, हिल होल्ड असिस्ट हेड अप डिस्प्ले, 360 डिग्री व्यू कैमरा, वायरलेस चार्जर और वायरलेस एप्पल कार प्ले और एंड्रॉइड ऑटो कनेक्टिविटी के साथ स्मार्ट प्लेकास्ट इंफोटेनमेंट सिस्टम जैसी आधुनिक सुविधाएं हैं।

लूणावत अध्यक्ष, तलेसरा उपाध्यक्ष

उदयपुर। भारतीय उद्योग परिसंघ (सीआईआई) उदयपुर जोन के वार्षिक सत्र में वर्ष 2024-25 के लिए सुनील लुणावत को राजस्थान उदयपुर जोन का अध्यक्ष तथा अमित तलेसरा को सीआईआई उदयपुर जोन का उपाध्यक्ष नियुक्त किया है।

कुलपति प्रो. सारंगदेवोत का अभिनंदन

उदयपुर। जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ डीम्ड टू बी विश्वविद्यालय के कुलपति कर्नल प्रो. एसएस सारंगदेवोत के कुलपति पद पर सफलता पूर्व के 12 वर्ष पूर्ण करने पर शहर के सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक संगठनों एवं विद्यापीठ के कार्यकर्ताओं ने अभिनंदन किया। इस अवसर पर प्रो. सारंगदेवोत ने कहा कि विपरीत परिस्थितियों में 2012 में कुलपति का पदभार ग्रहण किया। पिछले 12 वर्षों से विद्यापीठ के शुभचिंतकों व समर्पित एवं निष्ठावान कार्यकर्ताओं की बदौलत आज संस्था देश ही नहीं विदेशी पटल पर अपनी अग्रणी भूमिका निर्वहन कर रहा है। इस अवसर पर एमपीयूएटी कुलपति प्रो. अजितकुमार कर्नाटक, कुल प्रमुख बीएल गुर्जर, पीठ स्थविर डॉ. कौशल नागदा, रजिस्ट्रार डॉ. तरूण श्रीमाली, डॉ. पारस जैन ने माला पहनाकर स्वागत किया।

संस्कृत शोधार्थियों का कौशल विकास कार्यक्रम

उदयपुर। केन्द्रीय संस्कृति विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों के लिए कौशल विकास स्किल डवलपमंट के कार्यक्रम की शुरुआत होने जा रही है। प्रतिवर्ष विद्यार्थियों के होने वाले इस कौशल विकास के कार्यक्रम के लिए गत दिनों एक अनुबंध पर हस्ताक्षर हुए। एमओयू पर धरोहर संस्थान के संस्थापक संजय सिंघल और केन्द्रीय संस्कृति विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. श्रीनिवास वाखेंडी ने हस्ताक्षर किए। यह कार्यक्रम 42 दिन का होगा। संजय सिंघल ने बताया कि इस इंटर्नशिप प्रोग्राम के जरिये विद्यार्थी प्राचीन पांडुलिपियों के संग्रहण का कार्य सीखेंगे, उसके बारे में जानेंगे और समझेंगे। इसके जरिये अपने जीवन कौशल के भविष्य की तस्वीर यहां से तैयार होगी, जो

इस ज्ञान के जरिए उनके जीवन में बहुत काम आएगी। इस 42 दिवसीय इंटर्नशिप कार्यक्रम में केन्द्रीय संस्कृति विश्वविद्यालय की विभिन्न शाखाओं से 25 विद्यार्थी अपनी शैक्षणिक योग्यता का समुचित प्रयोग करते हुए धरोहर द्वारा किए जा रहे प्राचीन पांडुलिपियों के संग्रहण का कार्य सीखेंगे। धरोहर संस्थान को सिक्योर मीटर्स का सहयोग प्राप्त है। इस संस्था का उद्देश्य जीवन पर्यंत सीखने की इच्छा रखने वाले लोगों का एक समाज बनाने का है। संस्थान की टीम इस विश्वास पर काम करती हैं कि जब हम समाज के लिए कुछ करते हैं तो हम सीखते हैं और बढ़ते हैं। कोई क्या सीख सकता है उसके लिए उम्र कोई बाधा नहीं होती। धरोहर के तीन कार्य क्षेत्र प्रमुख है जिसमें 10 लाख वृक्ष कार्यक्रम एक है। इसके तहत उदयपुर में वन क्षेत्र का विकास सार्वजनिक उद्यानों का रखरखाव शामिल है।

अशोक जैन, डायरेक्टर
9414621335

हार्दिक शुभकामनाओं सहित

आयुष जैन, डायरेक्टर
8290147134

सुदर्शन सीडकेम
(बीज भण्डार)

सब्जियों के हाईब्रीड एवं उन्नत बीज, कीटनाशक दवाइयों, चारे के बीज, स्प्रे मशीन, हाईब्रीड मक्का, सरसों, गेहूं बीज, जैविक खाद, बागवानी उपकरण थोक भाव के विक्रेता।

4–बी, सबसिटी सेंटर, सब्जी मण्डी गेट के सामने,
सवीना, उदयपुर (राज.)
फोन: 0294–2485029, 94146–21335

गुलाबों से महकाएं बगिया

डॉ. आशीष श्रीवास्तव

गुलाब के फूल हर घर की बगिया में मिल ही जाते हैं। इनकी ख़ास बात ये है कि इन्हें बीज और कलम, दोनों तरीकों से लगाया जा सकता है। परंतु, समस्या तब होती है जब ये न खिलते हैं और न बढ़ते हैं। हालांकि, शुरुआत में तो ख़ूब फूल खिलते हैं, परंतु धीरे-धीरे ये छोटे होते जाते हैं या फिर कलियां नहीं आतीं। गुलाब को भले अन्य फूलों के मुकाबले कम देखभाल की आवश्यकता होती है, लेकिन ख़याल तो इसका भी रखना पड़ता है।

यह भी ध्यान रखें...

कटाई – छंटाई भी करें: *गुलाब की कटाई-छंटाई से पौधे आकर्षक हो जाते हैं। पौधों में नई पत्तियां और शाखाएं आने लगती हैं व अधिक फूल खिलते हैं। छंटाई के दौरान पौधों की रोग ग्रसित पत्तियों, शाखाओं और पतली या कमज़ोर टहनियों को हटा दें। समय-समय पर कटाई-छंटाई करते रहें, इससे पौधों में कीड़े नहीं लगेंगे और पौधे बीमार भी नहीं पड़ेंगे।*

सर्दियों में सहेजें: *सर्दियों में गुलाब के पौधों को अधिक ठंड से बचाने के लिए इनका स्थान बदल दें। यदि पौधा गमले में लगा है, तो अधिक ठंडी हवाओं से बचाने के लिए पौधे को घर के अंदर खिड़की के सामने रख दें ताकि पर्याप्त मात्रा में धूप मिलती रहे। यदि पौधा ज़मीन पर लगा है तो प्लास्टिक कवर से ढककर भी ठंडी हवाओं से सुरक्षा प्रदान कर सकते हैं।*

बीमारियों से बचाएं : *गुलाब के पौधे में माहू, बीटल, मकड़ी और काला धब्बा व भभूतिया रोगों / कीटों का प्रकोप रहता है। कीटों के नियंत्रण के लिए 3.0 मिली नीम का तेल और बीमारियों से बचाने के लिए 5.0 ग्राम ट्राइकोडर्मा या गोमूत्र 3.0 मीली मात्रा प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।*

चाहिए अधिक पानी

अन्य फूलों की अपेक्षा गुलाब को अच्छी तरह बढ़ने के लिए अधिक पानी की आवश्यकता होती है। गुलाब की जड़ें मोटी होती हैं, इसलिए इन्हें अधिक पानी की जरूरत होती है। पानी सीधा गमले की मिट्टी में डालें, पत्तियों को गीला न करें, अन्यथा इससे पौधे में फफूंद लग सकती है। सर्दियों में पौधे को रोज़ पानी दें। ध्यान रहे पानी सुबह या शाम के वक़्त ही देना उचित है। वहीं, हाईब्रिड पौधे को तीन-चार दिन में एक बार ही पानी दें।

धूप भी ज़रूरी है

गुलाब के पौधें की अच्छी बढ़वार के लिए रोज़ 6 से 8 घंटे की धूप की आवश्यकता होती है। पर्याप्त धूप न मिलने से पत्तियां पीली पड़ने लगती हैं और पौधा मुरझाने लगता है। पौधा गमले में लगा है तो उसे ऐसे स्थान पर रखें जहां पर्याप्त मात्रा में धूप मिल सके। वहीं, हाईब्रिड गुलाब को भी पर्याप्त धूप चाहिए। लेकिन अगर तापमान बहुत अधिक है तो ही इसे छांव में रखें।

मिट्टी में पर्याप्त नमी

गुलाब के पौधों की बढ़वार के समय मिट्टी को गीली घास या पुआल (धान, गेहूं, जौ, राई आदि फसलों के डंठल) से ढक दें, इससे पौधे की जड़ों में नमी बनी रहेगी और खरपतवार का भी प्रकोप नहीं होगा। साथ ही, गुलाब का पौधा तेजी से बढ़ेगा।

खाद व उर्वरक

गुलाब को अधिक मात्रा में पोषक तत्वों की आवश्यकता होती है। नियमित रूप से खाद मिलने पर पौधे की बढ़वार तेज़ होगी। गुलाब के पौधे को कम से कम साल में तीन बार खाद मिलनी ही चाहिए। गोबर की खाद डालकर पौधे को हरा-भरा रख सकते हैं। इस खाद से पौधें में कीड़े नहीं लगेंगे।

गोबर की खाद को महीने में एक बार 2-3 मुट्ठी प्रति पौधे या गमले में डालें। इसके बाद जब पौधे में फूल खिलने लगें, तब अधिक खाद उर्वरक देना अच्छा होता है।

वर्मीकम्पोस्ट पौधों की बढ़वार के लिए जरूरी है, इसे 2 मुट्ठी मिट्टी की सतह पर समान रूप से डालें, सरसों की खली 1 मुट्ठी और नीम की खली 1 मुट्ठी डालें। फूल आते समय बोल मील, 10 ग्राम प्रति पौधे में दें। इसमें फॉस्फोरस काफ़ी अधिक मात्रा में पाया जाता है, साथ ही, इसमें नाइट्रोजन, कैल्शियम जैसे पोषक तत्व भी पाए जाते हैं।

(लेखक कृषि विशेषज्ञ हैं)

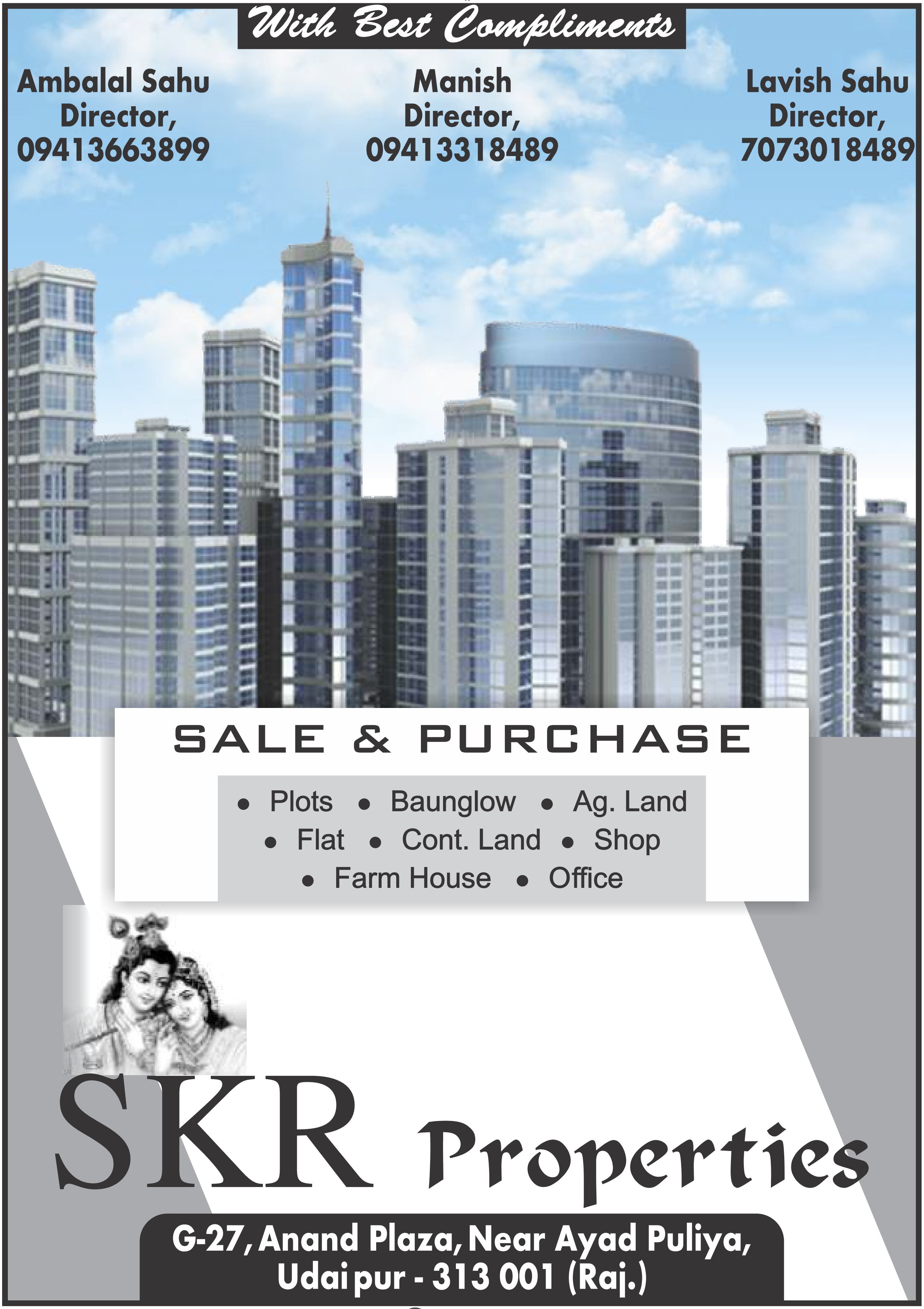
With Best Compliments
Ambalal Sahu
Director,
09413663899
Manish
Director,
09413318489
Lavish Sahu
Director,
7073018489
SALE & PURCHASE
• Plots • Baunglow • Ag. Land
• Flat • Cont. Land • Shop
• Farm House • Office
SKR Properties
G-27, Anand Plaza, Near Ayad Puliya,
Udaipur - 313 001 (Raj.)

विष्णु-शिव की आराधना का महत्वपूर्ण माह आषाढ़

सुनील द ा पांडेय

आषाढ़ मास हिंदू पंचांग का चौथा माह है। ज्योतिष शास्त्रों के अनुसार, आषाढ़ माह में चंद्रमा पूर्वाषाढ़ा और उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में अवस्थित होते हैं, इसलिए इस माह का नाम आषाढ़ माह रखा गया है। आषाढ़ मास 24 जून से आरंभ हो चुका हैं, जो 21 जुलाई को आषाढ़ी पूर्णिमा को समाप्त होगा।

आषाढ़ मास की पूर्णिमा को आषाढ़ी पूर्णिमा या व्यास पूर्णिमा भी कहते हैं। गुरु पूर्णिमा का पर्व भी इसी दिन मनाया जाता है। भारतीय संस्कृति में गुरु पूर्णिमा का विशेष महत्व है। आषाढ़ मास को ध्यान, योग चिंतन, मनन और अध्ययन के लिए उत्तम माना गया है। आषाढ़ मास का विशेष धार्मिक महत्व है। इस मास में पड़ने वाली अमावस्या और पूर्णिमा को विशेष माना गया है। पितरों को श्राद्ध और तर्पण देने के लिए आषाढ़ अमावस्या का विशेष महत्व है। इस मास के व्रत और पर्व जीवन में हर तरह की कठिनाइयों को दूर कर मनोकामनाओं को पूर्ण करते हैं। आषाढ़ मास में भगवान शिव और भगवान विष्णु की पूजा को अत्यंत शुभ और फलदायी माना गया है। इस मास में पड़ने वाले एकादशी के व्रत और प्रदोष, मासिक शिवरात्रि तथा गुप्त नवरात्रि का विशेष महत्व है, जो देवी के साधकों के लिए अति उत्तम है।

आषाढ़ में योगिनी एकादशी और देवशयनी एकादशी का व्रत अत्यंत महत्वपूर्ण बताया गया है। भगवान विष्णु की पूजा और दान पुण्य का विशेष महत्व है। इस मास को वर्षा ऋतु का माह भी कहा जाता है। इसकी गिनती सबसे पवित्र माह में होती है। यह मास भगवान श्री हरि यानी कि विष्णु को बहुत प्रिय है। इसके अलावा यह माह गुरु की पूजा के लिए भी अत्यंत लाभदायक है।

इस माह में भगवान जगदीश स्वामी की रथ यात्रा, शीतलाष्टमी, योगिनी, मासिक शिवरात्रि, गुप्त नवरात्रि, विनायक चतुर्थी, हरिशयनी एकादशी जैसे कई महत्वपूर्ण तीज त्योहार होते हैं। ज्योतिष शास्त्र में आषाढ़ माह में देवशयनी एकादशी आती है। इस दिन से देवी-देवता चार माह के लिए शयन करने चले जाते है। इसे चातुर्मास भी कहा जाता है। यानी कि चार माह तक देव विश्राम करते हैं। ऐसे में सभी मांगलिक कार्य वर्जित रहते हैं। इसके बाद चार माह बाद कार्तिक शुक्ल एकादशी को देवता शयन से जागते हैं, जिसे देवउठनी एकादशी कहा जाता है। तब मंगल कार्य शुरू होते हैं। चातुर्मास में ऋषि, मुनि, साधु-संत एक स्थान पर रहकर धार्मिक अनुष्ठान, जप, तप, व्रत आदि करते हैं। आषाढ़ मास के शुक्ल पक्ष की सप्तमी को सूर्य देव की उपासना का विशेष महत्व है।

दिव्यधाम

अयोध्या में आठ फिट के हुए 'कोविदार'

अयोध्या के राम मंदिर में 'कोविदार' के पौधे अब छह से आठ फिट के हो चुके हैं। मंदिर के लोकार्पण के दिन 21 जनवरी को इन्हें लगाया गया था। पौधे तेजी से बढ़ रहे हैं और तीन महीने में मंदिर निर्माण पूरा होते ही इनके दर्शन भी शुरू हो जाएंगे।

बनारस हिंदू विश्वविद्यालय (बीएचयू)के वैदिक विज्ञान केंद्र की सलाहकार समिति के सदस्य ललित मिश्रा ने भुला दिए गए इस ऐतिहासिक वृक्ष की दोबारा खोज की थी। उन्होंने बताया कि वाल्मीकि रामायण में अयोध्या के ध्वज पर कोविदार के वृक्ष के चिह्न का उल्लेख मिलता है। हालांकि इसके बाद विभिन्न भाषाओं में लिखी गई 300 से ज्यादा रामायणों में यह तथ्य भुला दिया गया और अयोध्या के ध्वज का जिक्र तक नहीं हुआ।

लोककथाओं के अनुसार लोगों ने कचनार को ही रघुकुल का वृक्ष मान लिया था। शास्त्रों के अलावा आयुर्वेद ग्रंथों के उद्धरण खोजने के साथ ही ललित मिश्रा ने बीएचयू के जीन वैज्ञानिक प्रो. ज्ञानेश्वर चौबे और वनस्पति विज्ञानी डॉ. अभिषेक द्विवेदी की मदद से यह साबित किया कि कचनार नहीं बल्कि कोविदार रघुकुल वृक्ष का राजचिह्न है। तथ्यों के आधार पर रामजन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र न्यास ने भी इसे स्वीकार किया।

कुबेर टीले पर लगाए गए इन वृक्षों का अभी श्रद्धालु दर्शन नहीं कर पा रहे हैं। मंदिर परिसर में निमार्ण कार्य जारी है ऐसे में श्रद्धालु वहां तक पहुंच नहीं पा रहे।

एक ही परिवार के कचनार और कोविदार

कचनार और कोविदार हैं तो एक ही परिवार (बाओहीनिया) के मगर अलग-अलग पौधे हैं। आयुर्वेद ग्रंथ 'भावप्रकाश निघंटु' सहित अन्य कई संस्कृत ग्रंथों में इसका उल्लेख है।

डॉ. अजय सिंह चुण्डावत
M.B.B.S., M.D.
एनेस्थिसियोलोजिस्ट

डॉ. (श्रीमती) कौशल चुण्डावत
M.B.B.S., DGO
स्त्री एवं प्रसूति रोग विशेषज्ञ
गायनिक, सोनोलोजिस्ट

संजीवनी हॉस्पीटल

50 बेड का मल्टी स्पेशलिटी हॉस्पीटल आधुनिक मोड्यूलर ऑपरेशन थियेटर एवं सभी आधुनिक उपकरणों से सुसज्जित प्रसूति कक्ष

साधारण, हाई रिस्क डिलीवरी, गर्भाशय का ऑपरेशन, सिजेरियन डिलीवरी, निसंतानता का निवारण, गर्भवती एवं समस्त प्रकार की स्त्री रोगों की नियमित जांच व इलाज

पाठों की मगरी, सेवाश्रम चौराहा, उदयपुर (राजस्थान)

मोबाइल नं :- 9829934770

अपोईन्मेन्ट एवं पूछताछ के लिए सम्पर्क करें हेल्पलाइन :- 9829934770

Email:sanjivanihospitaludaipur@gmail.com
admin@sanjivanihospitaludaipur.org
Website : www.sanjivanihospitaludaipur.org

फंगल इन्फेक्शन के आसान उपचार

फंगल स्किन इन्फेक्शन यानी 'फफूंद त्वचा संक्रमण' विभिन्न प्रकार की फफूंद की वजह से होता है, जिनमें डर्मेटोफाइट्स और यीस्ट प्रमुख हैं। फफूंद हमेशा मृत केराटिन में पनपता है और पैर की एड़ी, नाखून, जननांगों तक फैल जाता है। वर्षा के मौसम में यह समस्या बढ़ जाती है। जानिए इनसे कैसे करें अपना बचाव।

अमृता प्रकाश

त्वचा हमारे शरीर को किसी भी तरह के वायरल और बैक्टीरिया के संक्रमण से बचाती है। स्किन फंगल इन्फेक्शन में त्वचा पर सफेद पपड़ी जम जाती है, जिसमें खुजली होती है। ध्यान न देने पर कभी-कभी इसमें बैक्टीरियल संक्रमण भी हो जाता है। त्वचा के संक्रमण और चर्म रोग दोनों में अंतर है। त्वचा का संक्रमण रोगाणु, जीवाणु, वायरस, बैक्टीरिया, पैरासाइट और फंगस के संक्रमण से होता है। त्वचा में संक्रमण के लिए कई तरह के कीटाणु जिम्मेदार होते हैं। लक्षण जानते हुए भी तत्काल उपचार न किया जाए तो संक्रमण गंभीर भी हो सकते हैं।

कैसे होता है फफूंद संक्रमण

बरसाती मौसम, उमस और नमी भरे वातावरण में फंगस का आक्रमण बढ़ जाता है। यही कारण है कि इन दिनों अधिकतर लोग फंगल संक्रमण का शिकार होते हैं।

इम्यून सिस्टम का कमजोर होना

त्वचा संक्रमण की बड़ी वजह इम्यून सिस्टम यानी प्रतिरोधक क्षमता का कमजोर होना है। इस मामले में त्वचा संक्रमण का जोखिम ज्यादा बढ़ जाता है।

पसीने से न रहें तर

कवक यानी यीस्ट अकसर गर्म एवं नम वातावरण में बढ़ता है। पसीने से तर या गीले कपड़े पहने हुए व्यक्ति को त्वचा संक्रमण का खतरा ज्यादा रहता है। स्किन कटने या फटने पर संक्रमित बैक्टीरिया त्वचा की गहरी परत तक फैल सकता है।

कैसे-कैसे संक्रमण

- एथलीट फुट
- नाखून संक्रमण
- रिंगवर्म या दाद
- एक्जिमा
- यीस्ट या खमीर संक्रमण
- टिनिया वर्सिकलर संक्रमण
- टनिया केपिटिस संक्रमण

एथलीट फुट

पैर की अंगुलियों के बीच ऊष्ण और नम रहने वाला हिस्सा टीनिया पेडिस या एथलीट्स फुट नामक फंगल इंफेक्शन का शिकार हो जाता है। इसमें खुजली, जलन, त्वचा फटना एवं फफोले हो सकते हैं। यह पैर की अंगुलियों के बीच के हिस्सों में बढ़ता है, जो एक कवक के कारण होता है। कवक संक्रमण त्वचा में खुजली बढ़ाता है और पैर की त्वचा ज्यादा परतदार और लाल हो जाती है। इसके कारण कभी-कभी पैर में सफेद दरारें भी आ जाती हैं।

नाखून संक्रमण

नाखून में फंगल इन्फेक्शन पहले नाखून के अगले हिस्से में बढ़ता है और फिर धीरे-धीरे पूरे नाखून में फैल जाता है। इसके संक्रमण से नाखून का रंग नीला पड़ जाता है और नाखून के आसपास की कोशिका इतनी मोटी हो जाती है कि जूता पहनना भी मुश्किल हो जाता है।

रिंगवर्म या दाद

इसमें होने वाली खुजली खुजाते रहने का मन करता है । खुजाने के बाद जलन होती है, छोटे-छोटे दाने हो जाते हैं, चमड़ी लाल रंग की मोटी चकत्तेदार हो जाती है। दाद ज्यादातर जननांगों में जोड़ों के पास या जहां पसीना ज्यादा आता है व कपड़ा ज्यादा रगड़ाता है, वहां पर होती है।

एक्जिमा

दाद, खाज, खुजली जाति का एक रोग एक्जिमा भी है, जो ज्यादा कष्टकारी है। रोग का स्थान लाल

हो जात है और उस पर छोटे-छोटे दाने हो जाते हैं। या ज्यादातर सर्दियों में होता है और गर्मियों में सही हो जाता है। बरसात में भी हो सकता है। यह दो तरह का होता है। एक सूखा और दूसरा गीला। सूखे से पपड़ी जैसी भूसी निकलती रहती है और गीले में मवाद जैसा तरल निकलता रहता है। अगर यह सिर में हो जाये तो उस जगह के बाल झड़ने लगते हैं।

बचाव एवं उपचार

- पैरों को खुले वातावरण में रखना चाहिए।
- मोजे सूती और साफ पहनने चाहिए।
- संक्रमण होने पर बराबर मात्रा में पानी और सिरका मिला कर पैरों को 10 मिनट उसमें रखें, फिर पोंछ कर, सुखा कर, एंटी फंगल क्रीम लगाएं।
- त्वचा को नमी और गर्म वातावरण से बचाएं।
- नहाने के पानी में कुछ बूंदें एंटीसेप्टिक मिलाएं।

मौसम का फल

गठिया में लाभकारी जामुन

नीले रंग का फल जामुन आइरन, विटामिन, फाइबर और खनिजों से भरपूर होता है। इसलिए यह हमारे पेट, स्वास्थ्य और सौन्दर्य के लिए सम्पूर्ण टॉनिक है। इसलिए अन्य फलों के साथ जामुन को भी तरजीह दी जानी चाहिए क्यों कि इसके कई लाभ हैं।

- दाढ़-दांत, मसूढ़ों में दर्द की स्थिति में जामुन के पेड़ की छाल को पानी में खूब उबालकर उस पानी से कुल्ले करने पर लाभ होता है।
- जामुन का सिरका पेट के रोगों के निवारण में सहायक है। खाने के साथ थोड़ा सा सिरका लेने से भोजन आसानी से पचता है और पाचनतंत्र सुदृढ़ होता है। जामुन और आम का मिश्रित ज्यूस पीने से मधुमेह में लाभ होता है।
- जामुन के पेड़ की छाल उबालकर पानी का लेप घुटनों पर लगाने से गठिया में लाभ होता है।
- विषैले जंतुओं के काटने पर जामुन की पत्तियों का रस पिलाना चाहिए।
- जामुन यकृत को शक्ति प्रदान करता है। यह मूत्राशय में असामान्यता को दूर करता है।

- जामुन का रस, शहद, आंवले या गुलाब के फूल का रस बराबर मात्रा में मिलाकर एक-दो माह तक प्रति दिन सुबह सेवन करने से रक्त की कमी दूर होती है।
- मुंह के छाले ठीक करने के लिए जामुन की (कोंपल) को पान की भांति चबाएं।
- जामुन की गुठली के अंदर की गिरी में जंबोलीन नामक ग्लूकोसाइट पाया जाता है जो, मधुमेह के नियंत्रण में यह काफी सहायक है। गुठली सुखाकर पीसकर रख लें। एक-एक चम्मच सुबह-दोपहर-शाम पानी के साथ सेवन करें।

-वैद्य शोभालाल औदिच्य

Vipin Sharma
Director

हार्दिक शुभकामनाओं सहित

Shreenath®

Travellers

Head Office : 9, Kan Nagar, Main Road, Near Sub City Center
Udaipur Ph. : 0294 - 2488333, 2489555

Daily Parcel
Service Available

Udaipur : 3, Yatri Hotel Udaipole, Udaipur 313 001
Ph. : 0294 - 2423181, 2423182

Fatehpura, Udaipur (Rameshwar)
Shreenath Travellers, Fatehpura
Ph. : 09571210045

राजस्थान में बनेंगे मेगा कोचिंग टर्मिनल स्टेशन

जयपुर, जोधपुर, उदयपुर व बीकानेर शामिल, प्रत्येक स्टेशन पर खर्च होंगे 700-700 करोड़ रुपए

रेलवे बोर्ड अब राजस्थान में मेगा टर्मिनल स्टेशन बनाएगा। इससे यात्री सुविधाओं में विस्तार के साथ ही ट्रेनों के परिचालन व रख-रखाव की सुविधा भी बढ़ेगी। योजना में जयपुर, जोधपुर, उदयपुर व बीकानेर के एक-एक रेलवे स्टेशन को शामिल किया गया है। प्रत्येक स्टेशन के निर्माण पर 700 करोड़ रुपए खर्च होंगे। रेलवे प्रदेश के 100 से ज्यादा छोटे-बड़े स्टेशनों का अमृतभारत योजना के तहत री-डवलपमेंट कर रहा है। इसके तहत मेगा टर्मिनल कोचिंग स्टेशन विकसित किए जाएंगे। इनमें जयपुर मंडल के खातीपुरा स्टेशन या रींगस के भट्टों की गली स्टेशन, जोधपुर मंडल के भगत की कोठी स्टेशन, बीकानेर के लालगढ़ स्टेशन और उदयपुर के उमड़ा रेलवे स्टेशन को शामिल किया है। उत्तर पश्चिम रेलवे अधिकारियों का कहना है कि खातीपुरा और भट्टों की गली में से एक नाम तय होगा जबकि अन्य स्टेशन के नाम पर मुहर लग चुकी है। बोर्ड से हरी झंडी मिलते ही निर्माण कार्य शुरू हो जाएगा।

इसलिए पड़ रही आवश्यकता

रेलवे अधिकारियों का कहना है कि बड़े स्टेशनों के चारों ओर धनी आबादी क्षेत्र हैं। इससे लोगों को आने-जाने में परेशानी के साथ ही यातायात जाम की समस्या भी बढ़ रही है। स्टेशनों पर यात्रीभार भी बढ़ रहा है। इन समस्याओं को देखते हुए रेलवे ने मेगा टर्मिनल स्टेशन बनाने की कवायद शुरू की है।

10 से 12 बनाए जाएंगे प्लेटफॉर्म

- इन चारों स्टेशनों को 50 वर्ष की योजना के अनुसार विकसित किया जा रहा है।
- प्रत्येक स्टेशन पर प्लेटफॉर्म व ट्रेक की संख्या 10 से 12 तक होगी।
- 6-6 स्टेबल लाइन, पिट लाइन और वॉशिंग लाइन होगी। जिससे ट्रेनों का संचालन, मेंटीनेंस किया जा सकेगा।
- बड़े स्टेशन के यार्ड में नहीं जाना पड़ेगा ताकि ट्रेनें तय समय पर संचालित हो सके।

कविता

लिखो नया इतिहास

वेदव्यास

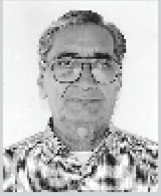

देश का लिखो नया इतिहास
समय के स्वर पहचानो रे।
विजय के सपनों का मधुमास
जवानों और किसानों रे।।

ये दिशा-दिशा के द्वार एक हो जाएं
ये रंग-रंग के हार एक हो जाएं,
जन-जीवन की परिभाषा बदल रही है
ये अलग-अलग संसार एक हो जाएं,
दूर नहीं आकाश
देश का लिखो नया इतिहास...

हमने हिंसा के अस्त्र नहीं धारे हैं
हमको अधर्म के वस्त्र नहीं प्यारे हैं,
युगवाणी को साकार बनाने वाले
हमने असत्य के शस्त्र नहीं धारे हैं,
बढ़ते चरण विकास
देश का लिखो नया इतिहास...

भारत गौरव गाथाओं की धरती है
भारत अभिनव उत्कर्षों की धरती है,
जिसके घर में लगता किरणों का मेला
भारत ऐसे संघर्षों की धरती है,
अपने पर विश्वास
देश का लिखो नया इतिहास...

समय के स्वर पहचानो रे।
विजय के सपनों का मधुमास
जवानों और किसानों रे।।

प्रत्यूष
प्रत्यूष पत्रिका में विज्ञापन देने के लिए सम्पर्क करें
75979 11992, 94140 77697

With Best Compliments

RT RISHABH® BUS PVT. LTD.

2x1 2x2 3x2 A/C Buses, Tempo Travelers for Group/Marriages, Contact Nearest
RISHABH BUS PVT. LTD.
or Call : **98290 66369**

UDAIPUR

Town Hall : 7, Town Hall Road, Nr. ICICI Bank, Udaipur (Raj.) 313001
Tel. : 0294-2418369, 2419237, 2421918
Sardarpura : 4/5, Nr. Gumaniawala Petrol Pump, Sardarpura, Udaipur
Tel. : 0294-2422582, 2425024, 2528644
RK Circle : Shobhagpura Road, M. 9460630000, Parcel : 8302369369
Udaipole : S. No. 4, Under Hotel Sangam, Tel. : 0294-2417274, 2418183

NEW DELHI

Filmistan : 2, Shah Bhawan, Behind Filmistan Fire Station, Chamelion Rd., Near Idgah Gol Choraha, New Delhi
Tel. : 011-23519724, 23512299, **Parcel : 8010712160**
Parcel : Shop No. 6, Old Punjab Bus Stand, Old Delhi-6,
Tel. : 011-23981235, 23977301

Cargo Service (Luggage & Parcel Service) : Door to Door Delivery, Expert in Intitutional Cargo Services :
98290-66369

ओपन रुफ डबल डेकर बस द्वारा

उदयपुर दर्शन

किट्टी पार्टी, बर्थ-डे पार्टी आदि के लिए संपर्क करें

+98290 66369, 97829 55222

Visit us : www.udaipursightseeing.com

JAIPUR-RISHABH TRAVELS 0141-5103830, 5104830
RISHABH TRAVELS, D-57, Fateh Singh mkt. Opp. Hotel Rajputana Sheraton
AJMER-RISHABH TRAVELS 0145-2620064, 2620926
C/o KAMLA TRAVELS, 48, Kutchery Road
BHILWARA-RISHABH TRAVELS 01482-237037, 237034
C/o NAMEDEV TRAVELS, Near hotel Land Mark, Basant Vihar
MUMBAI (VT office)-RISHABH TRAVELS 022-22697921.22626841
C/o ASHAPURA TRAVEL, 62-66. Joshi Bldg, Sunder Goa Street. Nr. GPO. VT Fort
HARIDWAR - GANESH YATRA SANGH 08449914477, 01334-220633
MUMBAI (Andheri office)-RISHABH TRAVELS 022-66848686.26844454
C/o MUKESH TRAVELS, Wazir Glass Compound, Western Express highway
BIKANER-RISHABH TRAVELS 0151-2525105, 2209209
C/o MILAN TRAVELS, Near Hotel Mumal, Panchasati Circle

JODHPUR-RISHABH TRAVELS 0291-5103227. 5103226
C/o JAKHAR TRAVELS,Near Barkhatulla Stadium. Main Pat Road M. 99296-22229
JHALAWAD-RISHABH TRAVELS 07432-233135, 233330
C/o JAKHAR TRAVELS, Opp. Bus Stand
JHALARAPATAN-RISHABH TRAVELS 07432-240424, 240324
C/o OSHO TRAVEL, Opp. Bus Stand
KOTA-RISHABH TRAVELS 0744-2440313. 2401125
C/o JAKHAR TRAVELS, Opp. Allanddal Park, Keshavpura
NATHDWARA-RISHABH TRAVELS 02953-230058, 230320
C/o ASHAPURA TRAVELS. Opp. Private Bus Stand, Nr. Kadayata Bhawan
RAJSAMAND-RISHABH TRAVELS 02952-225392, 223281
C/o DARSHAN TRAVELS, Near Ramdev Temple
PILANI-RISHABH TRAVELS 01596-245949. 245249. 9413366999
C/o AJAYRAJ TRAVELS. Opp. Bus Stand

E-Mail : info@rishabhbus.com **Web : www.rishabhbus.com**

सर्वाइकल स्पॉन्डिलाइटिस प्राकृतिक उपचार हैं ज्यादा कारगर

जीवनशैली असंतुलित होने पर जिंदगी का मजा किरकिरा हो जाता है। यह तमाम समस्याओं का कारण बन जाती है और कई बीमारियों को भी जन्म देती है। सर्वाइकल स्पॉन्डिलाइटिस एक ऐसी ही बीमारी है, जो असंतुलित जीवनशैली के कारण होती है।

डॉ. अखिलेश कुमार

मनुष्य की गर्दन में सात छोटी-छोटी हड्डियां होती हैं, जिनकी मदद से ही वह गर्दन को जैसा चाहें, घुमा और झुका सकता है। लेकिन जब हम गर्दन की क्रियाविधि में किसी तरह का अवरोध डालते हुए कंधों को बेवजह झुका कर बैठते हैं, लेट कर टीवी देखते हैं और आगे झुक कर बैठते हैं, तो रोग पैदा होने लगता है। सोने की गलत आदतें इसका बड़ा कारण हैं। सिर के नीचे तकिया लगा कर लगातार सोने की आदत भी इसका बड़ा कारण है। शारीरिक श्रम और योगाभ्यास जैसी जरूरी चीजों से दूर हो जाना और ज्यादा वक्त कम्प्यूटर के सामने बैठ कर गलत तरीके से गर्दन को रख कर कार्य करना भी इस गंभीर बीमारी को जन्म देता है, जिसे सर्वाइकल स्पॉन्डिलाइटिस कहते हैं। यह ज्यादातर 40 साल से अधिक उम्र वालो को होता है। आंख और गर्दन पर अधिक जोर देने वालों को यह बीमारी होने की आशंका अधिक होती है।

क्या हैं गड़बड़ियां

अपनी गलत आदतों के कारण हमारी सामान्य जीवनशैली असंतुलित होती है। अस्थियों के मध्य की जगह कम होने लगती है, जिससे आपस में हड्डियों के रगड़ खाने की वजह से उनमें क्षरण होने लगता है। पहले यह समस्या कंधे के नीचे पैदा होती है, लेकिन नजर अंदाज करने के कारण धीरे-धीरे कंधों तक फैल जाती है।

क्या हैं उपचार

इस बीमारी का इलाज होम्योपैथी, प्राकृतिक चिकित्सा और योग-ध्यान के जरिए कारगर ढंग से हो सकता है। इसलिए जैसे ही इस बीमारी के लक्षण दिखाई पड़ने लगें, उपचार शुरू कर देना चाहिए। विशेषज्ञ डॉक्टर से सम्पर्क करना चाहिए। अच्छा तो यही होगा कि जीवनशैली को दुरूस्त और संतुलित रखें, ताकि इसका सामना ही न करना पड़े।

प्राकृतिक चिकित्सा में कारगर उपचार

गर्मी में 12 गिलास और जाड़े में 7 गिलास पानी जरूर पिएं। गर्म-ठंडा सेंक, गर्दन की लपेट, बर्फ के टुकड़े की सेंक, सुबह 2-3 लहसुन की कलियों का जल के साथ सेवन और दर्द वाली जगह पर तेल की मालिश से भी इस परेशानी से छुटकारा मिल जाता है।

एनीमा का प्रयोग

सर्वाइकल के बढ़ने का कारण कब्ज, गैस आदि है। इसलिए कब्ज और गैस से छुटाकारा पाने के लिए दो दिन छोड़ कर बाकी दिन एनीमा जरूर लेते रहें। सुबह सूरज निकलते वक्त लहसुन के तेल से गर्दन की मालिश करना न भूलें।

होम्योपैथी उपचार

लक्षण को पहचानें

- गर्दन में धीरे-धीरे दर्द महसूस होता है।
- दर्द लगातार बढ़ता जाता है।
- काम में कई बार मन जबरन लगाना पड़ता है।
- कार्यक्षमता में कमी महसूस होती है।
- स्वभाव लगातार चिड़चिड़ा होता जाता है।
- तनाव और चिंता लगातार बढ़ती जाती है।
- भुजाओं में कमजोरी का एहसास होता है।
- गर्दन और हाथों में झनझनाहट महसूस होती है।

इन बातों पर ध्यान

- सोने वाला बिस्तर सख्त होना चाहिए।
- दिन में 10-12 बार गर्दन को दाएं-बाएं, ऊपर-नीचे घुमाना चाहिए।
- रोजाना आसन-व्यायाम योग विशेषज्ञ की देखरेख में ही करें।
- कुर्सी पर तन कर बैठें, जिससे रीढ़ की हड्डी सीधी रहे।
- कुर्सी पर बैठ कर कई घंटे लगातार कार्य न करें, बीच-बीच में विश्राम जरूर लें

परहेज करें

- तली–भुनी चीजों, मांस, अंडा, शराब, कोल्ड ड्रिंक, मैदे से बनी चीजों, अधिक नमक और मीठी वस्तुओं का सेवन न करें।
- मोटापा कम करने या मोटा होने के लिए दवाओं का इस्तेमाल न करें।
- टीवी देखने से बचें।
- लड़ाई–झगड़े से बचें और इससे संबंधित तनाव भी न पालें।
- आदतों के अनुसार नहीं, बल्कि डॉक्टर की सलाह के अनुसार भोजन आदि लें।
- सुबह आठ बजे तक नाश्ता, दोपहर 2 बजे तक खाना और शाम को पांच बजे नाश्ता और रात आठ बजे तक खाना जरूर खा लें।
- मौसम के अनुसार कपड़ों के इस्तेमाल पर गंभीरता से ध्यान दें।
- साते वक्त पैरों और हाथों को सीधा करके लेटना चाहिए।
- अपनी समस्या पर खुद बार–बार नकारात्मक ढंग से विचार न तो खुद करें और न ही किसी और से इस बारे में बताएं।

होम्योपैथी उपचार में सर्वाइकल के लिए कुछ खास दवाओं का इस्तेमाल किया जाता है। थूजा 1000 की दो खुराकें आधे-आधे घंटे पर हफ्ते में किसी एक दिन लेना चाहिए। केल्केरिया फॉस 30 व मैग्नेशिया फॉस 6 एक्स को दिन में दो बार लेना होता है। इनके अलावा भी कई दवाएं हैं, लेकिन बिना विशेषज्ञ की सलाह के इनका इस्तेमाल बिल्कुल भी नहीं करना चाहिए।

आहार पर विशेष ध्यान दें

ताजी हरी और पत्तेदार सब्जियां बहुत फायदेमंद होती हैं। पालक, गाजर ओर चुकंदर का रस बहुत फायदेमंद होता है। चट्टानी नमक डाल कर नीबू का रस, ओमेगा 3 और विटामिन ई से युक्त शुद्ध शाकाहारी आहार का सेवन करना चाहिए।

जांच भी जरूरी

सर्वाइकल के लक्षण मालूम होते ही कैल्शियम, आयरन आदि की जांच करानी चाहिए। अगर पैर में सूजन है तो यूरिक एसिड, हीमोग्लोबिन और मांसपेशियों की भी जांच कराएं। अगर डायबिटीज, उच्च रक्तचाप, ह्वदयघात और झनझनाहट की बीमारियों के लक्षण दिखाई पड़ें, तो रक्त की पूरी जांच और एक्स-रे अवश्य कराएं। जांच सही जगह से कराएं।

कारगर योगासन

सर्वाइकल में सुबह खाली पेट कुछ खास योगासनों का नियमित अभ्यास फायदेमंद है। मकरासन , शवासन, मत्स्यासन, भुजंगासन, धनुरासन, अर्धमत्स्येद्रासन और नौकासन का अभ्यास करें। योगासनों का अभ्यास विशेषज्ञ की देखरेख में करें। प्राणायाम का अभ्यास करते वक्त समस्या ठीक होने का विचार करते रहना चाहिए। विचारों में सकारात्मकता और शुभ संकल्प को बनाएं रखें। प्रणव प्राणायम (ऊं) ध्वनि का 6 मिनट तक तेज आवाज में उच्चारण करना चाहिए।

Dharmendra
Director,
+91 94141 58708

JL Distributors

Tarun
Director,
+91 810 444 1444

श्री Jagat Leela Distributors

Tarun Electricals

Stockist

USHA Symphony Crompton Kunstocom Giving shape to ideas
Racold HAVELLS PHILIPS OSRAM

Off.: 30/31, Link Road, Opp. Town Hall, Udaipur 313 001 (Raj.)
Ph.: 0294-2423965 (O), E-mail: jagatleela@gmail.com, tarunelectric@yahoo.in

चटपटा चीला

सुबह के नाश्ते में क्या बनाया जाए, इस सवाल से हर कोई जूझता है। इसी सवाल का जवाब छिपा है चीले में। चीले की कुछ स्वादिष्ट रेसिपी प्रस्तुत है-

कावेरी दुबे

आलू चीला

सामग्री:
- आलू – 3
- कॉर्न फ्लोर – 2 चम्मच
- बेसन – 2 चम्मच
- काली मिर्च पाउडर – 1/2 चम्मच
- जीरा – 1/2 चम्मच
- बारीक कटी मिर्च – 1
- बारीक कटा हरा प्याज – 2 चम्मच
- नमक – 1/2 चम्मच
- तेल– आवश्यकतानुसार

कितने लोगों के लिए : 02

कुकिंग टाइमः 30 मिनट

विधि: आलू को अच्छी तरह से धोकर छिलका छील लें और कद्दूकस कर लें। कद्दूकस किए आलू को पानी में डुबोकर पांच से सात मिनट तक छोड़ दें। आलू को पानी से निकालें और पानी को पूरी तरह से निचोड़ लें। बाद में उसे एक बाउल में डालें और कॉर्न फ्लोर और बेसन डालकर अच्छी तरह से मिलाएं। अगर मिश्रण बहुत गीला है तो उसमें थोड़ा–सा बेसन व कॉर्न फ्लोर और मिलाएं। मिश्रण में काली मिर्च पाउडर, जीरा पाउडर, हरी मिर्च, हरा प्याज और नमक डालकर मिलाएं। मिश्रण अगर अभी भी गीला है तो उसमें थोड़ा–सा तेल डालें। पैन के बीच में एक बड़ा चम्मच मिश्रण डालें और उसे मनचाहा आकार देते हुए फैलाएं। हल्का–सा तेल और डालें। मध्यम आंच पर उसे दोनों ओर से सुनहरा होने तक पकाएं। चटनी या सॉस के साथ गर्मागर्म सर्व करें।

मूंग दाल पालक चीला

कितने लोगों के लिए : 04

कुकिंग टाइमः 50 मिनट

सामग्री:
- दही – 1/2 कप
- बिना छिलके वाली मूंग दाल – 250 ग्राम
- बारीक कटा पालक – 50 ग्राम
- बारीक कटी धनिया पत्ती – 5 चम्मच
- बारीक कटी मिर्च – 2
- कद्दूकस किया हुआ अदरक – 1 चम्मच
- जीरा – 3/4 चम्मच
- हल्दी पाउडर – 1/2 चम्मच
- लाल मिर्च पाउडर – 3/4 चम्मच
- नींबू का रस – 2 चम्मच
- नमक – स्वादानुसार
- तेल – आवश्यकतानुसार

विधि: मुंग दाल को धोकर चार से पांच घंटे के लिए पानी में भिगों दें। पानी से दाल को निकालें और थोड़ा–सा साफ पानी डालकर ग्राइंडर में डालें और मूंग दाल का पेस्ट बना दें। दाल के घोल का गाढ़ापन डोसा के घोल जैसा होना चाहिए। दाल के पेस्ट को एक बड़े बाउल में डालें और उसमें तेल को छोड़कर अन्य सभी सामग्री को डालकर अच्छी तरह से मिलाएं। ध्यान रहे कि घोल में गांठें न हों। नमक स्वादानुसार मिलाएं। नॉनस्टिक पैन को गर्म करें और उसमें हल्का–सा तेल डालें। एक बड़े चम्मच से दाल वाला घोल पैन के बीच में डालें और उसे फैला दें। ऊपर से थोड़ा–सा तेल और डालें। दोनों ओर से सुनहरा होने तक पकाएं। मनपसंद चटनी के साथ सर्व करें।

मटर का चीला

कितने लोगों के लिए : 04

कुकिंग टाइमः 40 मिनट

सामग्री:
- हरी मटर – 1 कप
- बेसन – 2 चम्मच,
- चावल का आटा – 2 चम्मच
- कद्दूकस किया पनीर – 2 चम्मच
- क्रीम – 1 चम्मच
- कद्दूकस किया हुआ, अदरक – 1
- छोटा चम्मच, खाने वाला सोड़ा – 1/2 चम्मच,
- लाल मिर्च, पाउडर – 1/2 चम्मच
- जीरा पाउडर – 1/2 चम्मच
- नमक – 1/2 चम्मच
- तेल – आवश्यकतानुसार

विधि: मटर का चीला बनाने के लिए सबसे पहले मटर को उबाल लें। जब मटर ठंडी हो जाए तो उसे ग्राइंडर में डालकर थोड़े से पानी के साथ पीस लें। इस पेस्ट को एक बाउल में डालकर बाकी सारी सामग्री डालें। मिश्रण में तेल नहीं डालें। इस घोल को अच्छी तरह से मिला लें। अब एक नॉनस्टिक पैन को गरम करें। इसमें थोड़ा तेल गर्म करें। पैन के बीच में थोड़ा–सा मटर का घोल डालें। एक चम्मच की मदद से घोल को गोल आकार में फैला दें। चीले को दोनों ओर से अच्छी तरह से पकाएं। हरी चटनी या सॉस के साथ सर्व करें।

बेसन और प्याज का चीला

सामग्री:
- बेसन – 1 कप
- बारीक कटा प्याज– 1
- बारीक कटी मिर्च – 2
- दरदरी पिसी सौंफ– 1 चम्मच
- बारीक कटी धनिया पत्ती – आवश्यकतानुसार
- नमक – स्वादानुसार
- तेल– आवश्यकतानुसार

कितने लोगों के लिए : 04

कुकिंग टाइमः 50 मिनट

सर्व करने के लिए
- प्याज – बारीक कटा
- हरी चटनी

विधि: एक बाउल में तेल के अलावा सभी सामग्री डालकर मिला दें। धीरे–धीरे पानी डालते हुए गाढ़ा घोल तैयार करें। नमक और मसालों को स्वादानुसार मिलाएं। नॉनस्टिक पैन में गर्म करके उसमें थोड़ा–सा तेल डालें। एक बड़ा चम्मच घोल पैन में डालें और उसे गोल आकार में फैला दें। चीला के आसपास ऊपर से हल्का–सा तेल डालते हुए दोनों ओर से सुनहरा होने तक पकाएं। चीले के ऊपर थोड़ी–सी हरी चटनी और थोड़ा–सा प्याज डालें और सर्व करें।

इस माह आपके सितारे

पं. शोभालाल शर्मा

मेष

प्रगति से जुड़ी कुछ घटनाएं घटेगी, माह के आरम्भ में विलंबित कार्य शुरू होंगे। मनोकामना पूर्ति के लिए इंतजार करना होगा, प्रयासों में कमी न करें, स्वास्थ्य के प्रति सजग रहें, राजकीय, शासकीय एवं न्यायिक मामले पक्ष में रहेंगे।

वृषभ

ग्रहों के अनुकूल न होने के कारण कार्य की प्रगति में देरी, हड़बड़ी में लिए गए निर्णय समस्याएं पैदा कर सकते हैं, निर्णय लेने की क्षमता का विकास करें, किसी पर भी भरोसा न करें। कार्य क्षेत्र में सफलता मिलेगी परंतु धैर्य से काम लेना होगा।

मिथुन

ग्रहों से अपेक्षित सहयोग नहीं मिलने से धैर्य से आगे बढ़ना होगा, दायित्व के प्रति ईमानदार रहें। जिम्मेदारियों को निभाने का प्रयास करें। आत्मबल बनाय रखें, यात्रा योग है, विरोधी परास्त होंगे, सन्तान पक्ष से शुभ समाचार मिलेंगे।

कर्क

ऐसी स्थिति पैदा होगी जो आपकी क्षमता को चुनौती देगी। संयम से काम लें, जिद से आपको नुकसान हो सकता है। कार्य क्षेत्र में आपकी जिम्मेदारियां बढ़ेगी, यात्रा में परेशानी संभव। आय पक्ष प्रबल रहेगा, दाम्पत्य जीवन मधुर रहेगा।

सिंह

नया स्थान, नया लाभ इसे ध्यान में रखकर निर्णय लेना होगा, नौकरी एवं कारोबार में नई तकनीक को अपनाएं, सभी को साथ लेकर चलने की कोशिश करें, जिससे सफलता मिलेगी। कार्य क्षेत्र में अपने ही लोग विरोधी हो सकते हैं, सावधान रहें। दाम्पत्य जीवन में मधुरता बनी रहेगी, स्वास्थ्य थोड़ा प्रतिकूल रहेगा।

कन्या

यह मनोकामना पूर्ति का माह है। आर्थिक लेनदेन में वृद्धि होगी, मित्रों एवं परिवार का सहयोग मिलेगा। राजनीतिक क्षेत्र में परिचितों से लाभ होगा, घर–परिवार में शुभ काम सम्पन्न होंगे। विचारों में समन्वय बना कर रखें। भौतिक सुख–सुविधा का विस्तार संभव है।

तुला

एकाग्रता एवं दृढ़ता से विपरीत परीस्थितियों से उबरने में सक्षम होंगे। विवादों में खुद को शामिल न करें, परिवार के सदस्यों के साथ ताल–मेल बिठावें, माह का उत्तरार्ध उत्तम परिणाम देगा, स्वास्थ्य अच्छा रहेगा, संतान पक्ष में हर्षोल्लास। दाम्पतय जीवन में उग्रता रहे।

इस माह के पर्व/त्योहार

5 जुलाई	आषाढ़ कृष्ण अमावस्या	हर गोबिंद सिंह जयंती (नानक शाही मत)
6 जुलाई	आषाढ़ शुक्ल प्रतिपदा	डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी जयंती
7 जुलाई	आषाढ़ शुक्ल द्वितीया	जगन्नाथ रथ यात्रा
11 जुलाई	आषाढ़ शुक्ल पंचमी	द्वारकाधीश पाटोत्सव/विश्व जनसंख्या दिवस
17 जुलाई	आषाढ़ शुक्ल एकादशी	देवशयनी एकादशी / (मोहर्रम माह की 10 तारीख) ताजिया
21 जुलाई	आषाढ़ शुक्ल पूर्णिमा	व्यास पूजा / गुरू पूर्णिमा
23 जुलाई	श्रावण कृष्ण द्वितीया	लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक जयंती
25 जुलाई	श्रावण कृष्ण पंचमी	नागपंचमी / कालसर्प पूजन मुहूर्त
26 जुलाई	श्रावण कृष्ण षष्ठी	कारगिल विजय दिवस
29 जुलाई	श्रावण कृष्ण नवमी	गुरू हरिकिशन जयंती

वृश्चिक

इस माह किसी भी तरह का कार्य आसानी से नहीं होगा, पर विचलित नहीं हों, अपनी जिम्मेदारियों को निभाना कठिन होगा, अनुभवी व्यक्तियों की मदद से काम की दिशा तय करें तो लाभ मिलेगा। संतान पक्ष से खुशी मिलेगी। अचल सम्पत्ति में वृद्धि संभव, स्वास्थ्य उत्तम।

धनु

कार्य क्षेत्र में नए बदलाव के लिए आपको अपने वरिष्ठों का सहयोग मिलेगा, योजना बनाकर कार्य करेंगे तो सफलता मिलेगी, आप अपने कर्तव्यों के पूरे होने से खुश रहेंगे, विरोधी पक्ष परास्त होगा, जीवन साथी के सहयोग से भविष्य की योजनाओं को मूर्त रूप दे सकते हैं, भाई–बहिनों का सहयोग मिलेगा।

मकर

सामाजिक क्षेत्र में मान–सम्मान मिलेगा, यह माह खुशियों से भरा है। किसी काम से यात्रा के योग बनेंगे। महिने के अंत में विचारों में मतभेद की संभावना रहेगी, नौकरी और कारोबार में भागदौड़ बढेगी, माह के पूर्वार्द्ध में कुछ नया कर सकेंगे एवं सफलता मिलेगी। ऋण से मुक्ति संभव।

कुम्भ

दूसरों पर निर्भर हुए बिना आपको अपनी नैतिक जिम्मेदारी निभानी होगी, महीने की शुरुआत में कोई महत्वपूर्ण निर्णय न लें। माह के अंत में स्थिति अनुकूल रहेगी, कार्य क्षेत्र में प्रतिष्ठा बनी रहेगी, स्वास्थ्य का ध्यान रखें। सहसा कोई घटना ठेस पहुंचा सकती है, दिनचर्या में नियमितता रखें।

मीन

नौकरी एवं कारोबार में जो भी निर्णय लेंगे वे सही होंगे। वित्तीय लेन–देन में अप्रत्याशित उतार–चढ़ाव सेहत के लिए आहार–विहार के नियमों का पालन करें। जीवन साथी से कटुता का अनुभव होगा, साझेदारी को यथा संभव टालें, भाग्य पूर्ण रूप से सहयोग करेंगा, स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

अनंत के विस्तार का अनुभव है- योग

योग का अर्थ केवल कुछ शारीरिक क्रियाएं नहीं हैं। यह कसरत भर भी नहीं है। यह एक साधना है, जो व्यक्ति को उसकी सर्वश्रेष्ठ क्षमता तक पहुंचने में सहायता करती है। यह शरीर और मन से परे हमें हमारी चेतना से जोड़ने का मार्ग है.....

योग के अनेक लाभ हैं। योग हमें तनावमुक्त जीवन जीने की तकनीक प्रदान करता है। योग सिर्फ एक व्यायाम नहीं है, वह हरेक परिस्थिति में आपको कुशलता से कर्म करना सिखाता है। दैनिक जीवन में आने वाली तनावपूर्ण परिस्थितियों के रहते हुए भी मुस्कान बनाए रखना योग का उद्देश्य है। योग के जरिये जो आराम मिलता है, उससे व्यक्ति और अधिक क्रियाशील और तेज निर्णय लेने की क्षमता का अभूतपर्व विकास कर पाता है।

योग का ज्ञान सागर की तरह विशाल है। योगाभ्यास आपको सर्वोच्च सत्य के ज्ञान के लिए तैयार करता है। आप दुखी हैं,तो यह आपको दुख से बाहर ले जाता है। आप बहुत बेचैन हैं, तो योग आप के अंदर धैर्य लाता है, कुशलता लाता है, जिसकी आपको जरूरत है। हमारे कर्म ही हमारे सुख-दुख के कारण होते हैं, और जब हमारे कर्म कुशल होते हैं, तब वे कर्म हमें सुख देते हैं।

व्यक्ति को जीवन में अधिक जिम्मेदार बनाने में भी योग सहायक है। इसे कर्म योग कहा जाता है। योग आप में और अधिक ऊर्जा और उत्साह पैदा करता है। यदि आपके पास पर्याप्त उत्साह और ऊर्जा है, तो आप निश्चित रूप से और अधिक जिम्मेदारी लेते हैं, और उसका भार अनुभव नहीं करते। योग एक ऐसा उपकरण है, जो कम समय में हमें अधिकतम उर्जा प्रदान कर सकता है। योग के कुल आठ भाग हैं। दुर्भाग्यवश लोग समझते हैं कि इसके आठ स्तर हैं, जिन्हें एक के बाद एक करना है। वास्तव में ये आठ भाग हैं, जो एक क्रम में नहीं हैं। वे एक-एक पाठ के स्वरूप में है। यह आठ भाग एक कुर्सी के चार पैरों के समान हैं। यदि एक भाग को हटाया जाए तो पूरी कुर्सी अस्थिर हो जाती है। योग का एक अंग है 'नियम', जिसकी पहली व्यक्तिगत नैतिकता स्वच्छता या शौच है। शौच, जैसे कि महर्षि पतंजलि के योग सूत्र में वर्णित है, यौगिक जीवन के लिए एक महत्वपूर्ण आधार के रूप में शुद्धता और स्वच्छता का समर्थन करती है। शौच का गहन अर्थ अनावश्यक शारीरिक संपर्क और अंतरंगता से बचना भी है। स्वस्थ और, रसायन-मुक्त भोजन खाने का आत्म-अनुशासन, जो हमें भीतर से स्वच्छ रखता है, वह शौच का पूरक है। इसमें पर्याप्त नींद लेने, व्यायाम करने, ध्यान करने और इस तरह का कुछ भी शामिल है, जो हमारे शरीर के तंत्रों की शुद्धि की ओर ले जाता है। योग के आठ अंगों में एक आसन भी है। आसन की परिभाषा है- एक ऐसी मुद्रा, जो स्थिर और सुखद हो। योग आसन करते समय आपको आराम महसूस होना चाहिए। आराम की परिभाषा क्या है? जब आप शरीर को महसूस नहीं करते। आप किसी टेढ़ी-मेढ़ी स्थिति में बैठे हैं, तो शरीर के उन हिस्सों के दर्द पर आपका ध्यान चला जाता है। आपका ध्यान दर्द पर अधिक रहता है।

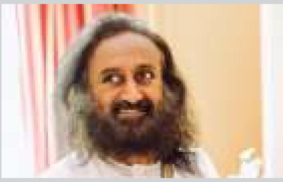

योगाभ्यास आपको सर्वोच्च सत्य के ज्ञान के लिए तैयार करता है। योग आपके भीतर धैर्य लाता है। यह आप में एक कुशलता लाता है। जिसकी आपको जरूरत है।

शुरुआत में आसन की असुविधा पर ध्यान रहता है। लेकिन अगर आप अपने मन को उससे गुजरने देते हैं, तो आप पाएंगे कि बस कुछ ही मिनटों में असुविधा गायब हो गई और आपको शरीर का आभास ही नहीं रहा। आसन में अनंत के विस्तार का अनुभव मिलता है। एक आसन कैसे किया जाना चाहिए? आसन का स्थिति में आकर सभी प्रयास छोड़ दीजिए। फिर क्या होता है? अनंतता आप में समाहित हो जाती है। इसलिए ध्यान रखें कि प्रत्येक आसन का लक्ष्य सिर्फ सही स्थिति बनाना नहीं है, बल्कि अपने भीतर एक विस्तार का अनुभव करना है। योग आसन में यह सबसे महत्वपूर्ण बात है। यह थोड़े ही अभ्यास के साथ आप के अनुभव में आने लगता है। योग आसन अपने आप में महत्वपूर्ण हैं, लेकिन वे प्रणायाम और ध्यान के बगैर अधूरे हैं। यहां तक कि ध्यान की हल्की-सी झलक भी किसी का जीवन बदल सकती है। कुछ मिनट का ध्यान हमें घंटों की नींद के बराबर आराम प्रदान कर देता है। ध्यान, जो छठा हिस्सा है, इसको प्राप्त कर लेने के बाद पहला यम व दूसरा नियम

स्वत: प्राप्त हो जाते हैं। योग की एक अन्य परिभाषा है दृश्य से द्रष्टा भाव में आना। बहिर्मुखी से धीरे-धीरे अंतर्मुखी बनना। सब से पहले, वातावरण से भौतिक शरीर पर अपना ध्यान ले जाना। फिर अपने ध्यान को शरीर के मन की ओर ले जाना। अपने मन में उत्पन्न होते विचारों को साक्षी भाव से देखने से वह भी दृश्य बन जाते हैं, जो सब कुछ देख रहा है- और यही योग है। जब भी आप जीवन में खुशी, उत्साह, परमानंद और सुख का अनुभव करते हैं, तो जाने अनजाने में आप उस सर्व द्रष्टा की प्रकृति का ही अनुभव कर रहे हैं। योग के माध्यम से हम सहजता से उसी परमानंद का अनुभव करते हैं।

आसन, प्राणायम और ध्यान को जीवनशैली का अंग बनाना एक व्यक्ति की रोग प्रतिरोधक शक्ति को बढ़ाने में बहुत आगे ले जा सकता है। योग महज एक प्रक्रिया नहीं है, यह हमारी चेतना के स्तर को भी ऊंचा करता है। योग व्यक्ति विशेष के अंदर की तमाम प्रतिभाओं को बाहर लाने का एक सरल मार्ग है।

प्रत्यूष समाचार

हीरो की एक्सट्रीम 125 आर और मेवरिक 440 लांच

उदयपुर। हीरो मोटर्स ने अरबन स्क्वायर मॉल में दो अत्याधुनिक बाइक्स एक्स्ट्रीम 125 आर और मेवरिक 440 की लॉंचिंग की। डीलर्स ने एक्स्ट्रीम 125 आर और मेवरिक 440 का अनावरण किया। डीलर्स ने केक सेरेमनी के साथ इन बाइक्स के फीचर के बारे में जानकारी दी। इस अवसर पर जनता एवं ग्राहक मौजूद थे। रॉयल मोटर्स के डायरेक्टर शेख शब्बीर के मुस्तफा, वीएसएस हीरो के सतपालसिंह ने बताया कि एक्स्ट्रीम 160 आर का पहले से युवाओं में विशेष रुझान था और उनकी 125 सीसी की डिमांड का ध्यान रखते हुए हीरो मोटोकॉर्प की ओर से एक्स्ट्रीम 125 सीसी का वेरियेंट बाजार में लाया गया। हीरो एक्स्ट्रीम 125 आर एक हेडलैंप अपफ्रंट के साथ शार्प स्टाइल वाली बाइक है, जो मोटरसाइकिल को खास फ्रंट लुक देती है। वहीं लो स्लंग हेडलैंप आगे दोनों तरफ एलईडी टर्न इंडीकेटर्स के साथ आते है और टॉपर पर डीआरएल दिखाई देते है। हीरो मोटो कॉर्प के एरिया सेल्स मैनेजर भाविक सरीन एटेरेटरी सेल्स मैनेजर भव्य हसीजा ने बताया कि हीरो मेवरिक 440 बोल्ड और अग्रेसिव डिजाइन, रोडस्टर ऐस्थेटिक्स और रोबस्ट स्टाइलिंग के साथ पेश किया गया है। मेवरिक 440 में ई सिम बेस्ट कनेक्टिविटी मिलती है जिसके जरिये यूजर रियर टाइम इंर्फोमेशन, रिमोट ट्रैकिंग सहित अन्य सुविधाओं का लाभ उठा सकते हैं।

6 स्क्रीन मल्टीप्लेक्स पीवीआर आईनॉक्स

उदयपुर। शहर के अर्बन स्क्वायर मॉल में सबसे बड़ा 6 स्क्रीन वाला मल्टीप्लैक्स पीवीआर आईनॉक्स खुल गया है। जो 40,000 स्क्वायर फीट के लिजेबल एरिया के साथ पीवीआर आईनॉक्स फिल्म देखने वालों को एक अद्वितीय सिनेमाई अनुभव देगा। इसकी बैठक क्षमता 1009 लोगों की है। उद्‌घाटन मुख्य अतिथि भूमिका पोद्दार और जिला कलक्टर अरविंद पोसवाल ने किया। भूमिका ग्रुप के मैनेजिंग डायरेक्टर उद्धव पोद्दार ने कहा कि अर्बन स्क्वायर मॉल का लक्ष्य हमेशा दर्शकों को मनोरंजन में सर्वश्रेष्ठ प्रदान करना रहा है। उदयपुर का पहला 6 स्क्रीन मल्टीप्लेक्स पीवीआर आईनॉक्स इस दिशा में एक और कदम है। प्रमुख खरीदारी और मनोरंजन स्थल के रूप में यह मॉल और मजबूत होगा।

पुस्तक 'यमराज' का विमोचन

उदयपुर। प्राण पब्लिसिटी के संस्थापक हीरालाल कसेरा (रावत) द्वारा आदर्श जीवन शैली एवं प्रेरणास्पद विचारों पर संकलित पुस्तक 'यमराज-मृत्यु' का विमोचन गत दिनों आलोक संस्थान के निदेशक डॉ. प्रदीप कुमावत ने राममंदिर परिसर में किया। उन्होंने कहा कि जीवन से मुक्ति पाने के लिए पुस्तक में उपयोगी उपायों को शामिल किया गया है। इस अवसर पर कैलाश रावत, प्रतीक कुमावत, मनमोहन भटनागर, शशांक कुमावत, पं. रतनलाल आदि भी उपस्थित थे। पुस्तक के संपादक कसेरा ने कहा कि इस पुस्तक के पढ़ने से पारिवाकि एवं सामाजिक संबंधों मे' आए तनाव समाप्त होंगे और मानसिक शांति के साथ जीवन का शेष सफर पूर्ण किया जाकर मुक्ति भी प्राप्त होगी। जिनेन्द्र मुनि काव्य तीर्थ ने अपने संदेश में कहा कि दया, दान, करुणा और परोपकार से ही जीवात्मा मुक्ति की ओर अग्रसर हो सकती है। यह पुस्तक श्रेष्ठ जीवन निर्माण का महत्वपूर्ण माध्यम सिद्ध होगी।

डॉ. झाला लंदन बुक ऑफ रिकॉर्ड्स में दर्ज

उदयपुर। अलख नयन मंदिर के मेडिकल डायरेक्टर डॉ. लक्ष्मणसिंह झाला का नाम सबसे ज्यादा नि:शुल्क मोतियाबिंद ऑपरेशन करने पर लंदन बुक ऑफ रिकॉर्ड्स में दर्ज किया गया है। चिकित्सालय की निदेशक डॉ. लक्ष्मी झाला ने बताया कि गांवों में रूबेला एवं कुपोषण बीमारी के कारण जन्मजात मोतियाबिंद होता है। अलख नयन मंदिर ने अब तक 13 लाख 35 हजार से अधिक लोगों को नेत्र चिकित्सा उपलब्ध कराई है, जिसमें से 50 प्रतिशत नि:शुल्क हुई।

डॉ. जुकरवाला ने अंतरराष्ट्रीय कार्यशाला में रखे विचार

उदयपुर। गीतांजलि मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल के न्यूरोलॉजी विभाग के एचओडी डॉ. अनीस जुकरवाला को नेपाल में पहले अंतरराष्ट्रीय कांग्रेस ऑफ नेपालीज एकेडमी ऑफ न्यूरोलॉजी में अंतरराष्ट्रीय वक्ता और ईईजी कार्यशाला प्रशिक्षक के रूप में आमंत्रित किया गया। उन्होंने मिर्गी से मुक्त होने के बाद एंटी सीजर दवाओं को कब और कैसे रोकना चाहिए, विषय पर विचार रखे।

मेवाड़ कांफ्रेंस के अध्यक्ष बने फत्तावत

उदयपुर। मेवाड़ जैन श्वेतांबर तेरापंथी कांफ्रेंस का वार्षिक अधिवेशन कांकरोली में गत दिनों संपन्न हुआ। अध्यक्ष कांफ्रेंस अध्यक्ष देवेन्द्र कच्छारा ने की। कोषाध्यक्ष कमलेश कच्छारा ने सत्र 2023-24 के आय-व्यय का ब्योरा पेश किया। अध्यक्ष कच्छारा ने कार्य समिति भंग करने की घोषणा की। इसके साथ ही चुनाव अधिकारी महेन्द्र कोठारी ने चुनाव प्रक्रिया शुरू की। पूरे मेवाड़ से एकमात्र राजकुमार फत्तावत दावेदार थे। उन्हें सत्र 2024-26 के लिए निर्विरोध निर्वाचित घोषित कर शपथ दिलाई गई।

जेके सीमेंट: पशुधन विकास परियोजना

निम्बाहेड़ा। पशु नस्ल सुधार परियोजना के तहत कृषि में पशुओं के चारा उत्पादन की नई तकनीक तथा कृषि क्षेत्र एवं पशुधन के क्षेत्र में नई नकनीक के माध्यम से किसानों की आय में बढ़ोतरी करने के उद्देश्य से जेके सीमेंट कम्पनी करीब 25 ग्राम पंचायतों में काम करेगी। इसी के अंतर्गत पिछले दिनों गोपाल प्रशिक्षण आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ यूनिटहेड आर.बी.एम. त्रिपाठी ने किया। उन्होंने कहा कि देश की अर्थव्यवस्था में कृषि एवं पशुपालन का महत्वपूर्ण योगदान है। जे.के. सीमेंट किसानों के विकास एवं उनकी आर्थिक उन्नति के लिए हमेशा प्रयास करता रहेगा। इस अवसर पर प्रभाकर मिश्रा, हेड एचआर एवं ईआर, मनीष शर्मा, प्रबंधक सीएसआर, जेके ट्रस्ट के राज्य परियोजना प्रबंधक डॉ. रविशंकर यादव, डॉ. प्रवीण कुमार, पशु चिकित्सा अधिकारी, नंद किशोर सोनी, ओमेन्द्र सिंह सोलंकी भी उपस्थित थे।

चूंडावत ने क्रिकेट कोचिंग में प्राप्त किए 100 प्रतिशत अंक

उदयपुर। उदयपुर के चंद्रपाल सिंह चूंडावत ने बीसीसीआई की नेशनल क्रिकेट एकेडमी द्वारा आयोजित ओ लेवल क्रिकेट कोचिंग परीक्षा में 100 में से 100 अंक प्राप्त कर उदयपुर शहर का नाम रोशन किया है। जिला क्रिकेट संघ अध्यक्ष मनोज भटनागर, सचिव महेन्द्र शर्मा सहित सभी पदाधिकारी एवं खिलाड़ियों ने चंद्रपाल को बधाई देते हुए उनके उज्जवल भविष्य के लिए शुभकामनाएं दी।

अमरावत अध्यक्ष मनोनीत

उदयपुर। त्रिवेदी मेवाड़ ब्राह्मण समाज उदयपुर शहर की कार्यकारिणी का विस्तार किया गया। समाज प्रवक्ता डॉ. शैलेन्द्र पंड्या ने बताया कि सर्वसम्मति से अध्यक्ष पवन कुमार अमरावत, कार्यकारी अध्यक्ष विनोद पांडे, सचिव अनिल पांडे, उपाध्यक्ष सुनील के त्रिवेदी तथा यशवंत पांडे, पुष्पा त्रिवेदी और माया त्रिवेदी, कोषाध्यक्ष जगदीश त्रिवेदी, कार्यकारिणी में विशेष आमंत्रित सदस्य अशोक उपाध्याय, भरत त्रिवेदी, मोहन त्रिवेदी, अरुण त्रिवेदी, मोहन त्रिवेदी, अरुण त्रिवेदी, आनंद मेहता और यशवंत पांडे, चन्द्रकांत पांडे, ममता त्रिवेदी बनाए गए।

इसरो के आयोजन में मनन

उदयपुर। शहर के 10वीं के छात्र मनन शर्मा ने अहमदाबाद के सेटेलाइट एप्लीकेशन सेंटर में आयोजित इसरो के युविका-2024 कार्यक्रम में भागीदारी निभाई। विद्यार्थियों का चयन अखिल भारतीय प्रतियोगिता के माध्यम से किया गया।

नि:शुल्क वोकेशनल ट्रेनिंग देगा यूसीसीआई

उदयपुर। उदयपुर चेम्बर ऑफ कॉमर्स एण्ड इण्डस्ट्री (यूसीसीआई) अब युवाओं में स्किल डवलपमेंट के लिए वोकेशनल ट्रेनिंग देगा। इसके लिए यूसीसीआई में ट्रेनिंग सेंटर स्थापित किया जा चुका है। यह जानकारी वोकेशनल ट्रेनिंग कमेटी के चेयरमैन हंसराज चौधरी ने यूसीसीआई में माइंनिग मेट ट्रेनिंग प्रोग्राम के समापन समारोह में दी। उन्होंने बताया कि वोकेशनल ट्रेनिंग के लिए आवेदन की प्रक्रिया शुरू कर दी गई है। संभागभर से दो हजार युवाओं को ट्रेनिंग देने का लक्ष्य है। मानद महासचिव मनीष गलुण्डिया ने बताया कि राजसमंद जिले की माइंस में कार्यरत कार्मिकों के लिए हुए स्किल अपग्रेडेशन ट्रेनिंग प्रोग्राम में शामिल युवाओं को सम्मानित किया गया। यूसीसीआई के संरक्षक बीएच बापना, वरिष्ठ उपाध्यक्ष डॉ. अंशु कोठारी आदि ने सर्टिफिकेट प्रदान किए। संचालन यश शर्मा ने किया।

रॉयल इंस्टीट्यूट: 12वीं बोर्ड के टॉपर्स सम्मानित

उदयपुर। कालका माता मंदिर रोड स्थित रॉयल साइंस स्कूल ने 12वीं बोर्ड परीक्षा के टॉपर्स का सम्मान किया। इस साल स्कूल के अखिल रायचंद (भीलवाड़ा), कोमल (रिंगस), प्रीति (भादा हनुमानगढ़), अदिति चौधरी (सीकर) और मानसी गोयल (अलवर) ने 95 प्रतिशत से अधिक अंक हासिल किए। 95 प्रतिशत से अधिक अंक हासिल करने वाले विद्यार्थियों को 11,000 रुपए का चेक व स्मृति चिह्न भेंट कर सम्मानित किया गया। इसके अलावा 229 विद्यार्थियों ने 85 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त किए और 367 विद्यार्थियों ने 80 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त करके विज्ञान वर्ग में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है। निदेशक जीएल कुमावत ने इस मौके पर छात्रों की सफलता का श्रेय उनकी मेहनत, शिक्षकों के समर्पण और अभिभावकों के समर्थन को दिया।

हेप्पी होम में छात्रों का सम्मान

उदयपुर। हेप्पी होम स्कूल प्रतापनगर की पूर्व छात्र परिषद के अध्यक्ष राजकुमार शर्मा ने अपनी माताजी की स्मृति में कक्षा में प्रथम आने वाली विद्यार्थियों को सम्मानित किया। अध्यक्षता स्कूल के संस्थापक जगदीश अरोड़ा ने की। विद्यालय की प्रधानाचार्य सुषमा अरोड़ा ने कार्यक्रम का संचालन करते हुए विद्यालय द्वारा शैक्षिक उन्नयन के प्रयासों की जानकारी दी।

सेवा सहयोगियों का सम्मान

उदयपुर। ललितप्रभ-चन्द्रप्रभ महाराज के वर्ष 2023 में उदयपुर में हुए चातुर्मास के 200 सेवा सहयोगियों का सम्मान समारोह सूरजपोल स्थित दादाबाड़ी में श्री जैन श्वेताम्बर वासुपूज्य महाराज मंदिर ट्रस्ट द्वारा आयोजित किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि ट्रस्ट के अध्यक्ष मोहनसिंह दलाल, विशिष्ट अतिथि भोपालसिंह दलाल, राज लोढ़ा, दलपत दोशी, चातुर्मास संयोजक हंसराज चौधरी, सह संयोजक अनिल नाहर थे। अतिथियों ने इस चातुर्मास को ऐतिहासिक बताया। समारोह में मोहनसिंह दलाल, राज लोढ़ा, हंसराज चौधरी, अनिल नाहर, वीरेन्द्र सियोरा, बीएच बाफना, हरिसिंह लोढ़ा, प्रकाश नागौरी मनोहरसिंह बापना, पिंकी माण्डावत, डॉ. रोशनलाल जोधावत, गजेन्द्र जोधावत, रोबिनसिंह, शब्बीर मुस्तफा, दलपत दोशी, हस्तीमल लोढ़ा, सिंधी समाज के प्रतापराय चुघ, हरीश राजानी, गजेन्द्र सुराणा, कपिल लोढ़ा सहित 200 सेवा सहयोगियों को सम्मानित किया गया।

एवरेस्ट बेस कैंप तक पहुंची ढाई साल की आर्या

उदयपुर। उदयपुर की आर्या सिखवाल ने महज 2.5 साल की उम्र में नेपाल के एवरेस्ट बेस कैंप तक पहुंचने का रिकॉर्ड कायम किया। उनके माता-पिता सौरव और नेहा सिखवाल इस दौरान उनके साथ रहे। आर्या की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए नेपाल के अधिकारियों से विशेष अनुमति ली गई थी। तीन अंतरराष्ट्रीय योग्य शेरपा, एक डॉक्टर, ऑक्सीजन सपोर्ट और आपातकालीन स्थिति में हर घंटे हेलीकॉप्टर बचाव के साथ ट्रैक को पूरा किया गया। हालांकि आर्या को इनमें से किसी भी आपातकालीन सहायता की आवश्यकता नहीं पड़ी। उसका ऑक्सीजन लेवल पूरे ट्रेक के दौरान समूह के वयस्कों से अधिक रहा। वह अभियान से पहले पांच महीने तक प्रशिक्षण में थीं और इस दौरान कई रिकॉर्ड तोड़ें।

सामोता अध्यक्ष, चित्तौड़ा महासचिव

उदयपुर। युनिवर्सिटी रोड व्यापार परिषद के द्वि-वार्षिक चुनाव संपन्न हुए। चुनाव अधिकारी राकेश जैन ने बताया कि अध्यक्ष पद पर कुंदनमल समोता, महासचिव पद पर सुभाष चित्तौड़ा एवं कोषाध्यक्ष पद पर महेन्द्र बाबेल निर्वाचित घोषित किए। इससे पूर्व साधारण सभा में सामोता ने विगत कार्यकाल का द्विवार्षिक प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। चित्तौड़ा ने सभी सदस्यों का स्वागत किया। कोषाध्यक्ष बाबेल ने दो वर्षों का आय व्यय ब्योरा पेश किया। धन्यवाद निकुंज भट्ट ने दिया।

डीपीएस का जय सीएस-ईईटी परीक्षा में अव्वल

उदयपुर। दिल्ली पब्लिक स्कूल के कक्षा 12 के छात्र जयकुमार बोहरा ने कंपनी सचिव कार्यकारी प्रवेश परीक्षा (सीएस-ईईटी) में 200 में से 185 अंक प्राप्त करके अखिल भारतीय रैंक 1 हासिल की है। जयकुमार ने एक दिन पहले ही सीबीएसई 12वीं बोर्ड परीक्षा 95.4 प्रतिशत के उत्तीर्ण की है। डीपीएस के प्रो वाइस चेयरमैन गोविंद अग्रवाल, प्राचार्य संजय नरवरिया और डीपीएस विद्यालय परिवार ने उन्हें उनकी अभूतपूर्व सफलता पर बधाई दी।

डॉ. गदिया साउथ एशिया चैप्टर के अंतर्राष्ट्रीय गवर्नर नियुक्त

चित्तौड़गढ़। मेवाड़ विश्वविद्यालय और मेवाड़ ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशंस के चेयरपर्सन डॉ. अशोककुमार गदिया को अमेरिकन यूनिवर्सिटी ऑफ ग्लोबल पीस, यूएसए के साउथ एशिया चैप्टर का अंतर्राष्ट्रीय गवर्नर नियुक्त किया गया है। शिक्षा के प्रति मजबूत इच्छाशक्ति, दृढ़ विश्वास, संकल्प, समर्पण, दूरदर्शिता, असाधरण उपलब्धियां और नेतृत्व के गुणों के कारण उनकी यह नियुक्ति हुई है। इससे पूर्व में भी डॉ. गदिया प्रतिष्ठित पुरस्कार द इंटरनेशनल आइकॉनिक अवार्ड से सम्मानित हो चुके हैं।

डॉ. अरविंदर शीर्ष 100 बेस्ट ऑफ इंडिया में शामिल

उदयपुर। अर्थ के सीईओ डॉ. अरविंदरसिंह को निजी मैगजीन ने अपने 2024 के वार्षिक संस्करण में बेस्ट ऑफ इंडिया के शीर्ष 100 में शुमार किया है। डॉ. सिंह को यह सम्मान मेडिकल तथा शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए मिला है। डॉ. अरविंदर को ब्रिटिश पार्लियामेंट अवार्ड तथा सिंगापुर में एशियन बिजनेस कॉन्क्लेव में भी डबल वर्ल्ड रिकॉर्ड तथा ग्लोबल मास्टर माइंड अवार्ड से सम्मानित किया जा चुका है।

रावत ने ईशा को दी बधाई

उदयपुर। सांसद मन्नालाल रावत ने नीट परीक्षा में शत-प्रतिशत अंक लाने वाली मेधावी छात्रा ईशा कोठारी को बधाई दी। सांसद रावत ईशा के निवास पर पहुंचे और इस ऐतिहासिक उपलब्धि के लिए बधाई देकर उज्जवल भविष्य की कामना की। इस अवसर पर शहर भाजपाध्यक्ष रविन्द्र श्रीमाली, एमडीएस ग्रुप ऑफ स्कूल के निदेशक डॉ. शैलेन्द्र सोमानी भी उपस्थित थे।

डॉ. कुश राष्ट्रीय अ.भा. स्तर पर प्रथम

उदयपुर। डॉ. कुश बंदवाल (एमबीबीएस, आरएनटी मेडिकल कॉलेज) ने एनआईडी (नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ डिजाइन) के मास्टर ऑफ डिजाइन (एस.डेस) प्रोग्राम (यूनिवर्सल डिजाइन) में अखिल भारतीय स्तर पर प्रथम स्थान हासिल किया है। वे उन चुनिंदा डॉक्टरों में शामिल होंगे जो परास्नातक के रूप में डिजाइन की पढ़ाई करेंगे। एनआईडी भारत का शीर्ष सरकारी डिजाइन संस्थान है। वे अपनी डिग्री एनआईडी बैंगलोर में पूरी करेंगे।

बाल गीतों का महाकाव्य मेवाड़ को भेंट

उदयपुर। सिटी पैलेस उदयपुर में गत दिनों प्रसिद्ध राष्ट्रीय बाल साहित्यकार डॉ जगदीश चंद्र शर्मा ने अपनी पुस्तक 'पर्यावरण के बाल गीतों का महाकाव्य' की प्रति लक्ष्यराज सिंह मेवाड़ को भेंट की। साथ ही 25 अन्य पुस्तकों का सेट भी उन्हें भेंट किया गया। इस अवसर पर मावली के साहित्यकार बसन्त कुमार त्रिपाठी ,विद्या त्रिपाठी ,सीता शर्मा ,सुधीर उपाध्याय एवम अन्य लोग उपस्थित थे।

साहू अध्यक्ष, नैनावा महामंत्री

उदयपुर। तैलिक साहू समाज पंच महासभा सेवा समिति महासभा की बैठक गत दिनों संपन्न हुई। समाज के संरक्षक नानालाल दशोरा ने बताया कि इसमें सर्वसम्मति से एडवोकेट कैलाश साहू को अध्यक्ष तथा महामंत्री कन्हैयालाल नैनावा, कोषाध्यक्ष पिंटू नैनवा, उपाध्यक्ष विजय पांडियार, उपकोषाध्यक्ष अनिल मगरूडिया, संसदीय मंत्री दिनेश दशोरा, मंत्री लोकेश पंचोली को निर्विरोध निर्वाचित किया गया।

वर्मा प्रदेश उपाध्यक्ष नियुक्त

उदयपुर। राष्ट्रीय सर्व मेघवंश महासभा (इंडिया) द्वारा उदयपुर की यशोदा वर्मा को राजस्थान की प्रदेश युवा उपाध्यक्ष नियुक्त किया गया। महासभा के प्रदेश अध्यक्ष रामअवतार काला ने बताया कि संगठन की नीतियों एवं सिद्धांतों को ध्यान में रखते हुए यशोदा वर्मा संगठन को मजबूती प्रदान करेंगी।

टीएमएस न्यूरोस्टिमुलेशन टेक्नोलॉजी लैब

उदयपुर। पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज पिम्स हॉस्पिटल, उमरड़ा में टीएमएस (ट्रांसक्रेनियल मैग्नेटिक स्टिमुलेशन) न्यूरोस्टिमुलेशन टेक्नोलॉजी लैब का

उद्घाटन किया गया। चेयरमैन आशीष अग्रवाल, शीतल अग्रवाल और अव्य अग्रवाल की उपस्थिति में पिम्स के एक्जीक्यूटिव डायरेक्टर नमन अग्रवाल ने उद्घाटन किया। तकनीकी टीम का नेतृत्व आईआईटी खड़गपुर के राजेश खेरकर करेंगे। उद्घाटन समारोह में पिम्स के फेकल्टी मेम्बर्स, रेजीडेंट्स एवं आरएनटी मेडिकल कॉलेज, गीतांजलि मेडिकल कॉलेज एवं पेसिफिक मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल के चिकित्सक उपस्थित रहे।

पंजाबी खत्री सभा के संजीव बने प्रदेशाध्यक्ष

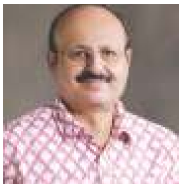

जयपुर। समस्त पंजाबी खत्री सभा के यहां में चुनाव संपन्न हुए। सभा सचिव गगन ओबराय ने बताया कि राष्ट्रीय स्तर एवं राजस्थान के जिलों की कार्यकारिणी सभा में सर्वसम्मति से उदयपुर के एडवोकेट संजीव तलवार को प्रदेश अध्यक्ष निर्वाचित किया गया। सभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. सर्वानंद आर्य ने बताया कि संगठन जातीय जनगणना के पक्ष में है।

ललित को पीएचडी

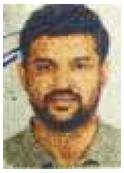

उदयपुर। मोहनलाल सुखाड़िया विवि की ओर से ललित सिंह रावल को मीरां की कविता का पाठ और भाषा एक अध्ययन विषय पर शोध कार्य के लिए पीएचडी की उपाधि प्रदान की गई। ललित ने यह शोधकार्य प्रो. माधव हाड़ा के निर्देशन में पूर्ण किया।

सुभाष मोर अध्यक्ष बने

उदयपुर। आनंद नगर विकास समिति उदयपुर के द्विवार्षिक चुनाव (2024-25) गत दिनों संपन्न हुए। इसमें अध्यक्ष सुभाषचन्द्र मोर, महामंत्री भगवतसिंह जैन, उपाध्यक्ष प्रकाशचन्द्र जैन, रमेशचन्द्र मेहता, कोषाध्यक्ष उत्तमचंद हिरण को चुना गया।

पर्यावरण सूक्ष्म पुस्तिका

उदयपुर। पर्यावरण दिवस पर सूक्ष्म पुस्तिका निर्माता चन्द्रप्रकाश चित्तौड़ा ने पर्यावरण बचाने का संदेश समाहित करते हुए एक सूक्ष्म पुस्तिका का निर्माण किया। जिसका विमोचन राष्ट्र मंथन कार्यक्रम में राज. विद्यापीठ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. शिवसिंह सारंगदेवोत ने किया। इस अवसर पर पर्यावरणविद अनिल मेहता, ले. जनरल (सेवानिवृत्त) एन.के. सिंह, रमनकुमार सूद भी उपस्थित थे।

माधवानी सम्मानित

उदयपुर। जय हनुमान रामचरित मानस प्रचार समिति ट्रस्ट उदयपुर ने अपने स्थापना दिवस पर सौ फीट रोड स्थित अशोका ग्रीन में आयोजित एक समारोह में भामाशाह मुकेश माधवानी को सेवा मार्तण्ड उपाधि से सम्मानित किया। यह जानकारी संस्थापक पं. सत्यनारायण चौबीसा ने दी।

प्रीति अध्यक्ष, नीलम सचिव

उदयपुर। रोटरी क्लब ऑफ उदयपुर की वर्ष 2024-25 की कार्यकारिणी का गठन किया गया। क्लब एडवाइजर पुष्पा कोठारी ने बताया कि प्रीति सोगानी अध्यक्ष, ब्रजराज राठौड़ वरिष्ठ उपाध्यक्ष, कविता श्रीवास्तव उपाध्यक्ष, नीलम दुबे सचिव, कुसुम मेहता कोषाध्यक्ष, उर्मिला जैन संयुक्त सचिव, स्नेहा शर्मा को अतिरिक्त सचिव मनोनीत किया गया।

डॉ. पुरोहित को प्रताप गौरव सम्मान

उदयपुर। महाराज शत्रु दमनसिंह शिवरती विद्यापीठ संस्थान के तत्वावधान में प्रताप की 485 जयंती पर हर वर्ष की भांति इतिहासकारों का प्रतिष्ठित प्रताप गौरव सम्मान इस वर्ष मेवाड़ के वरिष्ठ इतिहासकार डॉ. राजेन्द्र नाथ पुरोहित को दिया गया। शिवरती शोध संस्थान के निदेशक डॉ. अजात शत्रु सिंह ने बताया कि चयन समिति के सदस्य प्रो. जी.एल. मेनारिया, पूर्व न्यायाधीश शारगंधर परिहार, लक्ष्मणसिंह कर्णावट ने पुरोहित का चयन किया।

संवेदना/श्रद्धांजलि

उदयपुर। श्री मोहन जी बंजारा (59) निवासी हवा मगरी, उदयपुर का 15 मई को आकस्मिक निधन हो गया। वे अपने पीछे शोक सन्तप्त पुत्र प्रकाश, पुत्रियां सोनम, रीना, कमला व सन्तोष सहित भाई-भतीजों का सम्पन्न परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। श्री अभिनव जी मेहता (बंटी) का 25 मई को देहावसान हो गया। वे अपने पीछे शोकाकुल धर्मपत्नी श्रीमती शोभादेवी, पुत्री रक्षिता, पुत्र प्रयन व भाई-भतीजों का भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। श्रीमती सरोजदेवी जी भटनागर का 29 मई को स्वर्गवास हो गया। वे अपने पीछे शोकसन्तप्त पति अशोक जी भटनागर पुत्र अमोल भटनागर व भाई-भतीजों, देवर-देवरानियों का समृद्ध परिवार छोड़ गई हैं।

उदयपुर। श्री हिम्मत जी कोठारी पुत्र स्व. कन्हैयालाल जी कोठारी का 18 मई को निधन हो गया। वे अपने पीछे व्यथित हृदय पत्नी श्रीमती आशा कोठारी, पुत्र पीयूष व भव्य कोठारी, भाई-भतीजों का वृहद एवं सम्पन्न परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। श्री हरिशंकर जी शर्मा का 16 मई को देवलोकगमन हो गया। वे अपने पीछे शोकाकुल पुत्र लाल बहादुर, डॉ. नटवर शर्मा, पवन शर्मा, पुत्रियां श्रीमती वीणा, शीला शर्मा, भाई-भतीजों, दोहित्र-दोहित्रियों, पौत्र-पौत्रियों का भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। डॉ. अर्जुनलाल जी जैन (ढीलीवाल) का 13 मई को देहावसान हो गया। वे अपने पीछे शोकविह्वल धर्म पत्नी श्रीमती निर्मला देवी, पुत्र अखिलेश व डॉ. सचिन, भाई-भतीजों, भतीजियों, भानजे-भानजियों का वृहद व सम्पन्न परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। श्रीमान प्रदीप जी नटराजन सुपुत्र श्री वी.आर नटराजन - प्रेमा नटराजन का 6 मई को देवलोकगमन हो गया। वे अपने पीछे शोकसन्तप्त धर्मपत्नी श्रीमती अमिता प्रदीप व पुत्री ऋषिमा, श्वसुर मोहन माखिजा सहित भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। श्री अरविंद सिंह जी लोढ़ा का 10 जून को आकस्मिक निधन हो गया। वे अपने पीछे शोक सन्तप्त धर्मपत्नी श्रीमती शांता देवी, पुत्र अल्पेश लोढ़ा (पत्रकार) पुत्री श्रीमती बिन्दिया बोल्या, भाई-भतीजों, दोहित्र, पौत्रियों का सम्पन्न परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। श्री सत्यनारायण मंदिर, पंचवटी के पुजारी पं. हिम्मतराम जी शर्मा का 17 जून को देवलोकगमन हो गया। वे अपने पीछे शोकाकुल धर्मपत्नी श्रीमती पार्वती देवी, पुत्र गणेश लाल शर्मा, नारायण लाल शर्मा, पुत्री श्रीमती मीरा व्यास, लीला शर्मा, पौत्र-पौत्रियों, दोहित्र-दोहित्रियों, भतीजा-भतीजियों का भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। श्री मुन्नालाल जी झा सेवा निवृत स्टेशन अधीक्षक (प.रे) का 10 जून को देहावसान हो गया। वे अपने पीछे शोक सन्तप्त पुत्र प्रवेन्द्र, पंकज झा, पुत्रियां डॉ. एकता शर्मा व कृष्णा ओझा, पौत्र-पौत्री एवं भाई-भतीजों का समृद्ध परिवार छोड़ गए हैं।

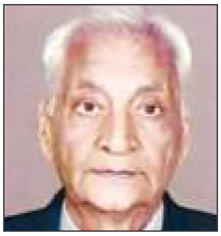

उदयपुर। श्री भगवानदास जी त्रिपाठी (नाथद्वारा) का आकस्मिक स्वर्गवास 31 मई को हो गया। वे अपने पीछे शोक सन्तप्त पुत्र राधवेन्द्र, घनश्याम, गोविंद, पुत्रियां मंजूदेवी चन्दादेवी, टीना देवी व पौत्र सौरभ व पौत्री प्रिया एवं दोहित्र-दोहित्रियों का भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं।

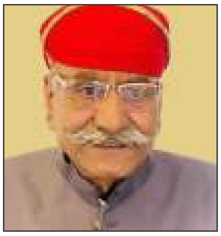

उदयपुर। समाज सेवी ठकुर श्री विनय प्रताप सिंह जी बिसेन का 21 मई को असामयिक देहावसान हो गया। वे अपने पीछे शोकाकुल धर्मपत्नी श्रीमती सुनिता कंवर, पुत्र गौरव प्रताप सिंह (पार्षद) व भाई-भतीजों का सम्पन्न परिवार छोड़ गए हैं। उनके निधन पर विभिन्न राजनैतिक एवं सामाजिक संगठनों ने शोक व्यक्त किया है।

उदयपुर। श्री राम वल्लभ जी अग्रवाल (करणपुर वाला) का 5 जून को देहावसान हो गया। वे अपने पीछे शोक सन्तप्त पत्नी श्रीमती गिरिजा देवी, पुत्र पंकज व निलेश, पुत्रियां श्रीमती मंजू देवी, लीलादेवी, निर्मला देवी, रेणु देवी व किरण देवी सहित पौत्र-पौत्रियों, दोहित्र-दोहित्रियों व भाई-भतीजों का सम्पन्न परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। श्रीमती नवल देवी मेहता (धर्मपत्नी स्व. श्री धनपत सिंह जी मेहता-लूणिया) का 7 जून को देवलोकगमन हो गया। वे 87 वर्ष की थीं। वे अपने पीछे पुत्र इन्द्र सिंह मेहता, पुत्रियां वीणा पामेचा, पुष्पा लोढ़ा, निर्मला लोढ़ा, रंजना मादरेचा, हर्षिता सहित देवर-देवरानी, पौत्र-पौत्रियों, दोहित्र-दोहित्रियों का भरापूरा परिवार छोड़ गई हैं।

प्रत्यूष परिवार की हार्दिक श्रद्धांजलि

Gurukul College of Pharmacy

D-Pharma

Affiliated by RUHS

प्रवेश योग्यता : 10+2 विज्ञान संकाय (Maths or Biology)

ADMISSION OPEN

डी–फार्म डिप्लोमाधारी को रोजगार की गारंटी

स्वयं की मेडीकल शॉप एवं सरकारी व अन्य अस्पताल में फार्मासिस्ट पद पर नियुक्ति

राज्य सरकार से मान्यता प्राप्त एवं मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय से सम्बद्धता प्राप्त

दी गुरुकुल कॉलेज

B.A. (स्नातक कला)
भूगोल, अंग्रेजी, हिन्दी, इतिहास, राजनीति विज्ञान, चित्रकला

B.Sc. (स्नातक विज्ञान)
रसायन विज्ञान, भौतिक विज्ञान, जीव विज्ञान, वनस्पति विज्ञान, गणित
(आधुनिक सुसज्जित प्रयोगशाला)

Village - Budal, Post Vali, Teh. Girwa, Dist. Udaipur (Raj.) 313703
8769979064 (Principal), 9414168050 , 9772740999

St. Jyoti Ba Phule Public Sr. Sec. School

Class : Nursery to XII

SCIENCE, ARTS

St. Jyoti Ba Phule Sr. Sec. School, Madri Purohitan, Opp. Fire, Bya Pass, Udaipur (Raj.)

Dinesh Mali
+91 94141 68050

Diwakar Mal Mali
+91 97727 40999

प्रत्यूष

Thakur Devraj Singh Jagat

Kunwar Akshayraj Singh Jagat

JAGAT NIWAS PALACE

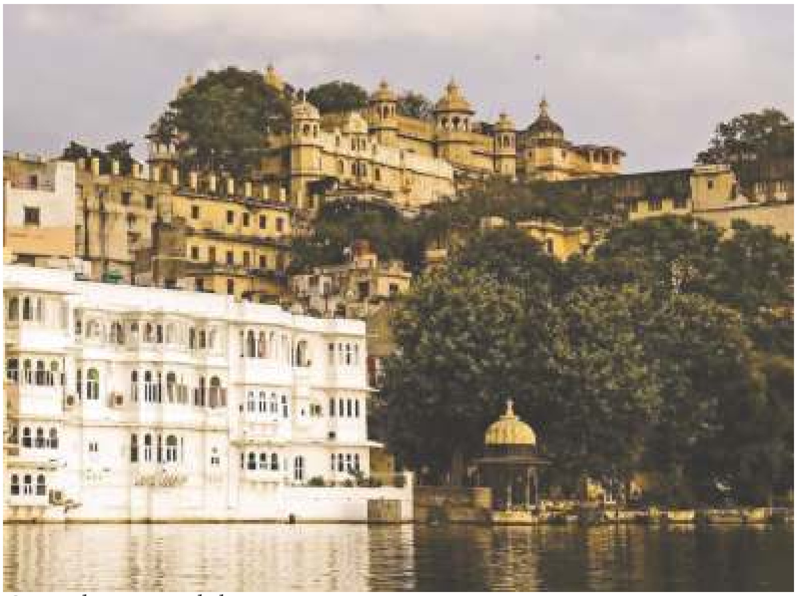

City Palace in Backdrop

Inner Facade

Inner Facade

Standard Rooms | Haveli Rooms | Heritage Rooms | Jagat Suite | Presidential Suite
Rooftop Restaurant | Live Puppet Show | Live Traditional Music | Jagat Boats

23-25 Lalghat, Udaipur, Rajasthan 313001
Tel. No. :+91-0294-2422860, 2420133 Mob.: +91-7073000378
Email Id.: mail@jagatniwaspalace.com website: www.jagatcollection.com

GMCH
GEETANJALI HOSPITAL
HEALTH IS HAPPINESS

NABH H-2018-0535 HOSPITAL | MC-3461 LABORATORY | BB-2022-0130 BLOOD BANK | E-2023-0051 EMERGENCY

दिल की सुने
एक्सपर्ट्स को ही चुने!!

गीतांजली कार्डियक सेंटर की बहुआयामी विशेषताएँ :

- फंक्शनल हार्ट डिजीज
- स्ट्रक्चरल हार्ट डिजीज
- वैस्क्युलर हार्ट डिजीज
- कॉन्जेनिटल हार्ट डिजीज
- इलेक्ट्रोफिजियोलॉजी एवं पेसमेकर क्लिनिक
- कोरोनरी हार्ट डीजिज़
- हार्ट फेलियर क्लिनिक
- हार्ट ट्रांसप्लांट यूनिट
  (सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त हार्ट ट्रांसप्लांट सेन्टर)

गीतांजली कार्डियक सेंटर के एक्सपर्ट्स

हृदय रोग विशेषज्ञ
- डॉ. रमेश पटेल
- डॉ. दिलीप जैन
- डॉ. गौरव कुमार मित्तल
- डॉ. शैलेंद्र दीक्षित
- डॉ. सन्नी पटेल
- डॉ. कपिल देव चौधरी
- डॉ. योगिता गाडरे
- डॉ. प्रियंका गुप्ता

हृदय एवं वैस्कुलर सर्जन
- डॉ. संजय गाँधी
- डॉ. अंकुर कोठारी
- डॉ. गुरप्रीत सिंह
- डॉ. आयुष रिछारिया

हृदय रोग निश्चेतना विशेषज्ञ
- डॉ. अंकुर गाँधी
- डॉ. कल्पेश मिस्त्री
- डॉ. सुमित तवरी
- डॉ. अर्चना देवतारा
- डॉ. श्रीकांत गुज्जा
- डॉ. श्रुति सोमानी

- 2 अत्याधुनिक कैथ लैब
- 2 मॉडयूलर ऑपरेशन थियेटर
- 60 बेडेड सीसीयू व सीटीवीएस आईसीयू
- 24x7 डॉक्टर्स की उपलब्धता
- समर्पित 2 इको, 2 टी.एम.टी. रूम
- ट्रांसइसोफेजिअल इको (TEE)
- रेडियल लाउन्ज
- नवीनतम तकनीकें – FFR, OCT, IVUS, ROTA Ablation, VAD & ECMO

राजस्थान गवर्नमेंट हैल्थ स्कीम (RGHS)

• भूतपूर्व सैनिक अंशदायी स्वास्थ्य योजना (ECHS) • कर्मचारी राज्य बीमा निगम (ESIC) • उत्तर पश्चिमी रेलवे (NWR) • हिंदुस्तान जिंक लिमिटेड (HZL) • स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया (SBI) • भारत संचार निगम लिमिटेड (BSNL) • भारतीय खाद्य निगम (FCI) • भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण (AAI) • राजस्थान राज्य खान एवं खनिज लिमिटेड (RSMM) • सभी महत्वपूर्ण टी.पी.ए. (TPA) व इन्श्योरेन्स से अधिकृत।

गीतांजली मेडिकल कॉलेज एण्ड हॉस्पिटल
नेशनल हाईवे-8 बायपास, एकलिंगपुरा चौराहा के पास, उदयपुर (राज.) +91 294 250 0044
+91 97733 56092
+91 97845 96209

R.K. PROPERTY
CONSULTANT

UDA, Ricco Convert Plot

Sector-14, Extension Area Location:
Balicha, Amberi, Titrdi, Dakan Kotda

+91 9992993027
+91 8742801244

Office Address :

R.K. Property Consultant
S3A Star Tower, Beside Hotel Akriti,
Sang Ji Vihar Titrdi,
Banswara-Salumber Highway, Udaipur

प्रकाशन की तिथि प्रत्येक माह की 23 तारीख वर्ष 22 अंक 3, Postal Registration No. RJ/UD/29-62/2021-23 Posting Date: 27th-28th of Every Month RNI No. RAJHIN/2003/9297 Posting Office: Chetak Circle, Udaipur
'प्रत्यूष' पत्रिका डिलिवर्ड न होने की स्थिति में इस पते पर लौटाएं: पंकज कुमार शर्मा, 2, रक्षाबंधन, मेहतों का पाड़ा, धानमण्डी, उदयपुर (राज.) 313 001